तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-8, अंक - 9, अगस्त 2020, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

शिक्षा हो या खेल का मैदान
तुम बढ़ा रही प्रदेश का मान

ठान कर तो देख

कर कोशिश, तू हार न मान,
तू मन में ठान कर तो देख।
निकलेंगे रास्ते बहुत ,
तू राह पकड़ कर तो देख।
आलोचनाएँ बनेंगी सीढ़ी,
तू अपनी धुन में चलकर तो देख।
मुश्किलें आएँगी जाएँगी,
तू उनसे उलझ कर तो देख।
मोती मिलेंगे दरिया में बहुत,
तू डुबकी लगा के तो देख।
विश्वास अटूट रहेगा,
तू खुद को पहचान के तो देख।
होंगे तेरे भी कद्रदान,
तू मंजिल पर पहुँच कर तो देख।

कृष्ण कुमार पुनिया
जेबीटी अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला लिसान
जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

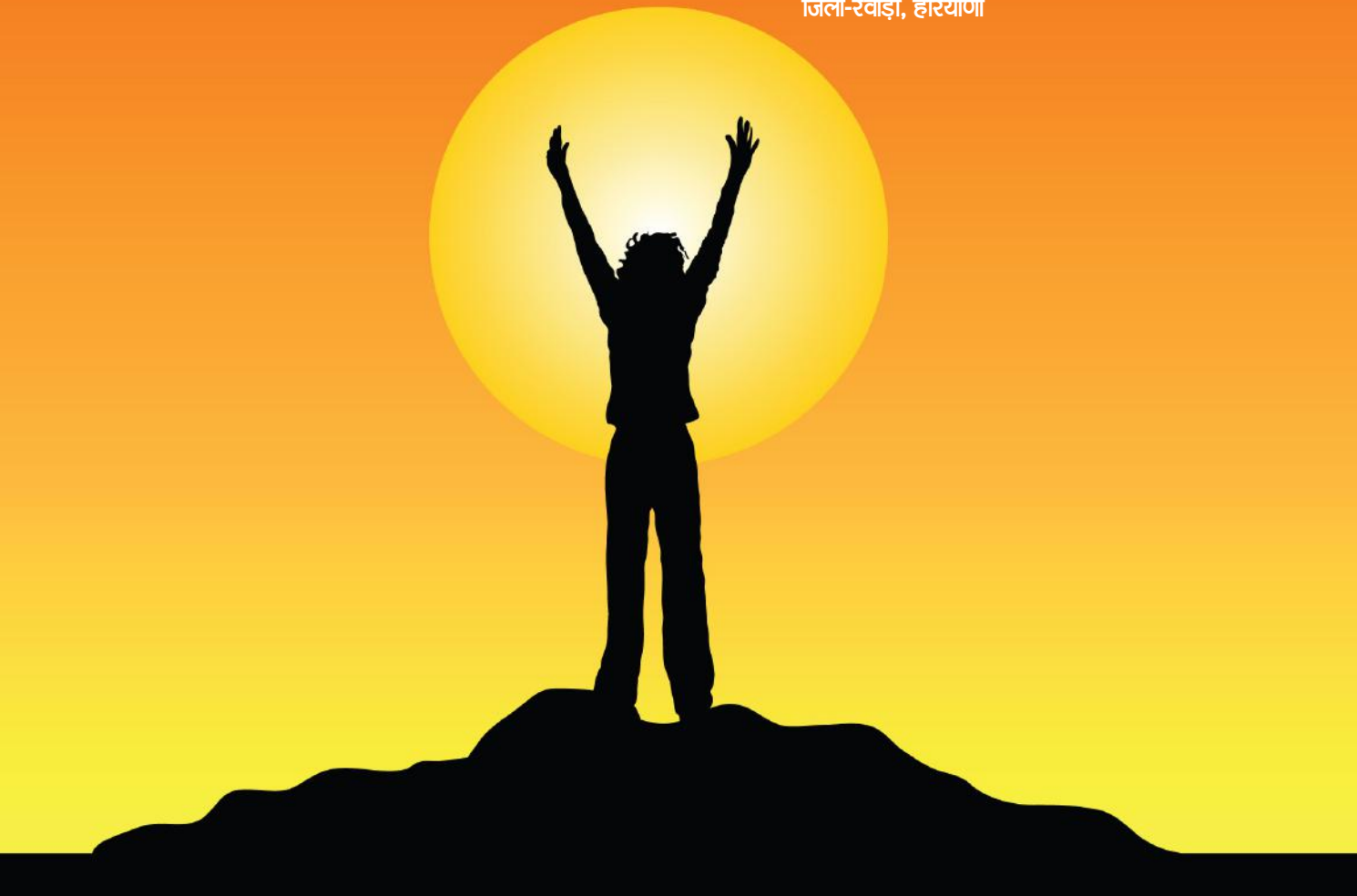

शिक्षा सारथी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अगस्त 2020

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. रजनीश गर्ग
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"विद्यां ददाति विनयं
विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति
धनात् धर्मं ततः सुखम्"
-हितोपदेश

» डिजिटल शिक्षा पर भारत रिपोर्ट-2020 5
» हौसला बढ़ाते अभूतपूर्व परीक्षा-परिणाम 6
» 'शिक्षा सारथी' के उपसंपादक को मुख्यमंत्री ने किया सम्मानित 11
» सरकारी स्कूल की बेटियों ने रचा नया इतिहास 12
» म्हारी छोरियाँ छोरयाँ ते कम नी, आग्गै सैं 14
» कोरोना काल में स्काउटों ने किए सेवा-कार्य 16
» कोरोना और स्कूली शिक्षा 18
» इस्सी बीमारी आई 20
» शिक्षा, संस्कार व संस्कृति की महक फैलाता काबड़ी का सरकारी स्कूल 21
» शिक्षक, जो बने कोरोना योद्धा 24
» सर्वश्रेष्ठ देश हमारा, मेरा भारत महान 25
» खेल-खेल में विज्ञान 26
» बाल सारथी 28
» कोरोना से डरो (ना) 30
» अंजीर : कीड़ों का दिया नायाब तोहफा 31
» Disparity in access to quality edu and the digital divide 32
» This is how your mind can control your pain and... 36
» A Viewpoint on the New Education policy 38
» Comendable performance of Students of Govt. Schools 40
» Compendium of Academic Courses After +2 42
» Quarantine Game 44
» Amazing Facts 46
» General Quiz 47
» History Quiz 48
» She Wonders 49
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

राजकीय विद्यालयों के प्रति बढ़ रहा जन-रुझान

प्रदेश में लगभग पचास हजार विद्यार्थियों ने निजी विद्यालयों को छोड़कर राजकीय विद्यालयों में प्रवेश ले लिया है। निश्चित रूप से यह आँकड़ा अभी और बढ़ेगा। यह कहना कि कोरोना की वजह से ऐसा हुआ है, राजकीय विद्यालयों के साथ बहुत बड़ी नाइंसाफी होगी। बदलाव की सबसे बड़ी वजह इन विद्यालयों में आया सुधार है। पिछले पाँच-सात सालों में शिक्षा में जिस प्रकार सरकार की ओर से सुधार के लिए प्रभावी नीतियाँ बनी हैं और कुशल प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा जिस प्रभावी तरीके से उनका क्रियान्वयन कराया गया, उसी के परिणामस्वरूप बदलाव की यह सुखद गाथा लिखी गई है।

बोर्ड के परीक्षा-परिणाम प्रदर्शन के आकलन का सर्वमान्य पैमाना माने जाते हैं। पाँच वर्ष पूर्व यानी 2015 में बारहवीं कक्षा में सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की पास-प्रतिशतता जो लगभग 52 प्रतिशत थी, वह 2016 में 62 प्रतिशत, 2017 में 65 प्रतिशत, 2019 में 74 प्रतिशत, और 2020 में 80 प्रतिशत हो गई है। लगातार सुधरते परीक्षा-परिणाम इसी ओर इंगित करते हैं कि सतत चल रही सुधारात्मक प्रक्रिया अब सुखद परिणाम देने लगी है। इस वर्ष बारहवीं कक्षा के परीक्षा परिणामों में 12 जिलों में सरकारी स्कूल नामी-गिरामी निजी विद्यालयों पर भारी पड़े हैं। सचमुच, प्रदेश की शिक्षा-व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

कोरोना काल में भी विद्यालय शिक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री महोदय के 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' को जिस सफलता से चलाया, उसकी राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हो रही है। नौंवी से बारहवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों को टैब या स्मार्ट फोन देने पर सरकार विचार कर रही है। सचमुच, आज हरियाणा शिक्षा के क्षेत्र में पूरे देश के सामने एक मॉडल बन गया है। शिक्षा के विकास की इसी गाथा को समर्पित है 'शिक्षा सारथी' का प्रस्तुत अंक।

-संपादक

'डिजिटल शिक्षा पर भारत रिपोर्ट-2020' हरियाणा के 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने बीते दिनों 'डिजिटल शिक्षा पर भारत रिपोर्ट-2020' जारी की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह रिपोर्ट मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों द्वारा घर पर बच्चों के लिए सुलभ और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने और उनके सीखने के क्रम में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए अपनाए गए अभिनव तरीकों की विस्तृत व्याख्या करती है।

रिपोर्ट को राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों के परामर्श से मानव संसाधन विकास मंत्रालय के डिजिटल शिक्षा प्रभाग द्वारा तैयार किया गया है। इसमें विभिन्न राज्यों द्वारा कोविड-19 के दौरान शिक्षण प्रक्रिया को जारी रखने के लिए की गई प्रभावी पहलों का जिक्र किया गया है।

182 पृष्ठों की इस रिपोर्ट में पृष्ठ संख्या 78 से 84 तक हरियाणा के प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी गई। इसमें बताया गया कि हरियाणा के मुख्यमंत्री के 'तीन एस' यानी स्टे एट होम, स्कूल एट होम तथा स्टडी एट होम' पर आधारित 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' के तहत प्रदेश द्वारा 'ई-लर्निंग' के लिए कौन-कौन से प्रभावी तरीके अपनाए गए। इनमें मैगा ई-पीटीएम, प्रभावी संचार व शिकायत निवारण तंत्र, कोविड संबंधी जागरूकता फैलाने के लिए आयोजित की गई 'क्विज प्रतियोगिता', घर पर पाठ्यपुस्तकों के वितरण, अगली कक्षा में ई-प्रवेश प्रक्रिया, ड्रॉपआउट रोकने के लिए उठाए गए कदम, सुपर-100 के विद्यार्थियों की निःशुल्क निर्बाध कोचिंग, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की निगरानी, ई-लर्निंग संसाधनों के लिए की गई विभिन्न संगठनों से भागीदारी आदि पहलों की सराहना की गई।

रिपोर्ट के अनुसार सरकार द्वारा शिक्षा को एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में परिकल्पित किया है, जिसका लक्ष्य प्री-नर्सरी से लेकर उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक स्कूलों के व्यापक स्पेक्ट्रम में डिजिटल शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना है। गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शिक्षा ने वैश्वीकरण के वर्तमान संदर्भ में एक नई प्रासंगिकता हासिल कर ली है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शिक्षकों, विद्वानों और छात्रों को सीखने की उनकी ललक में मदद करने के लिए कई परियोजनाएँ जैसे- दीक्षा मंच, स्वयं प्रभा

टीवी चैनल, ऑनलाइन एमओओसी पाठ्यक्रम, ऑन एयर शिक्षा वाणी, दिव्यांगों के लिए एनआईओएस द्वारा विकसित डेजी, ई-पाठशाला, नैशनल ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एनआरओईआर) की राष्ट्रीय रिपोजिटरी, टीवी चैनल, ई-लर्निंग पोर्टल, वेबिनार, चैट समूह और पुस्तकों के वितरण सहित राज्य/केन्द्र शासित सरकारों के साथ अन्य डिजिटल पहल शुरू की हैं।

प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल ने राष्ट्रीय रिपोर्ट में छपे हरियाणा के प्रयासों की सराहना पर सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कोविड जन्य आपदा के कारण जब प्रदेश के सभी विद्यालयों को बंद करना पड़ा, उस समय विभाग ने मुख्यमंत्री महोदय के 'दूरवर्ती शिक्षण कार्यक्रम' को बहुत अच्छे ढंग से चलाया है। अध्यापकों ने दिन-रात मेहनत करके परिस्थिति के मुताबिक अपने पढ़ाने के तरीके में बदलाव लाते हुए शिक्षण के कार्य को निर्विघ्न रूप से चलाया। इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि बोर्ड के सराहनीय परीक्षा परिणाम इस बात के द्योतक हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के द्वारा जो सुधारात्मक कार्यक्रम चलाए गए थे, उनके परिणाम अब दिखने आरंभ हो चुके हैं।

-शिक्षा सारथी डेस्क

उपलब्धि

हौसला बढ़ाते अभूतपूर्व परीक्षा-परिणाम

प्रमोद कुमार

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के दसवीं और बारहवीं के बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम घोषित हो गए हैं और इन दोनों ही कक्षाओं के परीक्षा परिणामों ने सरकारी स्कूल व्यवस्था को खुद पर गर्व करने का अवसर दिया है। राज्य में दसवीं के परीक्षा परिणामों में जहाँ इस वर्ष 10 प्रतिशत से अधिक का उछाल आया है, वहीं यमुनानगर तथा पंचकूला जिलों द्वारा शानदार सुधार किया गया तथा 25 प्रतिशत से 35 प्रतिशत तक की वृद्धि की गई, जो अभूतपूर्व है। कई जिलों में राजकीय विद्यालयों का परीक्षा परिणाम निजी विद्यालयों से भी बेहतर आया और 12 हजार से अधिक विद्यार्थी मैरिट के साथ अर्थात 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर पास हुए जो पिछले वर्षों की तुलना में एक रिकॉर्ड है। पिछले वर्षों के परिणामों का अध्ययन करें और भाजपा की सरकार के समय के परिणाम की अगर बात करें तो इस सरकार

तालिका-1	दसवीं				
	माध्यमिक परीक्षा परिणाम 2015 से 2020				
वर्ष	राजकीय विद्यालय		प्राइवेट विद्यालय		बोर्ड का कुल परिणाम
	विद्यार्थी परीक्षा में बैठे	पास प्रतिशतता	विद्यार्थी परीक्षा में बैठे	पास प्रतिशतता	पास प्रतिशतता
2015	80398	30.32	158551	57.29	42.94
2016	169819	39.72	164687	54.1	46.8
2017	160227	43.06	158820	57	50
2018	208277	44.27	161661	59.97	51.13
2019	187376	52.71	177591	62.33	57.39
2020	170000	59.74	167691	69.51	64.59

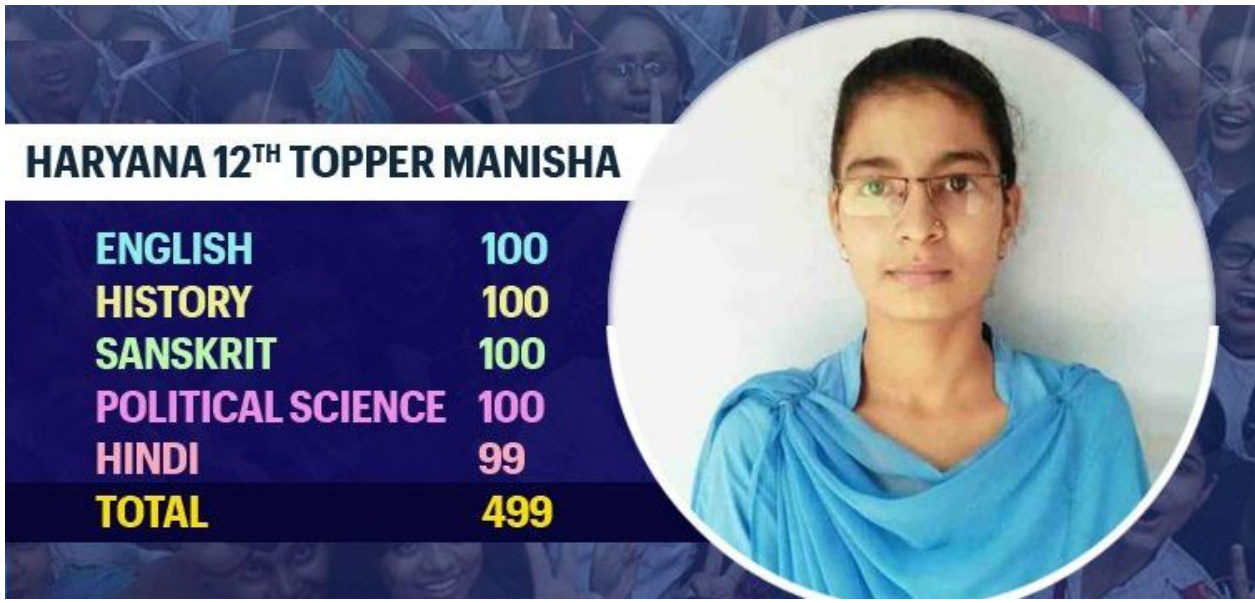

द्वारा सत्ता में आते ही सबसे पहले ग्रेस मार्क्स देकर बोर्ड परिणाम को बेहतर करने की परम्परा को बन्द कर दिया गया तथा यह निर्णय लिया गया कि बच्चे अपने दम पर पास हों। वर्ष 2015 में आया पहला परिणाम जिसमें दसवीं कक्षा का परिणाम केवल 30.32 प्रतिशत था जबकि प्राइवेट स्कूलों का 57.29 प्रतिशत था। पिछले छह वर्षों की तुलना तालिका-1 में देख सकते हैं।

ये परिणाम बिना किसी मदद के, बिना ग्रेस मार्क्स के, बिना नकल के हुई परीक्षा के बाद जारी हुए हैं। हालांकि वर्ष 2015 में कम परिणाम आने पर स्कूलों को आलोचना का शिकार भी होना, पड़ा परन्तु धीरे-धीरे इनमें सुधार दिखने लगा। राजकीय विद्यालयों ने अपने परिणाम में ही वृद्धि नहीं की अपितु प्राइवेट विद्यालयों के साथ जो उनके पास प्रतिशतता का अन्तर 27 प्रतिशत का था, उसे भी कम किया है। इस बार के दसवीं के परिणामों में न केवल पास प्रतिशतता ही बढ़ी, अपितु विभिन्न विषयों में प्राप्त अंकों की प्रतिशतता भी बढ़ी है, अर्थात विद्यार्थी पास भी अधिक हो रहे हैं और अच्छे अंक लेकर पास हो रहे हैं। अंग्रेजी और गणित जैसे विषय, जिनका परिणाम कमतर रहता था उनकी प्रतिशतता में भी बहुत शानदार वृद्धि देखने को मिल रही है।

बारहवीं के परीक्षा परिणामों ने तो सबको खुलकर हंसने, आनन्द मनाने तथा गर्व करने का अवसर प्रदान किया है जिसमें 86 प्रतिशत छात्राओं तथा 75 प्रतिशत छात्रों ने सफलता प्राप्त की। ग्रामीण क्षेत्रों के 79 प्रतिशत बच्चे पास हुए जबकि शहरी क्षेत्र के 82 प्रतिशत बच्चे पास हुए। यदि कम्पार्टमेंट को भी साथ जोड़ें तो केवल 2.13 प्रतिशत लड़कियाँ ही फेल हुई हैं अर्थात् 98 प्रतिशत लड़कियाँ पास हुई हैं और यदि वाणिज्य संकाय को देखें तो 98.13 प्रतिशत विद्यार्थी पास हुए हैं। ये परिणाम किसी भी राज्य के लिए गर्व का अनुभव करवाते हैं।

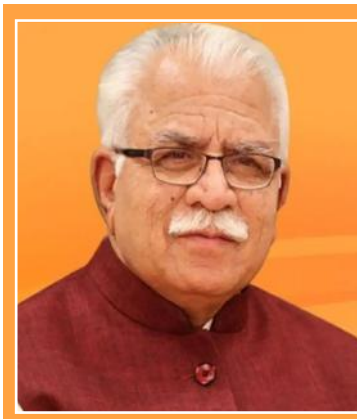

शिक्षा के क्षेत्र में रचा गया इतिहास

मैं अत्यंत हर्षित हूँ कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा मार्च 2020 में आयोजित दसवीं व बारहवीं की परीक्षा में विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक नया इतिहास रचा है। मैं इसके लिए उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ।

सरकार द्वारा प्रदेश की शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु उठाए जा रहे कदमों के परिणाम दिखने आरंभ हो चुके हैं। सरकारी विद्यालयों के परीक्षा परिणाम निजी विद्यालयों से भी बेहतर आ रहे हैं। इस वर्ष 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या में पिछले वर्ष के मुकाबले काफी इजाफा हुआ है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए मैं अपने कुशल प्रशासनिक अधिकारियों व उनकी टीम, सभी शिक्षकों, अभिभावकों व विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि जिस तरह आप सभी के सामूहिक योगदान से शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं उससे भविष्य में हरियाणा और भी नये कीर्तिमान बनाएगा।

अगली कक्षा में जाने वाले विद्यार्थियों से मैं कहना चाहता हूँ कि आज आप जीवन के एक नए मोड़ पर हैं। आपको अपनी रुचि व दक्षता के आधार पर निर्णय लेते हुए अपने करियर का चुनाव करना है। कई बार कुछ विद्यार्थी सहपाठियों या माता-पिता के दबाव में कॉलेज में ऐसे विषयों का चुनाव कर लेते हैं, जिनमें उनकी कोई रुचि नहीं होती। ऐसा निर्णय कई बार बाद में पछतावे का कारण बनता है। अतः आप 'सुनें सब की, पर करें अपने मन की' के सिद्धांत पर अपने पसंदीदा विषयों का चुनाव करें। मैं पुनः सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

पिछले पाँच वर्षों के राजकीय व प्राइवेट विद्यालयों के बारहवीं के परिणामों का अध्ययन करने से पूर्व आइये तालिका-2 देख लें। 2015 में 50 प्रतिशत से आरम्भ हुई यात्रा आज 80 प्रतिशत पर पहुँच गई है जो एक शानदार उपलब्धि है। सरकारी स्कूलों के परिणामों में पिछले पाँच सालों में 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और

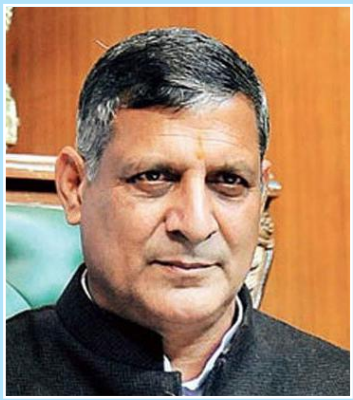

राजकीय विद्यालय बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं

हर्ष का विषय है कि 12वीं कक्षा के तीनों संकायों में बेटियों ने टॉप स्थान हासिल किया है। आज बेटियाँ किसी भी क्षेत्र में बेटों से कम नही हैं, बल्कि शिक्षा, संस्कृति जैसे क्षेत्रों में तो दो कदम आगे हैं। मैंने 12वीं कक्षा में टॉप पर आए विद्यार्थियों को फोन करके बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। मैंने कला संकाय में टॉपर बनी महेन्द्रगढ़ जिले की मनीषा, वाणिज्य संकाय की टॉपर कैथल जिले की पुष्पा और विज्ञान संकाय की टॉपर रेवाड़ी जिले की भावना यादव को फोन करके प्रदेश में अव्वल स्थान आने पर बधाई एवं शुभकामनाएँ दी हैं।

राज्य में पिछले 5 वर्ष से पढ़ाई का माहौल निरंतर सुधर रहा है जिसका सबूत हर वर्ष पास- प्रतिशतता में हो रही बढ़ौतरी है। हरियाणा के सरकारी स्कूल भी प्राइवेट स्कूलों से मुकाबला कर रहे हैं। सरकारी स्कूलों का जहाँ 79.78 प्रतिशत परिणाम रहा वहीं प्राइवेट स्कूलों का 80.97 प्रतिशत रहा है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की इस बार 12वीं कक्षा में रेगूलर पढ़ने वाले विद्यार्थियों का परीक्षा-परिणाम 80.34 फीसदी रहा है,जबकि पिछले वर्ष 2019 में 74. 48 , वर्ष 2018 में 63. 84 तथा वर्ष 2017 में 64. 50 प्रतिशत परिणाम रहा है। यानी हर वर्ष पास प्रतिशतता निरन्तर बढ़ती आ रही है।

परीक्षार्थियों की सुविधा के दृष्टिगत बोर्ड द्वारा पहली बार उनका प्रमाण-पत्र व रिजल्ट डिजीटल लॉकर में सुरक्षित रखने का निर्णय लिया गया है, जिसे आवश्यकतानुसार बोर्ड की वैबसाइट से डाउनलोड किया जा सकेगा। इससे परीक्षार्थियों को अगली कक्षा में प्रवेश लेने में परेशानी नहीं होगी।

कँवर पाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

देखने वाली बात है कि राजकीय विद्यालयों के मुकाबले प्राइवेट विद्यालय लगातार पिछड़ते चले गए, वर्ष 2015 में 5 प्रतिशत से आगे चलने वाले प्राइवेट विद्यालय वर्ष 2019 में पीछे छूट गए। अब अगर छात्र संख्या की बात करें तो राजकीय विद्यालयों में 5 प्रतिशत अधिक विद्यार्थी परीक्षा में बैठ रहे हैं। अक्सर इस बात को लेकर आलोचना होती है कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ाई नहीं होती, अब बोर्ड के परिणामों से बड़ा क्या प्रमाण दिया जाए। विद्यार्थी भी परीक्षा में ज्यादा, पास भी ज्यादा हुए, टॉपर भी राजकीय विद्यालयों के ज्यादा, अब और क्या प्रमाण दिए जाएँ। यदि मैरिट का अवलोकन करें तो राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की केवल पास-प्रतिशतता ही नहीं बढ़ी, अपितु प्राप्त अंकों की प्रतिशतता भी बढ़ी है तथा विषयों का परिणाम भी बढ़ा है। पहले जहाँ 33 प्रतिशत से 40 प्रतिशत अंक लेकर अधिकतर विद्यार्थी पास होते थे अब 60 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर पास होने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी है।

अब जरा जिलावार भी अध्ययन कर लें, सरकारी विद्यालयों की स्थिति तालिका-3 में देखें।

इस वर्ष पंचकूला जिले के 91.17 प्रतिशत विद्यार्थी पास हुए जो एक कीर्तिमान है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड का यह सबसे बेहतर परिणाम है। जींद 86. 23 प्रतिशत और शिक्षा मन्त्री जी का जिला यमुनानगर 88.81 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर रहा। कैथल, सिरसा, फतेहाबाद और मुख्य मन्त्री जी का जिला करनाल 84.79 प्रतिशत के साथ चौथे स्थान पर रहे।

अकसर राजकीय विद्यालयों की तुलना प्राइवेट विद्यालयों से होती है परन्तु क्या यह तुलना होनी चाहिए। किसी भी तुलना से पहले यह जानना जरूरी है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि क्या है। कक्षा बारहवीं के 1,09,363 विद्यार्थियों में से 37,796 विद्यार्थी एससी श्रेणी के हैं, 39,000 बीसी एवं बीपीएल श्रेणी के हैं, 32,567 विद्यार्थी सामान्य श्रेणी के हैं अर्थात् 70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी तो लाभ से वंचित वर्ग के हैं तथा 70 प्रतिशत विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से हैं एवं 58,243 तो छात्राएँ हैं। अब इनकी तुलना आप प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से कैसे करेंगे? इनमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, माता-पिता की तत्परता के स्तर पर बहुत विभिन्नता है। प्राइवेट विद्यालय के विद्यार्थी के पास टयूशन के लिए पैसे की व्यवस्था है, उसके माता-पिता पढ़े-लिखे हैं, वे शिक्षा की कीमत को जानते हैं,

तालिका-2	बारहवीं				
वरिष्ठ माध्यमिक परीक्षा परिणाम 2015 से 2020					
वर्ष	राजकीय विद्यालय		प्राइवेट विद्यालय		बोर्ड का कुल परिणाम
	विद्यार्थी परीक्षा में बैठे	पास प्रतिशतता	विद्यार्थी परीक्षा में बैठे	पास प्रतिशतता	पास प्रतिशतता
2015	129057	50.57	138481	54.52	52.82
2016	118033	62.05	131784	63.24	62.68
2017	97332	66.28	114983	64.77	65.46
2018	124653	64.46	101283	64.16	64.33
2019	100541	76.27	95213	73.43	74.89
2020	109763	79.78	102831	80.97	80.34

बच्चे को पढ़ने का वातावरण देते हैं, प्रोत्साहित करते हैं, हर संभव मदद देते हैं, अध्यापक और स्कूल से निरन्तर सम्पर्क रखते हैं, जवाबदेह रहते हैं, जबकि सरकारी विद्यालय का विद्यार्थी केवल और केवल अपने सरकारी अध्यापक और सरकारी स्कूल पर निर्भर है। कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि सरकारी स्कूलों में वे विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिन्हें माता-पिता पढ़ाना ही नहीं चाहते। ऐसे में घर में पढ़ाई का वातावरण तो दूर उसकी चिन्ता और समय रोजी-रोटी कमाने के लिए प्रतिदिन कई घंटे खेती

तालिका-3

बारहवीं कक्षा के गत 4 वर्षों के परीक्षा परिणामों का विश्लेषण

क्रमांक	जिला	मार्च-17	मार्च-18	मार्च-19	मार्च-20
1	अंबाला	65.34	63.62	77.12	83.06
2	भिवानी	65.81	61.32	74.78	74.54
3	चरखी दादरी		65.43	75.48	61.2
4	फरीदाबाद	53.55	64.30	71.74	83.52
5	फतेहाबाद	70.98	67.83	81.25	82.94
6	गुरुग्राम	56.09	55.00	74.42	83.16
7	हिसार	70.04	68.29	80.63	80.01
8	झज्जर	78.15	69.40	80.85	71.22
9	जींद	66.38	67.08	80.04	86.23
10	कैथल	68.46	70.24	79.86	86.52
11	करनाल	59.57	62.40	76.26	84.79
12	कुरुक्षेत्र	65.02	64.21	74.31	83.31
13	महेंद्रगढ़	70.00	68.73	81.72	68.58
14	नूंह	61.68	51.63	79.44	81.20
15	पलवल	43.55	34.30	56.27	83.33
16	पंचकूला	61.56	61.19	81.80	91.17
17	पानीपत	71.08	65.95	79.34	82.92
18	रेवाड़ी	73.05	73.10	83.13	80.52
19	रोहतक	65.17	68.27	81.03	73.29
20	सिरसा	68.27	65.94	79.04	84.16
21	सोनीपत	76.26	65.66	71.23	68.08
22	यमुनानगर	57.51	55.35	66.77	88.81

तालिका-4

विषयवार पास प्रतिशतता

क्रमांक	विषय	2018	2019	2020
1	हिंदी कोर	96.45	96.99	97.87
2	इतिहास	89.48	91.97	96.22
3	राजनीति विज्ञान	92.95	95.06	96.17
4	अर्थशास्त्र	88.06	95.77	95.74
5	भूगोल	91.77	95.37	96.88
6	समाज शास्त्र	93.59	93.16	95.12
7	लोक-प्रशासन	93.91	95.87	97.47
8	फाइन आर्ट्स	95.36	97.07	94.6
9	भौतिकी	84.32	78.46	88.88
10	रसायन विज्ञान	83.11	75.07	98.36
11	जीव विज्ञान	78.39	84.93	97.91
12	बिज़नैस स्टडी	86.67	91.37	98.76
13	अकाउंटैंसी	80.76	84.91	98.82
1	ओबीसी प्रतिशतता	64.04	75.07	81.09
2	एससी प्रतिशतता	57.43	71.63	76.2
1	विज्ञान प्रतिशतता	67.38	66.1	82.55
2	वाणिज्य प्रतिशतता	65.79	76.85	89.43

में, मजदूरी में, पशु पालन में, दुकानदारी में, रेहड़ी लगाने में, घर का चूल्हा-चौका आदि करने में लगाने पड़ते हैं। बड़े-बड़े विवाह समारोह में रातभर वेटर का काम करके चार पैसे कमाने वाला विद्यार्थी कितनी कठिन परिस्थिति में अपने आप को स्कूल में बनाए रखता है, यह भी गम्भीर विषय है। उनकी प्राथमिकता कुछ और है। शिक्षा, गृहकार्य तथा पठन-पाठन उसकी सूची में अन्तिम स्थान पर रहता है। ऐसे विद्यार्थी इन कठिन परिस्थितियों में इतना अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं तो उसके सरकारी स्कूल के गुरुजन तथा कल्याणकारी सरकार की बदौलत ही है। इसके लिए उनकी सराहना की जानी अनिवार्य है।

इस सरकार द्वारा जब ग्रेस-मार्क्स देने की वर्षों से चली आ रही परम्परा को समाप्त किया गया और नकल माफिया को बंद किया गया तभी से सरकारी विद्यालयों में बदलाव आना आरम्भ हुआ। अब यह बदलाव पिछले पाँच सालों में किए गए प्रयासों से संभव हुआ है। इसमें सरकार द्वारा भी खुलकर प्रयास किए गए। अध्यापक स्थानान्तरण पॉलिसी बनाकर अध्यापक को बार-बार ट्रांसफर के भय से मुक्त किया गया जिससे उसने अपना पूरा ध्यान पठन-पाठन पर लगाया, यहीं से सकारात्मकता का विकास आरम्भ हुआ। यह एक दो दिन में होने वाली घटना नहीं है, इस बदलाव का आरम्भ उस समय की स्कूल शिक्षा सचिव और इस समय की मुख्य सचिव श्रीमती केशनी आनन्द अरोड़ा जी द्वारा किया गया। कमतर प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों के मुखियाओं से सीधा संवाद करके, कम प्रदर्शन के कारण जानकर उस पर राज्य स्तरीय योजना बनाई गई, जिसको श्री पीके दास जी ने आगे बढ़ाया तथा डॉ.महावीर सिंह जी ने अपने शानदार प्रयासों से परिणामों में बदला।

इसके लिए मुख्य प्रयासों में परीक्षा की तैयारियों को लेकर स्कूल मुखिया, विषय अध्यापक तथा विद्यार्थी की साँझी योजना का प्रारूप तैयार किया गया। विद्यार्थियों को पिछले तीन वर्षों के बोर्ड पेपर उपलब्ध करवाकर निरन्तर अभ्यास करवाया गया। टॉपर विद्यार्थियों की पिछले तीन सालों की उत्तर-पुस्तिकाओं को विद्यालयों को उपलब्ध करवाया गया ताकि विद्यार्थी देख समझ सकें कि प्रश्नों को हल कैसे किया जाता है। इसका परिणाम यह आया कि टॉप करने वाले विद्यार्थियों में सरकारी स्कूलों के बच्चों की संख्या बढ़ी है। विद्यार्थियों के कक्षावार समूह बनाने का, उनकी क्षमता के अनुसार उन्हें परीक्षा के लिए तैयार करने का नया तरीका उपलब्ध करवाया गया तथा अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन किया गया। प्रातः काल में स्कूल लगे, शाम को देर तक स्कूल लगे, बोर्ड की कक्षाओं को पूरे जोर-शोर से तैयार किया गया।

कुरुक्षेत्र में 31 जनवरी, 2020 को हुई बैठक में उन सभी विद्यालय मुखियाओं को बुलाया गया जिनके परीक्षा परिणाम 20 प्रतिशत से कम थे। एक दिन की कार्यशाला में स्वयं अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा डॉ.महावीर सिंह जी अपनी पूरी टीम के साथ मैदान में उतरे, खुद मोर्चा सँभाला, स्वयं विद्यालय मुखियाओं से

बात की तथा एक-एक कारण और समस्या को समझा गया, हर स्कूल की अलग योजना बनाई गई, जिला व खण्ड स्तर की टीम बनी जिन्होंने स्कूलों की लगातार मदद की। ऐसे स्कूल जहाँ पर अध्यापकों की कमी थी उन्हें बीआरपी/एबीआरसी उपलब्ध करवाए गए, डाइट से अध्यापक लगाए गए, अतिरिक्त कक्षाएँ लगाई, सेवानिवृत्त अध्यापक लगाए गए, निःशुल्क ट्यूशन की व्यवस्था की गई, अभ्यास पुस्तिका का निर्माण किया गया। ऐसे विद्यार्थी जिन्हें केवल पास होना है, उनके लिए अलग योजना बनी। जिनकी मैरिट की संभावना है, उनकी अलग योजना बनी। साप्ताहिक टैस्ट शुरू किए गए, मासिक टैस्ट हुए, प्री-बोर्ड पर पूरा ध्यान दिया गया तथा उसे पूरे बोर्ड की तरह गम्भीरता से लिया गया। विषयवार, जिलावार पास प्रतिशतता को प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी को दिखाया गया तथा उनसे अपने-अपने जिले के लक्ष्य लिए गए, जिसको अधिकतर जिलों ने प्राप्त किया। यह विश्वास का वातावरण और सकारात्मकता का वातावरण ही आज इस मुकाम पर ले आया कि सरकारी स्कूल व्यवस्था खुद पर गर्व कर रही है। विषयवार सुधार हुआ है तथा ऐसे वर्ग का विद्यार्थी जो पूरी तरह से सरकारी व्यवस्था पर निर्भर है, उसके परिणामों में सुधार हुआ।

तालिका-4 के अनुसार यदि पिछले तीन वर्षों का अध्ययन किया जाए तो विषयवार भी परीक्षा परिणाम बढ़ रहा है। हिन्दी, इतिहास, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र जैसे विषयों में भी पास प्रतिशतता बढ़ी है। वहीं यदि नॉन-मेडिकल की बात की जाए तो भौतिकी, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान जैसे विषयों का परिणाम बहुत अधिक बढ़ा है। बिजनैस स्टडी और अकाउंटेंसी जैसे विषयों का परिणाम तो 99 प्रतिशत तक पहुँचा है। ये सरकार की कल्याणकारी तथा विद्यार्थी केन्द्रित नीतियों का परिणाम है जिससे तीन वर्षों में बीसी श्रेणी के विद्यार्थियों का बारहवीं का परिणाम 64 से 81 प्रतिशत तक पहुँचा। वहीं पर एससी श्रेणी के विद्यार्थियों का परिणाम 57 प्रतिशत से 76 प्रतिशत पर आ गया है। यह 15 से 20 प्रतिशत की वृद्धि बताती है कि धरातल पर बहुत काम हो रहा है, बहुत कुछ बदल रहा है। यदि कम्पार्टमेंट को भी शामिल किया जाए तो राज्य में 98 प्रतिशत लड़कियाँ पास हुई हैं तथा वाणिज्य संकाय में 98 प्रतिशत विद्यार्थी पास हुए हैं। अब लगता है ये बढ़े हुए कदम नहीं रुकेंगे, सकारात्मकता का यह वातावरण अपने लिए नये लक्ष्य निर्धारित करके उन्हें प्राप्त करेगा। आज का नेतृत्व माननीय मुख्य मन्त्री महोदय की प्रेरणा से कार्य कर रहा है, माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय के मार्गदर्शन में तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव के निर्देशन में निरन्तर आगे बढ़ रहा है। इन परीक्षा परिणामों ने आलोचकों को उत्तर दे दिया है।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

'शिक्षा सारथी' के उपसंपादक डॉ. प्रदीप राठौर को मुख्यमंत्री ने किया सम्मानित

चौहत्तरवें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर पंचकूला में आयोजित राज्यस्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने संपादन, रचनात्मक लेखन, शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान जन सेवा के कार्यों में उल्लेखनीय योगदान के लिये 'शिक्षा सारथी' के उपसंपादक डॉ. प्रदीप राठौर को सम्मानित किया । इस राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह के कुशल व प्रभावी संचालन के लिए भी मुख्यमंत्री महोदय ने इनकी पीठ थपथपाई।

डॉ. राठौर ने अपनी विशिष्ट अध्यापन शैली से शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाई है। इनकी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण हरियाणा सरकार शिक्षा के क्षेत्र में इन्हें 'स्टेट अवार्ड' से भी सम्मानित कर चुकी है। संप्रति वे शिक्षा जगत की महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'शिक्षा सारथी' का संपादन कर रहे हैं, जो विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा के द्वारा प्रदेश के सभी विद्यालयों में भेजी जाती है। इनके कुशल संपादन में यह पत्रिका न केवल शिक्षण जगत की गतिविधियों का आइना बनी है, बल्कि शिक्षण की नवाचारी गतिविधियों पर विशेष रूप से केंद्रित होने के कारण शिक्षक वर्ग में काफी लोकप्रिय हुई है। प्रदेश की मुख्य सचिव श्रीमती केशनी आनन्द अरोड़ा भी पत्रिका के कुशल संपादन के लिए इनकी प्रशंसा करते हुए इन्हें प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर चुकी हैं।

डॉ. राठौर को सबसे अधिक पहचान उनकी वक्तृत्व-कला ने दिलाई है। छोटे से लेकर बड़े कार्यक्रम में उनके द्वारा किया जाने वाला मंच-संचालन कार्यक्रम में नई रंगत भरता है, इसी कारण उन्हें अनेक सरकारी विभाग और गैर सरकारी संस्थाएँ मंच-संचालन के लिए बुलाती हैं। प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस-गणतंत्र दिवस समारोह हों, सूरजकुंड का अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला हो या फिर कोई अन्य मैगा शो, हर जगह उनकी माँग रहती है। बकौल डॉ. राठौर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम में मंच-संचालन करना उनके लिए एक यादगार अनुभव रहा। डॉ. राठौर को प्रेरक वक्ता के रूप में न केवल विभिन्न विद्यालयों-महाविद्यालयों व विभिन्न संस्थाओं के कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाता है, बल्कि ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन पर इस कार्य के लिए उनकी उपस्थिति अनेक बार देखी जाती है। 'शहीद भगत सिंह जागृति मंच' नामक समाजसेवी संस्था के महासचिव के रूप में कार्य करते हुए वे अनेक समाजसेवी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं।

-डॉ. देवियानी सिंह

सरकारी स्कूल की बेटियों ने रचा नया इतिहास

सत्यवीर नाहड़िया

वैसे तो आज हमारी बेटियाँ जीवन की हर यात्रा में अपनी प्रतिभा के बूते पर निरंतर नए आयाम रचती जा रही हैं, किंतु इन तीन बेटियों की कहानी कई मायनों में विद्यार्थियों, शिक्षकों, स्कूलों तथा समाज के लिए लीक से हटकर हैं। इन बेटियों की उपलब्धियों तथा सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि सीमित संसाधनों में भी निरंतर साधना के चलते सफलता के सर्वोच्च शिखर जीते जा सकते हैं। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं बारहवीं कक्षा के बोर्ड परिणाम में अपनी उत्कृष्ट उपस्थिति दर्ज कराने वाली मेधावी छात्रा मनीषा यादव, भावना यादव व रेखा यादव की जिन्होंने एक ओर जहाँ सरकारी स्कूलों को नया सम्मान व नयी पहचान दी है, वहीं उन्होंने समाज में सरकारी स्कूलों के प्रति दृष्टिकोण को भी बदल कर रख दिया है। इन तीनों प्रतिभाशाली छात्राओं के व्यक्तित्व एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि में गज़ब की एकरूपता को संयोग ही कहा जा सकता है। एक ओर जहाँ ये तीनों बेटियाँ किसानी संस्कृति के मध्यवर्गीय परिवारों से ताल्लुक रखती हैं, वहीं इन्होंने यह सफलता बिना किसी अतिरिक्त कोचिंग या ट्यूशन के प्राप्त की है। इतना ही नहीं ये तीनों बेटियाँ पढ़ाई के अलावा विद्यालय की सांस्कृतिक एवं अन्य सभी रचनात्मक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेती रहीं हैं। इन तीनों ही बेटियों का उद्देश्य आईएएस बनकर राष्ट्र सेवा करना है। ये तीनों बेटियाँ अपने गाँव से सरकारी स्कूल तक पैदल या साइकिल से जाती थीं, जिससे इनकी साधना का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है।

महेंद्रगढ़ जिले के गाँव सिहमा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की मेधावी छात्रा मनीषा यादव में 500 में से 499 अंक लेकर प्रदेश भर में प्रथम स्थान प्राप्त कर नया इतिहास रचा है। गाँव खामपुर से करीब चार किलोमीटर का रास्ता मनीषा पिछले चार वर्षों से अपने विद्यालय के आवागमन के लिए पैदल ही नापती थी। किसान पिता मनोज कुमार तथा गृहिणी माता सुनीता के साथ वह घर तथा खेत-क्यार के वे सभी कार्य करती थी, जो गाँव-देहात में हर परिवार करता है। मनीषा अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता के संस्कारों तथा गुरुजन के प्रेरक मार्गदर्शन को देती हैं। उनके विद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी तथा उनकी कक्षा अध्यापिका डॉ. सुषमा यादव बताती हैं कि मनीषा पढ़ाई के अलावा विद्यालय की तमाम गतिविधियों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती थी तथा दिखावा, घमंड से वह कोसों दूर है। विद्यालय के प्राचार्य सुधीर यादव उसे दिव्य बच्ची मानते हैं तथा उसकी साधना व विनम्रता को सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरक बताते हैं। मनीषा की खास बात यह है कि वह पहली से 12वीं कक्षा तक सरकारी स्कूल की छात्रा रही है, वह बताती है कि इन कक्षाओं में रहते हुए वह कभी फर्स्ट पोजीशन पर नहीं आई, हमेशा दूसरी पोजीशन पर ही आती थी, फर्स्ट पोजीशन पर आने वाले बच्चे बदलते रहते थे। इस बार मेहनत काम आई, बारह वर्षों का हिसाब बराबर हो गया। नृत्य, पुस्तकें पढ़ना तथा संगीत सुनना उसकी रुचि-अभिरुचि में शुमार है।

रेवाड़ी जिले के गाँव बोड़िया कमालपुर स्थित राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की प्रतिभाशाली छात्रा भावना यादव ने इस बार 12वीं कक्षा में 500 में से 496 अंक लेकर विज्ञान संख्या में प्रदेश भर में प्रथम स्थान हासिल किया है। रेवाड़ी जिले के किशनगढ़ (बालावास) गाँव की भावना के पिता बिजेंद्र कुमार जहाँ

अहीर कॉलेज रेवाड़ी के पुस्तकालय में सेवारत हैं, वही माता गृहिणी हैं। किसानी संस्कृति के इस परिवार में भावना भी रची बसी है। वह प्रतिदिन साइकिल से स्कूल आती जाती थी। भावना बताती है कि उसने विद्यालय के अलावा कहीं कोई अतिरिक्त कोचिंग नहीं ली, गुरुजन के मार्गदर्शन तथा स्वाध्याय से यह सफलता प्राप्त की है। विद्यालय के प्राचार्य श्रीपाल सिंह बताते हैं कि शिक्षकों, अभिभावकों तथा मेधावी बेटी भावना के टीमवर्क का प्रतिफल है। 10वीं तक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने के बाद भावना के पिता बिजेंद्र कुमार ने उसकी आगे की पढ़ाई के लिए सरकारी स्कूल को चुना। वे कहते हैं कि अब सरकारी स्कूलों की दशा और दिशा बदल रही है। भावना यादव ने यह सफलता अपने दादा चुन्नीलाल यादव सरपंच के उच्च आदर्शों को समर्पित की है।

कला संकाय में राज्यभर में तीसरे स्थान पर रही वर्षा यादव ने 495 अंक लेकर अपने गाँव जाडरा तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जाडरा का नाम रोशन किया है। किसान पिता आजाद सिंह तथा गृहिणी माता शर्मिला के साथ किसानी संस्कृति के सब कार्य में पारंगत वर्षा उत्तीर्ण की हैं तथा सभी कक्षाओं में सदा पहले या दूसरे स्थान पर रही है। विद्यालय के प्राचार्य गिरवर सिंह तथा पूर्व प्राचार्य अरविंद यादव का मानना है कि वर्षा यादव ने सीमित संसाधनों में अपनी प्रतिभा के बूते पर निरंतर नए आयाम रचे हैं। दसवीं में इसी विद्यालय की टॉपर होने के बावजूद उसने विज्ञान संकाय की बजाय कला संकाय क्यों चुनी- इस पर वर्षा बताती है कि उसका ध्येय कला संकाय से पढ़कर आईएएस बनना है, इसलिए उसने पहले ही अपना मन कला संकाय के लिए बना रखा था। मात्र आधा एकड़ जमीन पर गुजर-बसर करने वाला यह परिवार आज अपनी बेटी की इस करिश्मामयी सफलता पर अभिभूत है तथा पूरा गाँव अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हुए यह कहता प्रतीत होता है कि अब बेटे तथा बेटियों में कोई अंतर नहीं है।

इन तीनों बेटियों के अलावा प्रदेश की हजारों बेटियों ने इस बार सरकारी स्कूलों से पढ़कर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उत्कृष्ट उपस्थिति दर्ज कराई है। इन उपलब्धियों ने समाज के बेटियों तथा सरकारी स्कूलों के प्रति उपेक्षित भाव तथा नज़रिए को बदला है। आइए, हम सब मिलकर

यादव ने पढ़ाई के साथ विद्यालय के तमाम सांस्कृतिक एवं प्रतियोगी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है। गायन, नृत्य, पेंटिंग आदि में महारत हासिल रखने वाली वर्षा ने कला उत्सव तथा सांस्कृतिक उत्सव में विद्यालय का नाम कई बार रोशन किया है। मनीषा की तरह वर्षा की भी खास बात यह है कि पहली से बारहवीं तक उसने सभी कक्षाएँ सरकारी स्कूल से ही उत्कृष्टता के साथ सिहमा, बोड़िया कमालपुर, जाडरा तथा ऐसी ही अन्य उपलब्धियों को अपने-अपने विद्यालयों में दर्ज कराने के लिए नई उमंग और नए संकल्प के साथ ईमानदार प्रयास व साधना जारी रखें।

प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राआवमा विद्यालय खोरी, जिला-रेवाड़ी
हरियाणा

बेटी म्हारी गजब

हरियाणा की लाडली, अव्वल आई फेर।
घर का करती काम ये, पढ़ती देर सबेर।
पढ़ती देर सबेर, फेर बी आग्गै आवै।
कैसा हो मैदान, शान तै मान बढ़ावै।
कहै भारती हमें, लिंग भेद को मिटाणा।
बेटी म्हारी गजब, नाज करता हरियाणा।

हरियाणा की लाडली, सिहमा की सै शान।
रही मनीषा टोप म्ह, खूब बढ़ाया मान।
खूब बढ़ाया मान, बणी कुलदीपक बेटी।
मात पिता की खुशी, आज न जाये समेटी।
महंद्गढ़ की आन, मनीषा नै जब ठाणा।
मनीषा नम्बर वन, नाज करता हरियाणा।

बेटी नै चाला करा, करकै काम विशेष।
बी के पुर की भावना, टोप रही प्रदेश।
टोप रही प्रदेश, नाम चमका रेवाड़ी।
देखो लोगो फेर, बेटियाँ रही अगाड़ी।
कहै 'भारती' आज, खुशी न जाये समेटी।
बधाई मात पिता, पढ़ाई जिण नै बेटी।

- भूपसिंह 'भारती', शिक्षक,
रामा विद्यालय डेरोली अहीर, जिला महेंद्रगढ़,
हरियाणा

म्हारी छोरियाँ छोरयाँ ते कम नी, आग्गै सैं

डॉ. प्रदीप राठौर

दसवीं का हो या बारहवीं का परीक्षा परिणाम, समाचार पत्रों में ऐसी सुर्खियाँ देखने को मिलीं- 'बेटियों ने रचा इतिहास', 'बारहवीं की टॉप 22 पोजिशन में से 17 पर लड़कियाँ', 'लड़कियाँ एक बार फिर लड़कों से बहुत आगे।' आखिर बेटियाँ ऐसा चमत्कार कैसे कर रही हैं? जिस देश में 1951 में महिला साक्षरता दर लगभग 9% रही हो, जिस देश की सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियाँ बेटियों की शिक्षा में लगातार रोड़ा बनती रही हों, उस देश की बेटियाँ तमाम चुनौतियों का सामना करती हुई जब बेहतर प्रदर्शन करती हैं तो जाहिर सी बात है ऐसे समाचार रेगिस्तान की तपती रेत पर चलते हुए शीतल हवा के सुखद झोंके का-सा अहसास कराते हैं। अगर लड़का-लड़की एक समान हैं तो क्या कारण है कि लड़कियाँ लड़कों से बहुत आगे हैं। इन्हीं प्रश्नों का जवाब जानने के लिए 'शिक्षा सारथी' ने कुछ शिक्षकों से बात की, जो यहाँ प्रस्तुत है-

पंचकूला जिले के रावमा विद्यालय बुंगा में हिंदी अध्यापिका के रूप में कार्यरत सुदेश राठौर मानती हैं कि गरीबी, सामाजिक दकियानूसी सोच, लैंगिक भेदभाव, स्कूल की घर से दूरी, बेटियों से छेड़छाड़ और दुष्कर्म की घटनाएँ निश्चित तौर पर बेटियों की शिक्षा में बाधक बनती हैं। बेटियाँ भी संभवतः इस तथ्य से परिचित हैं कि न्यूनतम संसाधनों और सामाजिक व पारिवारिक सहयोग के चलते ही उन्हें आगे बढ़ना है। वे जान चुकी हैं कि शिक्षा ही वह माध्यम है, जिससे वे अपनी भाग्य की रेखाओं को बदल सकती हैं। उन्हें मालूम है कि समाज, ससुराल और पति की नजर में सम्मान भी तभी मिलेगा जब वे आर्थिक रूप से सबल बनेंगी। इसी कारण वे अपने करियर के प्रति अधिक सचेत हुई हैं और अपने भविष्य के प्रति संजीदगी से सोचने लगी है। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' सरीखे अभियान, कस्तूरबा गांधी बालिका जैसे विद्यालयों की स्थापना, विद्यालयों में उनके ड्रॉपआउट रोकने के सरकारी प्रयास, उनके लिए अलग शौचालय, उनकी 'मन की बात' सुनने वाले बालिका मंचों की स्थापना ने निश्चित रूप से उनके रास्ते को आसान किया है। समाज की परंपरागत पृष्ठभूमि जो बचपन से ही उन्हें जिम्मेदारी का अहसास कराती है, भी शिक्षा के क्षेत्र में उनकी गंभीरता का कारण बनती है। ज्यादातर समय घर में रहने के कारण उनका ध्यान भटकने की आशंका भी कम रहती है। इन्हीं तमाम कारणों से आज लड़कियाँ शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं।

रेवाड़ी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लुखी के अंग्रेजी प्रवक्ता श्रीभगवान बव्वा कहते हैं- लोगों को आपने यह कहते जरूर सुना होगा कि माँ-बाप लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा कम महत्त्व देते हैं। हाँ, शायद यह बात कमोबेश सच भी हो लेकिन हाल ही में आए हरियाणा शिक्षा बोर्ड के कक्षा दसवीं के नतीजे कुछ और ही बयाँ कर रहे हैं। और बात केवल शिक्षा बोर्ड की ही नहीं है; देश एवं राज्य द्वारा आयोजित अधिकतर परीक्षाओं में बेटियाँ अपना परचम लहरा रही हैं। लड़कों से बेहतर परीक्षा परिणाम देकर बेटियाँ खुद को मजबूत साबित करने में सफल हो रही हैं ! क्या कारण है कि उपेक्षा के बावजूद बेटियाँ हर क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन कर रही हैं। 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' अभियान ने निश्चित रूप से देश एवं राज्य के लोगों की मानसिकता को एक सकारात्मक रुख दिया है। अधिकतर अभिभावक यह बात बखूबी समझने लगे हैं कि बेटा-बेटी में कोई फर्क नहीं होता । लोगों ने मानना शुरू कर दिया है कि बच्चों को बेहतर शिक्षा देना जरूरी है, फिर चाहे वह बेटा हो या बेटी। एक वक्त था जब पुत्र की चाह में कई कई बेटियाँ पैदा कर लेते थे लेकिन वर्तमान दौर एक बेटी पर नसबंदी करवाने वालों के उदाहरण खोजना कोई दुर्लभ चीज नहीं रही है। सामाजिक तौर पर प्राचीन काल से लड़कियों को कमजोर समझा जाता रहा है। आभार महिला सशक्तिकरण अभियान एवं

पीएम ने की पानीपत की मेधावी छात्रा कृतिका से बात

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 26 जुलाई को अपने 'मन की बात' रेडियो संबोधन में उत्कृष्ट प्रदर्शन से कक्षा बारहवीं की बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करने को लेकर पानीपत की मेधावी छात्रा कृतिका की प्रशंसा की। अपने मासिक रेडियो संबोधन में प्रधानमंत्री ने उन विद्यार्थियों से बातचीत की जिन्होंने बोर्ड की परीक्षाओं में उत्तम अंक हासिल किये ।

हरियाणा के पानीपत जिले के मेहराणा गाँव की कृतिका नांदल ने 96 फीसदी से अधिक अंक हासिल किये हैं। प्रधानमंत्री ने यह चर्चा की कि कैसे देश बदल रहा है तथा गाँवों एवं छोटे शहरों के किशोर-किशोरियाँ आगे आ रहे हैं और सफलता की नयी ऊँचाइयाँ हासिल कर रहे हैं। वे विषम परिस्थितियों के बावजूद आगे बढ़ रहे हैं और अपने सपने पूरे कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कृतिका से उसकी रुचि, प्रेरणा आदि विषयों पर बात की तथा उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कृतिका ने बताया कि प्रधानमंत्री से बातचीत करते हुए उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने किसी दोस्त से बात कर रही हो।

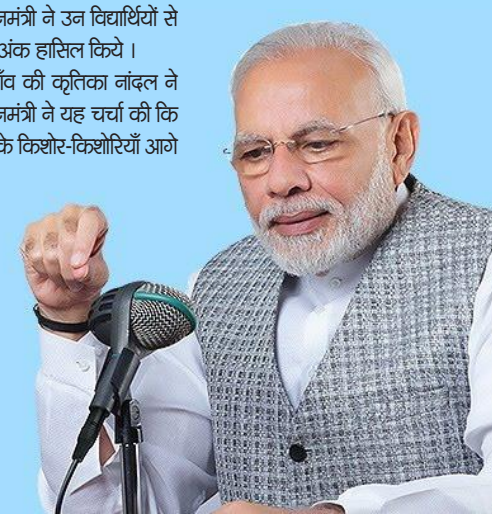

लिंग संवेदीकरण कार्यक्रम या फिर विद्यालय स्तर पर बालिका मंच और आत्म रक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि, इन सब प्रयासों से न केवल छात्राओं में बल्कि अभिभावकों में भी आत्म विश्वास बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप हम हर क्षेत्र में बेटियों को काबिले तारीफ काम करते हुए देख रहे हैं। एक दौर था जब बेटियों को चारदीवारी के भीतर रहने के लिए विवश किया जाता था। आज जब उन्हें मौका मिला है कि वे पुरुषों के साथ कदम से कदम मिला कर चल सकें तो वे अपनी पूरी सामर्थ्य से अपने कार्य को बखूबी अंजाम देती हैं, बल्कि बहुत बार उनसे कहीं बेहतर प्रदर्शन करती हैं।

अंबाला जिले के बराड़ा खंड में स्थित रावमा विद्यालय उगाला में पीजीटी भूगोल में रूप में सेवाएँ दे रहे अभिमन्यु मानते हैं कि लड़कियाँ हर परीक्षा में अच्छा स्कोर करती हैं, क्योंकि उनमें जन्मजात प्रतिस्पर्धा का गुण होता है। भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज होने के कारण आज भी लड़कियों को घर से बाहर किसी सहेली आदि के घर जाने की उतनी आजादी नहीं होती, जितनी कि लड़कों को होती है। इसलिए लड़कियाँ अपने इस समय को परीक्षा की तैयारियों और शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में लगाती हैं। अधिकांश लड़कियों का हस्तलेख भी बहुत सुंदर होता है, जो उनको अधिक अंक दिलवाने में मदद करता है। लड़कियाँ पेपर में प्रश्नोत्तर को बहुत अच्छे एवं सुसज्जित ढंग से लिखती हैं जो उनको लड़कों के मुकाबले अच्छे अंक दिलवाने में सहायक होता है। लड़कियों में देखा जाता है कि याद करने की शक्ति लड़कों की तुलना में अधिक होती है। अच्छा स्कोर करने वाली लड़कियाँ सामान्यतः अपने अध्यापकों के सम्पर्क में रहती हैं तथा टॉपिक्स को ज्यादा अच्छे से समझने के लिए बार-बार पूछने में झिझकती नहीं हैं। सामान्यतः देखा गया कि टॉप करने वाली लड़कियाँ विद्यालय स्तर पर होने वाली लगभग सभी गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेती हैं, जिससे उनमें सृजनात्मकता लड़कों की तुलना में अधिक विकसित हो जाती है। वे किसी भी कार्य को लड़कों की तुलना में ज्यादा सक्रियता के साथ करती हैं तथा आलस्य कम करती हैं। इसलिए भी वे ज्यादा एक्टिव होती हैं तथा बेहतर स्कोर करती हैं।

राजकीय प्राथमिक पाठशाला, वार्ड-10 पानीपत में कार्यरत जेबीटी अध्यापक बोधराज के अनुसार बेटियों के ज्यादा अंक आने का मुख्य कारण है कि वे भी लड़कों की भाँति समाज में अपनी पहचान बनाना चाहती हैं ताकि उनको कोई कमतर नहीं आँक सके और वे अच्छे अंक प्राप्त करके अच्छी नौकरी या पद प्राप्त कर सकें। उनको लड़कों की तरह से समाज में घूमने व आवाजाही की आज़ादी नहीं होती जिस कारण उनका ध्यान पढ़ाई पर होता है व पढ़ने के लिए भी समय ज्यादा मिलता है। दूसरे अधिकतर सुविधाएँ जैसे मोटरसाइकिल, मोबाइल आदि का उपयोग लड़के ज्यादा करते है। इस कारण उनका ध्यान पढ़ाई पर कम होता है। सामाजिक जिम्मेदारी और घर के बाहर के कार्य भी अधिकतर लड़कों को ही सौंपे जाते हैं। जबकि लड़कियों को पढ़ने का ज्यादा समय मिल पाता है। तीसरा, लड़कियों को पता होता है कि यदि वे अच्छे अंक नही लेकर आएँगी तो हो सकता है उनकी पढ़ाई छुड़वा ली जाये या घरवाले जल्दी शादी करने के बारे सोचने लगें। इस कारण भी लड़कियों का पढ़ाई में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन रहता है।

यमुनानगर जिले के जगाधरी खंड में स्थित रावमा विद्यालय कैंप में विज्ञान अध्यापक के रूप में सेवा दे रहे दर्शन लाल बवेजा मानते हैं कि परीक्षा परिणाम में छात्राओं के द्वारा बेहतर प्रदर्शन के पीछे उनमें जिम्मेदारी की भावना लड़कों की अपेक्षा अधिक होना मुझे समझ आता है। छात्राएँ अपने घर के काम में सबकी मदद करने के साथ-साथ परीक्षा परिणामों में भी अव्वल रहती हैं, यह उनकी एक विशेष उपलब्धि है। विद्यालय में भी समय पर गृह कार्य पूरा करना व मासिक मूल्यांकन परीक्षाओं में भी लड़कों से अधिक अंक लाना यह भविष्यवाणी कर देता है कि छात्राएँ ही पढ़े लिखे समाज की नींव रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगी। कहने का मतलब यह है कि छात्राओं में जिम्मेदारी की भावना अधिक होती है। मैंने यह बहुत बार नोटिस किया है कि छात्राएँ विद्यालय में छात्रों की अपेक्षा अधिक संजीदा होती है। छात्राएँ छात्रों की अपेक्षा अध्यापक के निर्देशों का पालन भी अधिक करती हैं।

डॉ.प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

कोरोना काल में स्काउटों ने किए सेवा-कार्य

एलएस वर्मा

स्काउट-प्रार्थना गाते समय ये पंक्तियां भी गाई जाती हैं- 'हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा, सदा ईमान हो सेवा व सेवक चर बना देना।' कोविड जन्य आपदा के दौरान हमारे स्काउटों ने इसी को चरितार्थ करते हुए अनेक सेवा-कार्य किए। वैसे तो वे किसी भी आपदा के दौरान अपना विशिष्ट योगदान देते हैं। अब विश्व व्याप्त कोविड-19 आपदा के दौरान भी इन स्काउटों ने अपना विशेष योगदान दिया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के आह्वान पर व श्री केके खण्डेलवाल के दिशा निर्देशानुसार राज्य के सभी दृढ़संकल्पी स्वयंसेवकों ने इस महामारी के दौरान राज्य में सेवा-कार्य करने का बीड़ा उठाया। कोरोना से लंबी लड़ाई देखते हुए हरियाणा राज्य के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न प्रकार से प्रशासन व पुलिस का सहयोग करने हेतु कार्य, कोरोना से बचने के लिए जागरूकता अभियान, रक्तदान करने का पुनीत कार्य, पशुओं को चारा व पक्षियों के लिए दाने व पानी का प्रबन्ध, क्वारनटीन सैंटरों में सहायता, गरीब मजदूर लोगों तक सब्जी-राशन पहुँचाने का कार्य, स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर सैनिटाइज करने का कार्य, रेलवे-स्टेशन पर घर को लौट रहे मजदूरों को मास्क बाँटने व सेनिटाइजर बाँटने के साथ-साथ खाने व पीने की व्यवस्था में सहयोग करने का कार्य, स्लम एरिया में जाकर मास्क व सेनिटाइजर वितरण का कार्य स्वंयसेवकों द्वारा किया गया जो राज्य के लिए अत्यन्त गर्व का विषय रहा है। अपने सेवा-धर्म को निभाने का ऐसा जज़्बा केवल स्काउट/गाइड संस्था के कार्यकर्ताओं में ही देखने को मिल सकता है। स्काउटों द्वारा किए गए कुछ

भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के स्वयंसेवक बना रहे हैं मास्क

उल्लेखनीय सेवा-कार्य निम्नांकित हैं-

लॉकडाउन के दौरान किए गए सेवा कार्य-

जिस समय कोरोना महामारी के कारण पूरे देश में लॉकडॉउन की स्थिति बनी हुई थी। सरकार द्वारा भी सभी का बाहर निकलना बन्द किया गया था उस समय में हमारे राज्य के विभिन्न जिलों के स्काउट्स/गाइड्स, यूनिट लीडर्स व उच्च अधिकारियों ने अपने-अपने जिला प्रशासन के सहयोग से बाहर निकलकर लॉकडाउन के नियमों का पालन करते हुए समाज के लिए अनेक सेवा-कार्य किये। कोरोना वायरस के फैलते हुए संक्रमण को देखते हुए जिला फरीदाबाद, कैथल, अम्बाला, सिरसा, जींद, पानीपत के स्काउट्स-गाइड्स, रोवर्स-रेंजर्स ने अपने यूनिट लीडर्स के साथ मिलकर सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए व मास्क पहनकर, जिला मुख्यालयों के सहयोग से जागरूकता अभियान चलाए, जिसमें लोगों को कोरोना से बचने, सामाजिक दूरी का पालन करने का संदेश देने, अपने हाथों व शरीर को स्वच्छ रखने के बारे में बताया गया।

इन्होंने अलग-अलग मुहल्लों में व कॉलोनियों में जाकर लोगों को लॉकडाउन के नियमों का पालन करने व घर में ही रहने का संदेश दिया। जरूरतमंद लोगों को जिलों की विभिन्न समाज सेवी संस्थाओं के सहयोग से राशन बाँटने व खाना बनाकर गरीब लोगों तक पहुँचाने का कार्य रोवर्स व यूनिट लीडर्स द्वारा किया गया।

जिला कैथल में 'भीष्म ओपन ग्रुप' के कार्यकर्ताओं ने जिले के उपायुक्त कार्यालय से तालमेल करते हुए अनेक प्रकार के सेवाकार्य किए। जिला फरीदाबाद में स्कूलों, स्लम एरिया व गरीब बस्तियों को सैनीटाइज कराने में अपना योगदान दिया।

मास्क बनाने व बाँटने का कार्य-

विश्व में फैली इस महामारी के दौरान सभी का कर्तव्य बनता है कि कोई न कोई सेवा-कार्य इस मुश्किल घड़ी में मानवता के लिए किया जाए। इसी सोच

के साथ सभी कार्यकर्ता अपने-अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए यथासंभव प्रयास कर रहे हैं। हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स गाइड्स संस्था के कार्यकर्ताओं ने घर पर मास्क बनाने व वितरण करने का कार्य किया। इस कड़ी में जिला कैथल व फरीदाबाद के ओपन ग्रुप्स के रोवर्स-रेंजर्स, जिला पानीपत की रेंजर्स, सिरसा जिले के सभी रोवर्स व रेंजर्स, जिला सोनीपत, जींद, पलवल व अम्बाला के रोवर्स व रेंजर्स तथा यूनिट लीडर्स ने घर में मास्क बनाकर जरूरतमंद लोगों, पुलिस विभाग के अधिकारियों, मजदूरों व झुग्गी-बस्तियों के लोगों को बाँटने का सेवा कार्य किया। इन्होंने बाज़ारों-चौराहों पर खड़े होकर वहाँ से आने जाने वाले लोगों को मास्क बाँटने का कार्य किया। जिला पानीपत व फरीदाबाद की रेंजर्स व रोवर्स ने रेलवे स्टेशन पर जाकर श्रमिक-ट्रेनों से जाने वाले मजदूरों को मास्क व सेनिटाइजर बाँटे व उन्हें सोशल डिस्टेंसिंग रखने के बारे में समझाया। राज्य के कार्यकर्ताओं द्वारा माह मई से लेकर अब तक लगभग 1,35,000 मास्क बनाकर जरूरतमंद लोगों को बाँटे जा चुके हैं जिसकी सराहना प्रशासन व अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा की जा चुकी है। कई संस्थाओं ने हमारे कर्मठ कार्यकर्ताओं को पुष्प देकर व माला पहनाकर सम्मानित भी किया। जिलों के मीडिया कर्मचारियों द्वारा भी हमारे कार्यकर्ताओं की खूब प्रशंसा की गई व सभी समाचार पत्रों में उनकी खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया।

राशन वितरण का कार्य-

यह सब जानते हैं कि इस महामारी की सबसे अधिक मार गरीब व मजदूर वर्ग के लोगों को झेलनी पड़ी। इस महामारी के दौरान रोज कमाने-रोज खाने वाले गरीब लोगों को बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। गरीब मजदूरों के सामने रोजी-रोटी कमाने की दिक्कत बहुत बड़ी थी। इस बात को ध्यान में रखकर हमारे राज्य के सभी कार्यकर्ताओं ने गरीब व जरूरतमंद लोगों तक खाना पहुँचाने का पुनीत कार्य किया। जिला एसोसिएशन सिरसा, 'भीष्म ओपन ग्रुप', कैथल, ओपन ग्रुप फरीदाबाद के रोवर्स व रेंजर्स ने अपने-अपने स्तर पर चंदा इकट्ठा करके गरीब व प्रवासी मजदूर लोगों के लिए भोजन व राशन की व्यवस्था की। जिला सिरसा में डीओसी इन्द्रसेन व मंजु बाला ने अपने यूनिट लीडर्स के सहयोग से चंदा इकट्ठा किया व भोजन बनाकर वितरित करने व कई स्थानों पर सूखा राशन बाँटने का कार्य किया। जिला कैथल में 'भीष्म ओपन ग्रुप' ने भारत विकास परिषद् व श्री साई संस्था के सहयोग से हर रोज भोजन बनाने व बाँटने का कार्य किया।

जिला फरीदाबाद के स्वयंसेवकों ने डीओसी सरोज बाला के सहयोग से चंदा इकट्ठा किया व हर रोज फल, सब्जियाँ, सूखा राशन गरीब लोगों व झुग्गी बस्तियों में जाकर बाँटने का कार्य किया। जिले की टीम ने डीओसी के

निर्देशानुसार हर संभव सुरक्षा के उपायों को अपनाते हुए घर-घर जाकर राशन वितरण करने का कार्य किया। जिला अम्बाला के ओपन ग्रुप के रोवर्स ने अपने लीडर सद्दाम हुसैन के दिशा-निर्देश में गरीब व जरूरतमंद लोगों को राशन वितरण करने का कार्य किया।

प्रधानमन्त्री केअर फंड में दान-

हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स संस्था के सदस्यों द्वारा इस महामारी के दौरान देश की सहायता में बढ़-चढ़ कर सहयोग किया गया। प्रधानमन्त्री केअर फंड में हमारे कार्यकर्ताओं द्वारा 3.50 लाख रुपये की राशि दान की गई। अनेक स्काउट मास्टरों द्वारा भी अपनी अपनी मासिक आय का अंशदान प्रधानमंत्री राहत कोष में किया गया। जिला सिरसा के ग्रुप लीडर श्री संजीव अग्रवाल ने 2 लाख की राशि प्रधानमंत्री केअर फंड में दान स्वरूप दी।

मुझे यह जानकर अत्यन्त गर्व महसूस हुआ कि भारत स्काउट एवं गाइड की टीम पूरे देश में कोरोना महामारी के दौरान लोगों में जागरूकता लाने एवं अन्य सेवा कार्यों में बढ़-चढ़ कर स्वेच्छा से सेवा कार्य कर रही है ।

किरण रिजिजू
केन्द्रीय युवा एवं खेल मंत्री
भारत सरकार

रक्तदान शिविरों का आयोजन-

सेवा-कार्यों में सबसे महान कार्य रक्तदान का है जो भारत स्काउट/गाइड संस्था के कार्यकर्ता बड़ी ही शिद्दत से करते हैं। इस कार्य में रोवर्स रेंजर्स, यूनिट लीडर्स ने बढ़-चढ़ कर रक्तदान का कार्य किया। जिला फरीदाबाद मे डीओसी सरोज बाला, जिला पलवल में डीओसी स्काउट योगेश सरोत, जिला करनाल में डीओसी स्काउट सियाराम, जिला जींद में राजेश कुमार व जिला रेवाड़ी में प्रदीप कुमार, सरोज वर्मा व अमित कुमार तथा जिला सिरसा में इन्द्रसेन व मंजु बाला की अध्यक्षता में रक्त दान शिविरों का आयोजन किया गया। जिनमें जिलों के अनेक रोवर्स-रेंजर्स ने रक्त दान किया व अपना मानवता धर्म निभाया।

पशुपक्षियों के लिए दाना पानी व चारे की व्यवस्था-

स्काउट केवल मानव-जाति के लिए ही नहीं, पूरी प्रकृति के प्रति प्रेम-भाव रखता है। पेड़-पौधों, जानवरों-पक्षियों की रक्षा व देखभाल भी अपना दायित्व मानता है। गर्मी के मौसम और कोरोना काल में कार्यकर्ताओं ने पक्षियों व जानवरों के लिए दाना-पानी व चारे की व्यवस्था की। स्वयंसेवकों ने पक्षियों के लिए छतों पर व पेड़ों पर पानी रखने का कार्य किया व आस-पास के लोगों को यह कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

कुछ अन्य सेवा कार्य-

वैश्विक महामारी कोरोना के बारे में जागरूकता फैलाना बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य था, जिसमें स्काउट-स्वयंसेवक पूरे मन से लगे रहे।

इन्होंने प्रवासी मजदूरों को रेलवे स्टेशन के अन्दर सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने व उनका सामान उतारने व चढ़वाने के कार्य में मदद की। रात्रि को मजदूरों को शैल्टर होम्स व स्कूलों में रोका गया तो जिला पानीपत, फरीदाबाद के स्वयंसेवकों ने उन्हें मास्क व सेनिटाइजर भेंट करने व खाने की व्यवस्था की। राष्ट्रीय मुख्यालय द्वारा कोविड वारियर्स रजिस्ट्रेशन के लिए जो एप शुरू की गई उसमें राज्य के स्वयंसेवकों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया। 'संकल्प व उड़ान प्रोजेक्ट' में दी गई गतिविधियों में घर पर ही रहकर भाग लिया व अपने टास्क पूरे किए।

लॉकडाउन के दौरान राष्ट्रीय मुख्यालय, द्वारा आयोजित आनॅलाइन सिंगिंग प्रतियोगिता में राज्य की दो रेंजर्स ने सेमीफाइनल तक अपनी प्रतिभागिता दी। विभिन्न जिलों में अनलॉक-वन के बाद स्काउट/रोवर्स ने कानून व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस-प्रशासन की मदद की। जिला पलवल में डीओसी ने जिला शिक्षा कार्यालय में सेनिटाइजर मशीन व मास्क भेंट किए। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कोरोना संकट काल में स्काउट्स-गाइड्स ने जो सेवा-कार्य किए वे अत्यंत श्लाघनीय हैं।

राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट्स)
हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एंड गाइडस
सैक्टर-14, चंडीगढ़

कोरोना और स्कूली शिक्षा

कोरोना की राष्ट्रीय आपदा के दौरान बहुत कुछ बदल गया है। घर की चारदीवारी में कैद रहकर 90 दिन गुजारना, ऐसा अनुभव किसी का भी नहीं था। इस दौरान पूरी समय-सारणी समाप्त हो गई। आज हवा साफ है फिर भी मुँह पर मास्क लगाना पड़ रहा है। हाथ साफ हैं फिर भी किसी से मिला नहीं सकते। घर पर स्वादिष्ट खाना बन रहा है पर किसी को दावत पर बुला नहीं सकते। दोस्तों के लिए समय है पर मिलने नहीं जा सकते। विद्यार्थियों के लिए हर सप्ताह सोमवार आ रहा है पर छुट्टियाँ समाप्त नहीं हो रहीं। दुश्मन चारों ओर है पर दिखाई नहीं दे रहा। ये वह सब है जो पहले नहीं था, यह नया अनुभव है। आज स्कूल बंद हैं पर शिक्षण निरन्तर चल रहा है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने परिवेश में सीख रहा है, माता-पिता तथा अपने घर-परिवार से सीख रहा है। औपचारिक स्कूली शिक्षा बंद है पर समुचित शिक्षा जैसे ज्ञान, कौशल विकास, जारी है, कुछ ऐसे गुणों और कौशलों का विकास हो रहा है जो पहले बच्चे के पास नहीं थे। इस लॉकडाउन ने एक खाई को भरा है और वह है अमीर की शिक्षा और गरीब की शिक्षा वाली खाई।

शिक्षा के क्षेत्र में देखा जाए तो पिछले पच्चीस वर्षों में प्राइवेट स्कूल पनपने लगे। पहले प्राइवेट स्कूल तो थे पर वे सामाजिक, धार्मिक, धर्मार्थ संस्थाओं के थे जिनका उद्देश्य केवल शिक्षा देना था जिसमें लाभ कमाना शामिल नहीं था, परन्तु स्कूल धीरे-धीरे 'नॉट फॉर प्रॉफिट' से बदलकर 'ओनली फॉर प्रॉफिट' हो गए। आज प्राइवेट विद्यालय पूरी तरह बाजार के नियमों पर चलने लगे हैं, जहाँ लाभ-हानि की गणना विद्यार्थी के विकास, गुणवत्ता शिक्षा, संस्कार तथा मानव विकास के मापदंड की अपेक्षा स्कूल भवन का विस्तार, सजावट, वातानुकूलित भवन तथा सालाना टर्नओवर एवं शुद्ध लाभ पर चल रही है। माता-पिता इस मृग मरीचिका में फँसे हैं। समाज में प्रतिष्ठा बनाने के लिए महँगे स्कूल, बड़े स्कूल को ही गुणवत्ता शिक्षा समझ बैठे हैं। चमकदार भवन, डयूल डेस्क, एसी कमरे, कम्प्यूटर, महँगी वर्दी, नमस्ते ठोकता गेटकीपर, पीले रंग की सरपट दौड़ती स्कूल वैन को ही शिक्षा समझ बैठे। घरों से पाँच, दस या बीस किलोमीटर दूर स्थित स्कूलों में पहुँचने के लिए घंटों की यात्रा करते बच्चे, इन बड़े नाम बडे ब्रैंड में भेजकर प्रतिष्ठा का अनुभव कर रहे हैं तथा इनकी कल्पना में 'एप्पल हाई स्कूल', ' सैमसंग मॉडल स्कूल', 'बीएमडब्लयू स्कूल' 'वॉल्वो/पेप्सी/नेस्ले/नाइकी/एडीडास स्कूल', ऐसा दिखाने में लगे हैं। लेकिन कोविड-19 ने सब बदल दिया, आज 'फाइव स्टार' स्कूल भी बन्द हैं, प्राइवेट स्कूल भी बन्द हैं और गाँव का, शहर का सरकारी स्कूल भी बन्द है। जो भी शिक्षा चल रही है वह घर पर ही चल रही है। माता-पिता और परिवार के सदस्य ही अध्यापक हैं, घर ही स्कूल है तथा रसोई, आँगन प्रयोगशाला है। हालांकि परिवेश में उपलब्ध उपकरणों के अनुसार सरकारी और प्राइवेट दोनों प्रकार के स्कूल ऑनलाइन शिक्षा दे रहे हैं। शिक्षक अपनी पूरी ऊर्जा अपने विद्यार्थियों पर लगा रहे हैं, उन्हें हर संभव मदद दे रहे हैं। शिक्षक जो इस प्रकार से शिक्षा देने का अभ्यस्त नहीं था, वह अपने विद्यार्थी से न्याय करने के लिए पहले स्वयं सीख रहा है फिर बच्चे तक पहुँचा रहा है। उसके अपने घर में जो भी उपलब्ध है-मोबाइल, लेपटॉप, जो भी हो- जूम एप्प से, व्हाट्सएप्प से, मेल से वह बच्चों तक पहुँचा रहा है, कोशिश कर रहा है। अब कृष्ण हो या सुदामा उसके संदीपनी तो उस तक पहुँच ही रहे हैं। नौजवान अध्यापकों की बात नहीं है मेरे जैसे उम्रदराज अध्यापक/अध्यापिका अपने बच्चों, पोते-पोतियों से सीख रहे हैं कि कैसे ऑनलाइन प्लेटफार्म से अपने विद्यार्थी तक पहुँचें, ये दिखाता है इस संदीपनी का समर्पण, उसकी अपने पेशे के प्रति ईमानदारी, उसकी निष्ठा और कर्तव्य परायणता।

आज इस त्रासदी में जहाँ डॉक्टर, पुलिस और सफाईकर्मी को कोरोना वॉरियर कहा जा रहा है वहीं इन अध्यापकों को भी प्रणाम और नमन करने की जरूरत है जो देश की 25 प्रतिशत आबादी अर्थात् 33 करोड़ विद्यार्थियों को सँभाल रहे हैं, उनके साथ समन्वय करके पठन-पाठन करवा रहे हैं, देश के इन सवा करोड़

अध्यापकों का बहुत-बहुत आभार।

इस कोरोना वायरस ने एक बात को सिद्ध कर दिया कि स्कूल भवन ही शिक्षा नहीं है, अध्यापक ही शिक्षा है। देश-प्रदेश में स्कूलों की फीस को लेकर झगड़े चल रहे हैं। प्राइवेट स्कूल कह रहा है कि माता-पिता स्कूल की फीस नहीं दे रहे हैं। माता-पिता का अपना तर्क है, बन्द पड़े स्कूल के बाकी खर्च हम क्यों दें, हमारे तक तो अध्यापक पहुँच रहा है, हम तो केवल मासिक ट्यूशन फीस ही देंगे। स्कूल के अपने तर्क हैं और हर रोज सैकड़ों विवाद सरकार के पास आ रहे हैं/कोर्ट में पहुँच रहे हैं। वैसे तो पूरा मामला सेवा प्रदाता और ग्राहक के मध्य का है और ये मामले उपभोक्ता अदालतों में जाने चाहिए। प्राइवेट स्कूल एक लाभ कमाने वाली संस्था है, यह सबको मालूम है, अब वह अपनी मर्जी की फीस लेगा और आपकी पसंद की सेवा देगा, हाँ अगर सेवा समुचित नहीं है तो आप शिकायत कर सकते हैं। अब दुकानदार और ग्राहक के झगड़े में सरकार को शामिल किया जा रहा है।

सरकार द्वारा प्रत्येक गाँव और वार्ड में स्कूल बनाए हुए हैं। राज्य के 50 प्रतिशत के आसपास बच्चे इन 14,500 स्कूलों में पढ़ते हैं। गुणवत्ता शिक्षा के मामले में ये सरकारी स्कूल कहीं भी कम नहीं है। पिछले अनेक वर्षों से 10+2 का बोर्ड का परिणाम परिणाम प्राइवेट से अधिक रहता है वो भी 10 प्रतिशत से अधिक। सुपर 100 के परिणाम देखें तो राज्य का फाइव स्टार प्राइवेट स्कूल भी आस-पास नहीं फटकता। खेलों के मामले में, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मामले में यहाँ तक कि 26 जनवरी और 15 अगस्त के जिला स्तरीय कार्यक्रमों तक हर जगह सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी आगे रहते हैं। इनके अध्यापक जनगणना से लेकर बीएलओ और चुनाव ड्यूटी तक सब जगह आगे रहते हैं। कोरोना के दौरान यदि सरकारी अध्यापकों की भूमिका देखी जाए तो कोरोना योद्धा से कम नहीं है। फिर भी सरकारी स्कूल सीना तानकर खड़ा है, शानदार शिक्षा दे रहा है तथा पढ़ाई की पूरी व्यवस्था निःशुल्क उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में सरकार प्राइवेट स्कूल में अपनी इच्छा और हैसियत के आधार पर दाखिला लेने वाले को क्या मदद दे। यदि सरकारी व्यवस्था न हो तो मदद की जा सकती है। जब सरकार का विकल्प उपलब्ध है और अच्छे से कार्य कर रहा है तो सरकार से बार-बार मदद की गुहार समझ से परे है। प्राइवेट स्कूलों द्वारा इस त्रासदी का आकलन तुरन्त कर लिया गया और जब उन्हें लगा कि लॉकडाउन लम्बा चलने वाला है तो उनके द्वारा ऑनलाइन शिक्षा आरम्भ कर दी गई जबकि उसका अध्यापक इसके लिए तैयार नहीं था, माता-पिता और विद्यार्थी भी तैयार नहीं थे, उसके पास साजो-सामान भी नहीं था, फिर भी शिक्षा आरम्भ कर दी गई। उन्हें मालूम था कि स्कूल बंद होने के कारण विद्यार्थियों की फीस नहीं मिल पाएगी। अप्रैल का महीना तो वैसे भी पूरे वर्ष में सबसे महत्त्वपूर्ण है जिसमें शिक्षा के अलावा सब कुछ बिकता है जैसे स्कूल भवन की चमक, खेल का मैदान, पुस्तकालय, ऑडिटोरियम, स्कूल बस, कापी-किताब, स्टेशनरी, कम्प्यूटर, वर्दी, जूते-जुराब, टाई-बैल्ट, ज्योमैट्री बॉक्स, स्कूल बैग, पानी की बोतल, छतरी और न जाने क्या क्या। इस सब सामान से जो पैसा इकट्ठा होता है उससे एक नया भवन बनता है। वर्तमान में पढ़ रहे बच्चों से बिल्डिंग फंड लेकर नये भवन बनते हैं ताकि नई कक्षाओं में और बच्चे आ सकें। इस तरह एक स्कूल से दूसरा, दूसरे से तीसरा, फिर एक 'चैन ऑफ स्कूल्स' बनती है। अब लॉकडाउन में बच्चों के दाखिले का दबाव बनाया गया, फीस देने का दबाव बनाया गया। जिन माता-पिता ने असमर्थता प्रकट की तो उनके बच्चे को ऑनलाइन शिक्षा से वंचित किया गया। माता-पिता द्वारा सरकार से गुहार लगाई गई कि हमें बचाया जाए, सरकार ने कहा तीन महीने की फीस नहीं लेंगे केवल ट्यूशन फीस लेंगे, केवल एनसीईआरटी की पुस्तकें लगाएँगे, वर्दी में बदलाव नहीं होगा आदि। प्राइवेट स्कूल ने कहा यदि हम कुछ भी नहीं लेंगे तो अध्यापकों को वेतन कहाँ से देंगे। अब विडम्बना देखिए स्कूल बंद हैं, बसें बंद हैं, पानी, बिजली का खर्च नहीं है, साफ-सफाई का खर्च नहीं है, फिर भी फीस बढ़ा दी गई और जिसके दम पर सब चल रहा है उस अध्यापक का वेतन आधा कर दिया गया है। वाह रे बाजार! वाह तेरे नियम! जिन अध्यापकों द्वारा कोविड-19 में पूरी शिक्षा चलाई जा रही है, उन्हीं अध्यापकों को दुःखी किया जा रहा है, नौकरी से निकाला जा रहा है, जो अध्यापक ऑनलाइन पढ़ाने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं उन्हें बाहर का रास्ता दिखाया जा रहा या आधा वेतन दिया जा रहा है, अन्य खर्चों के नाम पर कटौती की जा रही है। अध्यापक तो पहले से ज्यादा मेहनत कर रहे हैं, उसे ऑनलाइन पढ़ाई करवाने के लिए गैर परम्परागत तरीके से तैयारी करनी पड़ रही है। फिर उसे आधा वेतन क्यों दिया जा रहा है?

चमकता हुआ स्कूल-भवन शिक्षा की गारंटी नहीं है, एसी भवन वाले फाइव स्टार स्कूल में और सरकारी स्कूल में पढ़ाने का अन्तर बिल्कुल वैसा ही है जैसा एक ढाबे में और रेस्टोरेंट में होता है। जब हमें भूख लगी है तो हमें चाहिए वह स्वादिष्ट भोजन जो हमें ऊर्जा और पोषण दे। यहाँ पर प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस, कैलोरी, मिनरल, विटामिन महत्त्वपूर्ण है, स्वाद और सेहत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ पर रेस्टोरेंट का एम्बीयंस संगीत, बढ़िया आरामदायक कुर्सियाँ, सजे-धजे वेटर, इनकी कोई भूमिका नहीं। हम रेस्टोरेंट हर रोज नहीं जाते, यह तो कभी-कभार के लिए है, उसी प्रकार फाइव स्टार स्कूल भवन के एसी कमरे, एसी बसे, शानदार डेस्क, चमकदार फर्श, अंग्रेजी बोलती रिशेप्शनिस्ट, महँगे फूलों वाले गमले महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, वहाँ जरूरी है अध्यापक, समर्पित अध्यापक जो बाल मनोविज्ञान तथा शिक्षण शास्त्र में पारंगत हो तथा ज्ञान, शिक्षा एवं कौशल प्रदान करता हो। अब कोई कहे कि मुझे रेस्टोरेंट में खाना खाने के पैसे न देने की छूट हो या रेस्टोरेंट वाला खाने के पैसे न माँगे और सरकार ये पैसे माफ कर दे, ये तर्क समझ से परे है। भाई पिज्जा आर्डर किया है और होम डिलीवरी ली है तो पैसे देने ही होंगे। सरकारी और प्राइवेट फाइव स्टार स्कूल के अन्तर को कुछ यूँ समझें कि जैसे एक ही फ्लाइट में कुछ लोग बिजनेस क्लास में सफर करते हैं तथा कुछ लोग इकोनोमी क्लास में, जबकि दोनों को जाना एक ही स्थान पर है, समय भी एक समान लगेगा, एयरपोर्ट भी एक ही है और जहाज उड़ाने वाला पायलट भी एक ही। अब ऐसा नहीं है कि बिजनेस क्लास वाले दिल्ली

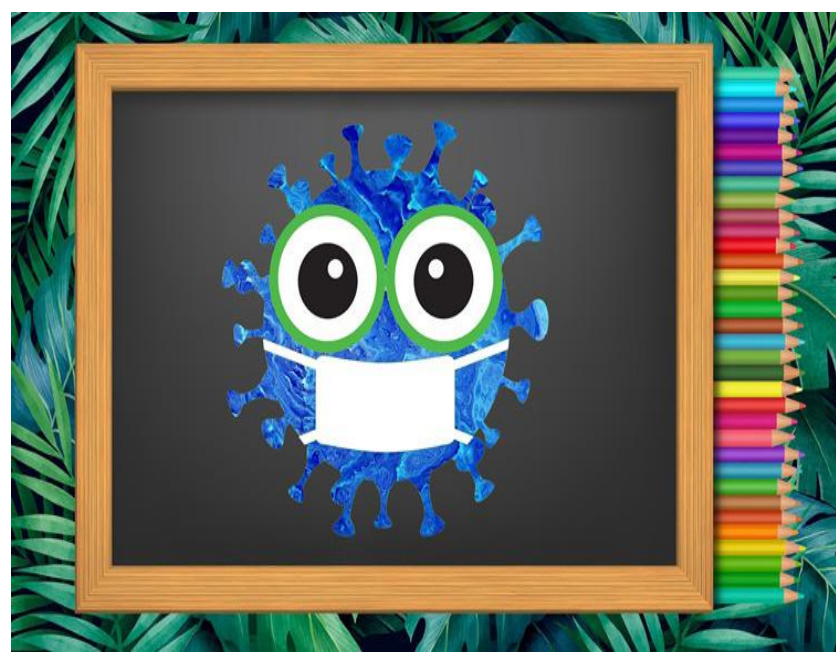

से मुम्बई एक घंटे में पहुँचेगे और इकोनोमी क्लास वाले दो घंटे में। बिल्कुल वैसे ही जैसे सरकारी और प्राइवेट दोनों स्कूलों का राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 के आधार पर ही पाठ्यक्रम बना है, परीक्षा लेने वाला बोर्ड भी एक ही है, शैक्षणिक वर्ष भी 12 महीने का है, अंतर है तो बस भवन का ताम-झाम का। अब कोई यह कहे कि मैं बिजनेस क्लास में सफर करूँगा और सरकार उससे इकोनोमी क्लास के पैसे लेने के लिए एयरलाइन पर दबाव डाले, यह संभव नहीं है। जो सुविधा ली है पैसे तो उसी के देने पड़ेंगे। साधारण बस की टिकट से वोल्वो में यात्रा संभव नहीं है। वोल्वो में जाना है तो उसका किराया ही देना पड़ेगा, अगर नहीं दे सकते तो साधारण बस में आओ। ये भी उतना ही समय लेगी। इसके ड्राइवर, कंडक्टर भी वही हैं, सड़क भी वही है, टोल पर भी उतना ही समय लेगी और ये भी आपको उतने ही समय में आपके गन्तव्य पर पहुँचाएगी। इस अन्तर को समझना होगा, इसका पुनः अवलोकन करना होगा। बड़ा स्कूल भवन, फाइव स्टार एसी भवन, एसी बसें, चमकते फर्श, चमकती दीवारें, महँगें फूलों वाले गमले, फव्वारे, कैन्टीन, ऑडिटोरियम आदि गुणवत्ता शिक्षा की गारंटी नहीं है। ये सब ढाँचागत सुविधाएँ शिक्षा को महँगी तो कर सकती हैं, परन्तु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी तो केवल अध्यापक हैं, इसके अतिरिक्त कोई नहीं। आज ऑनलाइन का बाजार गर्म है। तकनीक से शिक्षा देने का प्रयास हो रहा है, ये सही है पर क्या तकनीक अध्यापक का स्थान ले सकती है? जी नहीं। ये तो अध्यापक के लिए एक सहायक सामग्री से ज्यादा कुछ भी नहीं है।

ढाँचागत आधार पर सरकार के स्कूलों को अकसर दोयम दर्जे का समझा जाता है क्योंकि इसमें से अधिकतर में फाइव स्टार जैसा तामझाम नहीं होता क्योंकि सरकार को शिक्षा शास्त्र का ज्ञान है तभी स्कूलों में ढाँचागत तामझाम की अपेक्षा शिक्षण अधिगम, पाठ्यचर्या, सतत एवं समग्र मूल्यांकन, अध्यापक प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है जो चहुँमुखी विकास की नींव रखते हैं। सरकार को पता है कि भवन शिक्षा नहीं है और कोविड-19 ने यह सिद्ध भी कर दिया है। आज बड़े-बड़े स्कूल भवन बन्द पड़े हैं। पीली बसों के पहिये जाम हैं, कैन्टीन बन्द हैं, चमकते फर्श धुँधले हो गए हैं और अंग्रेजी बोलती रिसेप्शनिस्ट चुप है पर शिक्षा तो चल रही है, पठन-पाठन तो चल रहा है और जब तक शिष्य और अध्यापक हैं, ये चलती रहेगी। इसे कोई नहीं रोक सकता। जब तक सीखने वाले की इच्छा तीव्र है, सिखाने वाले का समर्पण तीव्र है तो शिक्षण चलेगा। विडम्बना देखिए आज सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की चिन्ता उसके अध्यापक को है, उसकी पुस्तकों की चिन्ता, उसके दाखिले की चिन्ता, उसके पठन-पाठन की, उसके पोषण(मिड-डे-मील) की, यहाँ तक की उसकी स्टेशनरी तथा वर्दी आदि की चिन्ता भी अध्यापक को है, जबकि प्राइवेट स्कूल के छात्र की चिन्ता उसके माता-पिता को करनी पड़ रही है। सरकार के प्रयासों से सरकारी और प्राइवेट का पठन-पाठन एक साथ चल रहा है। सरकार द्वारा 52 लाख बच्चों (सरकारी और प्राइवेट दोनों) के लिए एजुसैट का प्रबन्ध किया गया। जहाँ प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता पर नई पुस्तकें खरीदने का दबाव बनाया जा रहा है जबकि सरकारी स्कूलों के अध्यापकों ने अप्रैल महीने में ही पारस्परिक आदान-प्रदान से पुस्तकों की व्यवस्था कर दी। राज्य का शिक्षा विभाग बधाई का पात्र है तथा स्कूल शिक्षा विभाग के नेतृत्व का यह फैसला अति सराहनीय है और यशस्वी मुख्यमंत्री महोदय द्वारा पुस्तकों के आदान-प्रदान में सहायता करने वाले अध्यापकों से फोन पर बात करके उनका उत्साहवर्धन किया गया जिसने इस पूरी योजना में जान डाल दी। आज 7 लाख विद्यार्थियों को, इस सामाजिक सहयोग से चली योजना का लाभ मिला है और इसके बाद राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा व्यक्तिगत रुचि लेकर बन्द फैक्ट्री खुलवाकर पुस्तकें छपवाई गईं तथा विद्यार्थियों तक पहुँचाई गईं। अब अन्तर साफ नजर आता है। लोगों को शिक्षा, शिक्षण, गुणवत्ता शिक्षा तथा भवन एवं तामझाम में अन्तर समझने की जरूरत है। दुनिया के विकसित देशों में शिक्षा के केन्द्र सरकारी विद्यालय ही हैं। भारत में उच्च शिक्षा के केन्द्र आईआईटी, आईआईएम, एआईआईएमएस सब सरकारी हैं। जो चीज सरकारी है वह बहुत ज्यादा असरकारी है, यह समझने की जरूरत है। जिनकी हैसियत बिजनेस क्लास में सफर करने की है वे करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे लेकिन इकॉनॉमी क्लास वाले लोग दिखावे के लिए महँगी टिकट न खरीदें। प्रतिदिन रेस्टोरेंट में खाने से स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता, यह भी सत्य है।

अतः वास्तविकता को पहचानें, गुणवत्ता शिक्षा का एक ही आधार है और वह है शिक्षाशास्त्र का ज्ञाता अध्यापक, इसके अतिरिक्त कोई नहीं। हरियाणा सुपर-100 के बच्चों ने एक अध्यापक के दम पर ही वह चमत्कार कर दिखाया है जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। बड़े-बड़े नामी-गिरामी कोचिंग सैंटरों को चुनौती दी है। किसके बलबूते पर? केवल एक अध्यापक के दम पर। आइये, अध्यापकों की क्षमता को पहचानें और इस कोविड-19 की त्रासदी से सबक लें।

प्रमोद कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

रागिनी

इस्सी बीमारी आई

सदी 21वीं में लोगो, एक इस्सी बीमारी आई
ध्यान लगाके सुनते जाइयो, दुनिया के सब लोग-लुगाई।

देश चीन ते पैदा होग्या, दुनिया के में गया सुना,
कई देशाँ में फैल गया, मकड़ी जैसा जाल बुना।
मंत्री-संतरी सब माथा पीटें, विपदा का छाया कोहरा घना,
अचंभित रह गये सारे, सोचण लाग्या जणा-जणा।
माथा-पच्ची करण लाग्ये, नहीं बात समझ मैं आई,
ध्यान लगाके सुनते जाइयो, दुनिया के सब लोग-लुगाई।

जब-जब प्रकृति विरुद्ध चाले, उसने इसा नजारा दिखा दिया,
अमरीका, इटली, रूस, फ्रांस का भी ध्यान ठिकाने लगा दिया।
वो धन-बल की गफलत में रहै थे, याद ईश्वर दिला दिया,
बिन मिसाइल और बिन तोप के, एक बड़ा झटका दिखा दिया।
फेर भारत अर पाकिस्तान में भी उसने अपनी पैठ जमाई,
ध्यान लगाके सुनते जाइयो दुनिया के सब लोग-लुगाई।

फेर लॉकडाउन और कर्फ्यू लागे, तंग होगे थे लोग-लुगाई,
सड़काँ पे फिरते देखे, भूखे रोते देखे बहन और भाई।
कारोबार सब खत्म हुए, खाली बैठे धोबी और नाई,
बेरोजगार हुए मजदूर, बेरोजगारी चरम पै छाई।
अर्थव्यवस्था के भी धक्का लाग्या, ना या बात समझ मैं आई।
ध्यान लगाके सुनते जाइयो,दुनिया के सब लोग-लुगाई।

सुबह उठके सैर करो, पैंतालीस मिनट नित करो व्यायाम,
शरीर मन में उमंग छावै, सिद्ध हो जावेंगे सारे काम।
तुलसी-गिलोए का तुम काढ़ा पियो, आयुर्वेद का है वरदान,
71वें पेज पै 31वाँ श्लोक, जिसके लेख में है व्याख्यान।
एक योग गुरु ने भी एक दवा बनाई, वा नहीं समझ मैं आई,
ध्यान लगाके सुनते जाइयो, दुनिया के सब लोग-लुगाई।

अधीक्षक के पद पे करै नौकरी, फेर कविताई का शौक चढ़ा,
खत-खांड का भाव पिछानले, क्यूँ मूरख बणके होया खड़ा।
हाथ जोड़ के वो बात बतावें, छोटा हो चाहे घणा बड़ा,
'अक्षय' भी रहया ज्ञान सीख, वो हाथ जोड़ के होया खड़ा,
'रामनिवास' तेरी कविताई, सब जग के मन को भाई,
ध्यान लगाके सुनते जाइयो, दुनिया के सब लोग-लुगाई।

रामनिवास, अधीक्षक
निदेशालय मौलिक शिक्षा हरियाणा, पंचकूला

शिक्षा, संस्कार व संस्कृति

की महक फैलाता काबड़ी का सरकारी स्कूल

बोधराज सैन श्योराण

'नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है। मन का विश्वास रगों में साहस भरता है, चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना, न अखरता है। आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।' सोहनलाल द्विवेदी द्वारा लिखित इस कविता को चरितार्थ करते हुए धीरे-धीरे सफलता के पायदान पर चढ़ते हुए आज यदि शीर्ष के कुछ चुनिंदा सरकारी स्कूलों की बात करें, जिन पर न केवल शिक्षा विभाग बल्कि शिक्षार्थियों, अभिभावकों, समाज को भी गर्व हो और जहन में एक नाम आता है- राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय काबड़ी। विशेष रूप से जब से इस विद्यालय की बागडोर प्रधानाचार्य रणबीर सिंह जागलान के मजबूत हाथों में आई, तब से तो इस विद्यालय की तरक्की और सफलताओं को मानो पंख ही लग गए और उन पंखों को उड़ान देने का भरपूर योगदान जाता है प्रधानाचार्य जी के मजबूत व करिश्माई नेतृत्व के साथ साथ बहुत ही कुशल, अनुभवी, मेहनती, कर्मठता के धनी स्टाफ सदस्यों को, जिनके सहयोग व मेहनत के कारण न केवल शैक्षणिक बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक आदि पक्षों का भी भरपूर विकास हो रहा है।

इन सब सामूहिक प्रयासों का परिणाम यह रहा कि इस वर्ष 2019-20 की मुख्यमंत्री सौंदर्यकरण प्रतियोगिता में इस राजकीय स्कूल ने खंड स्तर के साथ-साथ ज़िला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर एक मिसाल पेश कर दी है, जिसके लिए प्रधानाचार्य श्री रणबीर सिंह जागलान को गणतंत्र दिवस पर आयोजित ज़िला स्तरीय समारोह में महिला एवं बाल विकास मंत्री कमलेश ढांडा ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

1. विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारता विद्यालय का मंच-

स्टेज एक ऐसा स्थान है जहाँ से विद्यालय की पूरे दिन की ऊर्जादायक गतिविधियों की शुरुआत होती है। विद्यालय में आकर्षक मंच है, जिसके चारों और स्टील की ग्रिल इसकी सुंदरता को बढ़ाती है। मंच से ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने में मदद मिलती

है। शायद ही ऐसी स्टेज पूरे पानीपत ज़िले के किसी विद्यालय में हो। संपूर्ण विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों को चार सदनों अर्थात् समूहों में बाँटा गया है। प्रातः विद्यालय के आरंभ से लेकर छुट्टी तक क्रमवार रूप से हाउस समूह अपनी ड्यूटी पर रहता है, जिसमें प्रातः कालीन सभा, मंच-संचालन, प्रार्थना-सभा, अनुशासन, आज का विचार, भाषण-प्रतियोगिता, समाचार-वाचन, प्रश्नोत्तरी, विद्यार्थियों का जन्मदिन मनाना आदि गतिविधियों को प्रतिस्पर्धा के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इस कार्य में विद्यालय का हर सदस्य बहुत ही ईमानदारी, निष्ठा व समर्पण से कार्य करता है। जब 2017 में इस विद्यालय का कार्यभार प्रधानाचार्य रणबीर सिंह जागलान ने सँभाला, तभी से इस विद्यालय के दिन बदलने लगे। सभी स्टाफ सदस्यों को एक माला में मोती की तरह पिरोकर, पूर्ण योजना बनाकर कार्य की शुरूआत की, जिसके परिणाम आज हम सभी के सामने हैं।

2. परीक्षा-परिणाम एक दृष्टि में-

बोर्ड परीक्षा परिणाम की दृष्टि से भी विद्यालय का प्रदर्शन अन्य सरकारी विद्यालयों के लिए अनुकरणीय रहा है। सत्र 2017-18 में कक्षा दसवीं के 3 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची व 55 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की। कक्षा बारहवीं के 3 विद्यार्थियों ने मेरिट व 30 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की। सत्र 2018-19 में भी विद्यालय ने कक्षा दसवीं में बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन दोहराते हुए 8 मेरिट के साथ 52 प्रथम श्रेणी व 12वीं की परीक्षा में 7 मेरिट के साथ 29 बच्चों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की। इस प्रकार से विद्यालय गुणात्मक व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अग्रसर है।

3. पाठ्य सहगामी गतिविधियों में उपलब्धियों की खान-

पाठ्य सहगामी गतिविधियों में विद्यालय का प्रदर्शन पानीपत जिले ही नहीं अपितु संपूर्ण हरियाणा में अपना विशेष स्थान प्राप्त करने में सफल रहा है। युवा संसद महोत्सव 2019-20 में प्रवक्ता राजनीति शास्त्र श्री संदीप के निर्देशन में विद्यालय के विद्यार्थियों ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान व डिवीजन लेवल पर द्वितीय स्थान प्राप्त कर संपूर्ण प्रदेश में विद्यालय के गौरव में श्रीवृद्धि की है। एससीईआरटी गुरुग्राम में आयोजित 47वीं जवाहरलाल नेहरू विज्ञान प्रदर्शनी 2019-20 जिसका विषय 'सतत विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' था। इसके अंतर्गत उपविषय 'भविष्य की यातायात एवं संचार' में विद्यालय के छात्र अमित सुपुत्र फूल सिंह, कक्षा बारहवीं (विज्ञान) ने अध्यापक श्री अश्विनी के निर्देशन में मल्टी स्पेशलिटी वाहन प्रोजेक्ट प्रस्तुत कर पूरे हरियाणा प्रदेश में तृतीय स्थान प्राप्त कर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय काबड़ी(पानीपत) को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी विद्यालयों की श्रेणी में सूचीबद्ध कर दिया है।

4. खेल के क्षेत्र में झंडे बुलंद करते बच्चे-

खेल के क्षेत्र में पायल पुत्री सुरेंद्र सिंह ने बॉक्सिंग में जिला स्तर पर, अमित पुत्र श्री सतबीर ने जिला स्तर पर, सोनू सुपुत्री भगत राम ने खंड स्तर पर स्थान अर्जित किया है। अन्य छात्र सोनू सुपुत्र रामकुमार ने कुश्ती में राज्य स्तर पर प्रतिभागिता करके विद्यालय का नाम रोशन किया है।

5. एनएमएमएस-नेशनल मेरिट कम मीन्स स्कॉलरशिप-

विद्यालय के छात्र सन्नी सुपुत्र रमेश, आशु सुपुत्री आजाद सिंह, प्रकाश महतो सुपुत्र श्री त्रिलोक महतो, विजय पाल शर्मा सुपुत्र श्री जयपाल शर्मा, आर्यन सुपुत्र श्री प्रवीण ने एनएमएमएस छात्रवृत्ति परीक्षा में सफलता प्राप्त करके विद्यालय को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान की है। कर्ण सुपुत्र श्री सुनील कुमार, खुशी सुपुत्री श्री रवि कुमार का चयन एनटीएसई की तैयारी के लिए विद्यालय से हुआ है जोकि विद्यालय के शैक्षणिक माहौल की सकारात्मकता को बखूबी दर्शाती है। विद्यालय को अपने इन चमकते सितारों पर गर्व है।

6. विद्यालय का जल संग्रहण केंद्र बना मिसाल-

विद्यालय का जल संग्रहण केंद्र प्रदेश के सरकारी विद्यालयों के साथ-साथ निजी विद्यालयों के लिए भी एक नजीर बन गया है, जिसमें वर्षा के जल का संग्रहण करके वाटर लिफ्टिंग सिस्टम द्वारा विद्यालय के हर्बल पार्क, व इको वाटिका में प्रयोग लाया जाता है। वर्षा के जल संरक्षण एवं उपयोग की जो विधि विद्यालय द्वारा प्रयोग में लाई जा रही है, वह प्रदेश के अन्य विद्यालयों के लिए आज अनुकरणीय बन गई है। विद्यालय की अपनी एक इको वाटिका है जिसमें 300 से ज्यादा रंग-बिरंगे फूलों के गमले हैं।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय काबड़ी प्रदेश के ऐसे चुनिंदा विद्यालयों में से है, जिसकी अपनी हर्बल वाटिका है, जिसमें विभिन्न प्रकार की हर्बल बूटियाँ जैसे राम तुलसी, श्याम तुलसी,

गिलोय, एलोवेरा, ग्रीन टी, लेमनग्रास, मरवाँ आदि विद्यमान हैं। विद्यालय की हर्बल वाटिका भी विद्यालय की श्रीवृद्धि में चार चाँद लगाने का कार्य कर रही है।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की एक और विशेषता यह है कि विद्यालय के एकांत छोर पर गीले कूड़े व हरे पत्रों का निस्तारण केंद्र है। जिसमें जैविक खाद बनाया जाता है तथा उसका प्रयोग हर्बल वाटिका व इको वाटिका के फूलों के उन्नयन में किया जाता है।

7. पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों पर एक नजर-

इसके अलावा पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियों जैसे संगीत, वाद-विवाद प्रतियोगिता, चित्रकला कहानी, निबंध लेखन, लोकनृत्य ,फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, होली व दीपावली त्योहार मनाना सामाजिक बुराइयों के प्रति विद्यार्थियों के साथ-साथ जन-मन को जागृत करने वाले नाटकों का भी समय-समय पर विद्यालय में मंचन होता रहा है, जिससे विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रदर्शन व प्रभाव बहुत ही प्रशंसनीय रहा है। खंड स्तर पर गीता महोत्सव की सफल मेजबानी करके विद्यालय भविष्य की असीम संभावनाओं का परिचय दे चुका है।

8. सोलर पैनल, एनएसक्यूएफ लैब -

विद्यालय की एक विशेषता यह भी है कि विद्यार्थियों के पीने के लिए तीन प्रकार के पानी- सादा जल, शीतल जल एवं आरओ वाटर की व्यवस्था की गई है। विद्यालय में पाँच किलोवाट के दो सोलर पैनल के साथ 24 घंटे बिजली की व्यवस्था की गई है ताकि अध्ययन-अध्यापन अबाध गति से चलता रहे। विद्यालय का शांत एवं ज्ञान का भंडार पुस्तकालय विद्यालय के जिज्ञासु विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की ज्ञान-क्षुधा शांत करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। इसके साथ ही साथ जीव-विज्ञान रसायन-विज्ञान एवं भौतिक-विज्ञान की प्रयोगशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान के नए-नए प्रयोगों एवं अभिक्रिया से परिचित करवाया जाता है जिससे विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य की अपार संभावनाओं को नया बल मिलता है। कंप्यूटर शिक्षा के महत्त्व को आत्मसात् करते हुए

विद्यालय में कंप्यूटर लैब के माध्यम से विद्यार्थियों को कंप्यूटर शिक्षा दी जाती है। विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाकर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को साकार करने का भी कार्य किया जाता है। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय काबड़ी की एक विशिष्टता और भी है जो इसे अन्य विद्यालयों से अलग पंक्ति में खड़ा करती है, वह है- स्मार्ट क्लास-रूम की स्थापना। साथ ही साथ पूरे विद्यालय को कैमरों के माध्यम से 24 घंटे तीसरी आँख की नजर से देखा जाता है, ताकि किसी भी प्रकार की अनहोनी घटना से बचा जा सके

यदि विद्यालय में मध्याह्न भोजन को पकाने के लिए इसकी आधुनिक रसोई की बात न की जाए तो शायद यह विद्यालय की विशेषताओं को बताने में कुछ कमी होगी। इसमें आधुनिक रसोई बनाई गई है, जिसमें क्रमवार 16 प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं। खाने की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाता है।

9. विद्यालय का विद्यार्थी भारतीय राजस्व सेवा में-

विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करके आज अनेक विद्यार्थी अनेक प्रशासनिक एवं अन्य पदों पर देश की सेवा कर रहे हैं। विद्यालय के विद्यार्थी शिक्षा, वाणिज्य, कृषि, समाज-सेवा में विद्यालय द्वारा दिए गए संस्कार एवं ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। विद्यालय के एक मेधावी छात्र महावीर का चयन भारतीय राजस्व सेवा में हुआ, जो विद्यालय की भी एक उपलब्धि कही जा सकती है। छात्र महावीर अपने विद्यालय एवं गुरुजन के प्रति भाव व्यक्त करते हुए कहता है- मैं अपने विद्यालय के शिक्षकों को नमन करता हूँ। जब भी अवसर मिलता है, अपने गुरुजनों से मिलता हूँ। अपने विद्यालय एवं गुरुजनों के प्रति मेरे मन में अपार सम्मान की भावना है।

10. दानी सज्जनों का समय समय पर अमूल्य सहयोग-

विद्यालय को विशिष्ट पहचान बनाने में दानी सज्जनों का काफी योगदान रहा है। दानी सज्जनों की सूची काफी लंबी है। उनमें से कुछ नाम हैं- श्री सेवाराम बंसल, श्री अनिल बंसल, श्री हरीश बंसल, श्री प्रीतम चौहान एवं गाँव की मुखिया श्रीमती अमृता रावत व चेयरमैन श्री प्रदीप चौहान । इन्होंने समय-समय पर कमरे बनवाने, गमले इत्यादि दान देकर विद्यालय की शुभश्री बढ़ाने का कार्य किया है।

जेबीटी अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
वार्ड-10 पानीपत, हरियाणा

शिक्षक, जो बने कोरोना योद्धा

कोरोना के परिणामस्वरूप उपजी स्थितियों में भी प्रदेश के शिक्षकों ने सराहनीय कार्य किए हैं, जिन्हें विस्तार से गतांक में स्थान दिया गया था। उसी कड़ी में प्रस्तुत हैं कुछ अन्य शिक्षकों के प्रयास-

राजकीय प्राथमिक पाठशाला, वार्ड-10 पानीपत में कार्यरत जेबीटी अध्यापक बोधराज ने माननीय मुख्यमंत्री जी की पहल 'स्टे एट होम, स्टडी एट होम, स्कूल एट होम' व शिक्षा विभाग के 'घर से पढ़ाओ अभियान' को सार्थकता देने के लिए बखूबी कार्य किया। इन्होंने विभिन्न प्रकार की टीएलएम बनाकर बच्चों के साथ साँझा की। बच्चों को कोरोना के प्रति जागरूकता के लिए 'कोरोना हराओ सीढ़ी' नामक खेल भी ईजाद किया जिसमें खेल-खेल में बच्चा स्वच्छता को अपने जीवन का अंग बना लेता है। पाठ्यपुस्तकों की कमी को पूरा करने के लिए विद्यालय के बच्चों को उनके अभिभावकों की मदद से निदेशालय के द्वारा चलाई गई मुहिम पाठ्य-पुस्तकों का आदान-प्रदान करवाने में भी शिक्षक ने अहम रोल अदा किया ताकि किसी भी बच्चे की पाठ्य पुस्तकों की कमी के कारण पढ़ाई बाधित न हो। मिड-डे-मील वितरण भी घर-घर जाकर करने में इस शिक्षक का बहुत योगदान रहा। नए दाखिला अभियान को भी पंख देने का कार्य शिक्षक ने किया। उसी के अंतर्गत नामांकन अभियान की गति को बढ़ाते हुए घर-घर जाकर 30 से भी अधिक दाखिले करके दाखिला अभियान को भी गति देने का प्रयास अध्यापक द्वारा किया गया। साथ ही साथ व्हाट्सएप व एसएमएस व व्यक्तिगत रूप से संपर्क करके बच्चों से लगातार जुड़े रहे। वीडियो बनाकर ई-लर्निंग का कार्य भी अच्छी प्रकार से किया है। जिसके लिए खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा इनको 'स्टार टीचर ऑफ द वीक' सम्मान से सम्मानित किया गया। अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई के लिए जागरूक करने के लिए घर-घर जाकर न केवल मूल्यांकन कार्य किया बल्कि कोरोना महामारी से बचाव के लिए अपनी तरफ से कपड़े के बने मास्क भी वितरित किए। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण कर बच्चों को पक्षियों को पानी रखने के लिए सकोरे और औषधीय पौधे वितरित किए जो कि बच्चों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने और भविष्य के लिए पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने में अहम रोल अदा करेंगे। माननीय मुख्यमंत्री जी के आह्वान पर स्वेच्छा से 10% वेतन कोरोना रिलीफ फण्ड में सहयोग के रूप में दिया। साथ ही 20 जून को ही रेडक्रॉस ब्लड बैंक, पानीपत में रक्तदान शिविर आयोजित कर 37 यूनिट रक्त इकट्ठा किया।

जिला महेंद्रगढ़ के राजकीय माध्यमिक विद्यालय डेरोली अहीर में एसएस अध्यापक के रूप में कार्यरत भूप सिंह भारती ने कोरोना काल में कोरोना से लड़ने वाले योद्धाओं को सम्मान देने के लिये और उनकी यशोगाथा लोगों तक पहुँचाने के लिये केवल काव्य-कला का ही नहीं, बल्कि चित्रकला का भी सहारा लिया। चिकित्सकों, पुलिस और सफाई कर्मचारियों द्वारा इस महामारी के दौरान दिन-रात की गई सेवा को सलाम करने के लिये प्रतीकात्मक अशोक स्तम्भ का चित्र बनाया, जिसमें बीच में डॉक्टर, दाएँ-बाएँ पुलिस और सफाई कर्मचारी को चित्रित किया। इसी प्रकार अपने एक अन्य चित्र में महिला डॉक्टर को कोरोना वायरस से युद्ध करते हुए दर्शाया। लॉकडॉउन के दौरान सबसे सुरक्षित अपना घर है, बाहर कोरोना है, इसे एक चित्र के द्वारा बनाकर लोगों को 'घर में रहें, सुरक्षित रहें' का सन्देश दिया। काव्य लेखन और चित्रांकन के द्वारा कोरोना के प्रति जागरूकता फैलाने के कारण इन्हें 'जागो हुक्मरान' अखबार समूह ने 'जन-प्रहरी अवार्ड' से सम्मानित किया। लॉकडॉउन के दौरान कुछ नारों को भी चित्रों के माध्यम से दर्शाया। इन्होंने 'मेरा मकान, किला महान' और 'सुणलो काकी, ताई अंगूरी, मास्क लगाणा घणा जरूरी' आदि नारों से भी जागरूकता फैलाने का सार्थक प्रयास किया। 'अग्रसर हिंदी साहित्य मंच' द्वारा मास्क पर राष्ट्रीय स्तर पर हुई नारा लेखन प्रतियोगिता में इनका यह नारा सर्वश्रेष्ठ रहा और अग्रसर मंच के संस्थापक ने इन्हें इसके लिए पुरस्कृत किया।

इतना ही नहीं, लॉकडॉउन के दौरान एक शिक्षक होने के नाते स्कूल में भी जाते रहे और ऑनलाइन शिक्षण से बच्चों को पढ़ाते भी रहे।

डॉ.प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

सर्वश्रेष्ठ देश हमारा

जन-जन में बसा हुआ,
विश्व धरा का तारा है।
यह देश नहीं है साधारण,
सर्वश्रेष्ठ भारत हमारा है।

प्रकृति भी करे सुशोभित,
प्यारे भारत देश को।
ऋतुएँ सभी छटा बिखेरें,
बदल-बदलकर भेष को।

शान्ति पाठ पढ़ाता सबको,
प्रेम सदा बरसाता है।
कण-कण में बसी देशभक्ति,
आँखों से प्रेम झलकाता है।

वृहद सोच रख चला सदा,
नेकी के पथ को अपनाया।
प्रेम पथ दिखलाकर सबको,
जग में रोशन नाम किया।

जब भी कोई आपदा आए,
कदम मिलाकर चलते हैं।
पर हित करने हेतु जन,
प्राणों की आहुति देते हैं।

कोरोना जैसी महामारी में,
योद्धा का रूप दिखाया है।
सकारात्मक रुख अपनाकर,
भय को दूर भगाया है।

स्वदेश की कीर्ति बढ़ाने हेतु,
चीनी ऐप का त्याग किया।
छोड़ विचार निज लाभ का,
राष्ट्र प्रेम है दिखलाया।

जब-जब दुश्मन ने आँख दिखाई,
सदा उन पर प्रहार किया।
जिसने भी मित्रहस्त बढ़ाया
उनसे मित्रवत् व्यवहार किया।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय
अलावर्दी गुरुग्राम, हरियाणा

मेरा भारत महान

सद्भावना, भाईचारा और सबका सम्मान
विश्वपटल पर सबसे न्यारा, प्यारा हिंदुस्तान,
तिरंगा है शान मेरी, सब कुछ इस पर कुर्बान
विविधता में रहे एकता, यही असली पहचान।
मेरा भारत महान।

गुरुग्रंथ, बाइबल और गीता पावन पाक कुरान
हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई इक-दूजे की जान,
कल-कल करते झरने, नदियाँ हरे-भरे मैदान
खुशहाली और समृद्धि का सब करते गुणगान।
मेरा भारत महान।

छल-कपट और वैर-भाव का कहीं नहीं निशान
मानवता बस धर्म यहाँ है, सबका सच्चा ईमान,
मैं तुम में कोई बँटा नहीं, सब हैं एक समान
सीना तान डटे रहें हरदम सरहद पर जवान
मेरा भारत महान।

'अतिथि देवो भव' यहाँ पर है ये कर्म महान
हुए शूरवीर और प्रतापी भीम, भगतसिंह से बलवान,
नतमस्तक हर कोई हो जाये, ऐसी इसकी शान
खुशियों के 'दीप' जलाकर गाएँ राष्ट्रगान।
मेरा भारत महान।

कुलदीप दहिया 'दीप'
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला, भंगो
खंड- तावडू, जिला- नूंह, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

प्रिय अध्यापक साथियो! प्रस्तुत है 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत कुछ नई विज्ञान गतिविधियाँ, जिन्हें हम विद्यालय में करवा कर बच्चों को 'गतिविधि आधारित अधिगम' के साथ जोड़ सकते हैं। यदि विद्यार्थी पुस्तक में छपे हुए तथ्यों को अपने हाथों से करके देखें तो उन्हें जल्दी समझ आएगा और वे उसे अधिक देर तक याद रख सकेंगे। इन्हीं सभी बिंदुओं को पोषित करती हुई निम्न गतिविधियाँ उनमें पर्यावरण, भौतिकी व प्रकृति के प्रति ठोस समझ उत्पन्न करने में मददगार साबित होंगी। तो आइए लेते हैं उन गतिविधियों का आनन्द, जो विद्यार्थियों को खुद करके सीखने का अवसर प्रदान करती हैं-

1.धूप व छाया में तापमान का अंतर ज्ञात करना-

अपनी कक्षा से विज्ञान कक्ष तक आने में विद्यार्थियों को धूप में चल कर आना पड़ा तो देखते हैं कि विज्ञान कक्ष में अभी विद्यार्थी पहले से ही मौजूद हैं तो वे सब विज्ञान कक्ष के बाहर छायादार स्थान पर खड़े हो जाते हैं। विज्ञान कक्ष के खाली होने पर वे विज्ञान कक्ष में आकर बैठ जाते हैं। वहाँ बैठते ही उन्हें अध्यापक के इस प्रश्न का सामना करना पड़ता है- धूप और छाया के तापमान में कितना अंतर है? विद्यार्थियों को तो धूप में गर्मी लग रही थी और छाया में राहत महसूस हुई थी। वे बोले- धूप और छाया में तापमान का अंतर होता है। अध्यापक फिर पूछते हैं- कितना अंतर होता है? अब विद्यार्थी कुछ जवाब न दे सके। अध्यापक ने तुरंत साइंस किट से कक्ष तापमापी निकालकर उन्हें गतिविधि करके देखने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने रूम थर्मामीटर को पहले धूप में स्वतंत्रता पूर्वक लटकाया और कुछ देर के बाद उसमें प्रदर्शित हो रहे तापमान को अपनी नोटबुक में लिख लिया। अब वहाँ से तापमापी उतार कर वे उसे छायादार स्थान पर ले जाते हैं। कुछ देर बाद में वे तापमान को फिर से नोट करते हैं तो वे पाते हैं कि धूप से छाया में लाने पर तापमान में 5 डिग्री सेल्सियस रीडिंग की गिरावट दर्ज हुई। वे समझ गए कि गर्मियों के दिनों में धूप से ज्यादा छायादार स्थान क्यों खुशगवार लगते हैं। इसके बाद विद्यार्थियों ने विज्ञान-कक्षा के भीतर का तापमान भी नोट किया। कक्ष तापमान ज्ञात करने की विधि भी उन्होंने खुद करके सीखी। एक बालक ने कहा- सर, फिर तो पेड़ पृथ्वी पर ताप कम करने में भी सहायक होते होंगे? मैंने कहा-हाँ जी।

2.मोमबत्ती क्यों बुझ गयी?

किसी वस्तु के जलने के लिए वायु की उपस्थिति व ऑक्सीजन की अनिवार्यता को समझने के लिये बच्चों ने पाठ्यपुस्तक में पढ़ी हुई एक गतिविधि करके देखी। इसके लिए उन्होंने एक बेलजार लिया। एक मोमबत्ती को जलाया व उसके ऊपर बेलजार को रख दिया। बेलजार के नीचे दो माचिस या माचिस जितनी मोटाई की दो वस्तुएँ रखी ताकि नीचे से स्थान बन जाए। प्रथम स्थिति में बेलजार के मुँह के ढक्कन को भी बंद नहीं किया। प्रथम स्थिति में उन्होंने देखा कि मोमबत्ती को जलने के

लिए वायु मिल रही है जो कि नीचे से प्रवेश कर रही है और गरम वायु बेलजार के ऊपर मुँह से बाहर निकल रही हैं। मोमबत्ती को जलने में कोई रुकावट नहीं आ रही है। दूसरी स्थिति में वह बेलजार के मुँह को उसके काँच के स्टाप्र से बंद कर देते हैं। अब ऊपर से गर्म वायु निकलने का मार्ग बंद हो जाता है तो ऐसी स्थिति में वायु नीचे से ही प्रवेश करती हैं और गर्म वायु भी नीचे से ही बाहर निकलती है। यहाँ अब मोमबत्ती को जलने में आवश्यक वायु यानी ऑक्सीजन उचित मात्रा में नहीं मिल पा रही। अब वह इतनी बढ़िया नहीं जल रही, बल्कि फड़फड़ा रही है। तीसरी स्थिति में विद्यार्थी नीचे से गुटके भी निकाल देते हैं तो वायु का आने व जाने दोनों का मार्ग बंद हो जाता है। मोमबत्ती थोड़ी देर बाद बुझ जाती है। मोमबत्ती इस स्थिति में केवल तब तक जलती है जब तक बेलजार के अंदर की वायु में आक्सीजन मौजूद रहती है। तो इस गतिविधि को करने से उनको यह पता लग गया कि वस्तुओं के जलने के लिए वायु की उपलब्धता आवश्यक है और ऑक्सीजन का होना अनिवार्य है।

3.सुई को चुम्बक बनाना-

विद्यार्थी जानना चाहते हैं कि स्थायी चुंबक कैसे बनती है? वे अपनी पाठ्य-पुस्तक में भी स्थायी चुंबक बनाने की विधि को पढ़ रहे हैं। वे चुंबक बनाना चाहते हैं। इसके लिए साइंस किट से एक छड़ चुंबक लाई जाती है और एक लंबी वाली सुई भी।

कुछ आल पिन, एक दो पुश पिन व स्टेपलर पिन भी एकत्र किये जाते हैं। उनसे अब 'एकल स्पर्श विधि' द्वारा सुई को स्थाई चुंबक बनाना शुरू किया जाता है। मेज पर सुई को रखकर छड़ चुंबक के किसी भी एक ध्रुव (उत्तरी या दक्षिणी) वाली साइड को सुई पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक स्पर्श करते हुए रगड़ते हुए ले जाया

जाता है। सुई के दूसरे छोर पर पहुँचने पर छड़ चुम्बक को उठाकर फिर से पहले छोर से दूसरे छोर तक स्पर्श द्वारा रगड़ते हुए ले जाया जाता है। यह प्रक्रिया कई बार दोहरायी जाती है। सुई चुंबक बन गई या नहीं, जाँच करने के लिए उससे आल पिन, पुश पिन व स्टेपलर पिन आदि को चिपका कर देखा जाता है जो कि चिपक जाते हैं। बच्चे हैरान है कि केवल कुछ बार स्पर्श कराने से उनकी सुई चुंबक बन गयी।

4.नन्हे लाल-लाल बीजों का कौतूहल-

अरे, यह क्या ले आया? इन्हें फेंक दो। इनको अपने पास रखने से लड़ाई होती है। ऐसा मेरी मम्मी ने बताया है। कुछ इस तरह की चर्चा बच्चे अपने हाथ में लाल रंग के छोटे-छोटे बीज लेकर कर रहे थे। इन लाल बीजों पर एक काला धब्बा भी बना हुआ था। मैं देखते ही पहचान गया यह तो रत्ती गुंजा के बीज हैं मैंने उन बालकों को अपने पास बुलाया और रत्ती बीजों के बारे में बताया। गुंजा या रत्ती जिस का वनस्पति नाम अब्रुस प्रीकटोरियस होता है। इसे संस्कृत में रक्तकाकचिंची भी कहते हैं। यह बेल (लता) पर लगने वाला एक बीज है। इस बीज के वजन के बराबर वजन को एक रत्ती कहा जाता था। रत्ती वजन तोलने की प्राचीन भारतीय पद्धति है।

8 रत्ती = 1 माशा

12 माशा = 1 तोला

1 तोला= 11.6 ग्राम

आधुनिक वजन के हिसाब से एक रत्ती लगभग 0.121250 ग्राम के बराबर है।

यह एक ऐसा बीज है जिसे प्रारंभ में वजन तोलने के बट्टों के रूप में प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप की सभ्यताओं के निवासियों ने किया था। जिसका कारण यह माना जाता है कि इस बीज में लंबे समय तक अपना आकार व वजन नहीं बदला है और दूसरी विशेषता यह है कि इस बीज का आयुर्वेदिक महत्व भी है। अब बच्चे पूछने लगे कि इसके साथ यह कैसे जुड़ा कि इसको अपने पास रखने से लड़ाई होती है? मैंने हँसते हुए कहा कि लाल रंग पर काला बिंदु होने के कारण इसे 'शैतान की आँख' भी कहते हैं। क्योंकि देखने में यह है लाल हुई आँख की तरह लगती है इस जवाब को सुनकर बच्चे हँसने लगे और बोले- सर हम इसको स्कूल की क्यारी में उगाएँगे। हम देखेंगे कि इसकी बेल कैसी होती है? मैंने सहर्ष अनुमति प्रदान कर दी।

5.नवाचारी परिपथ जो बताये लवणीय जल होता है विद्युत का सुचालक।

कुछ तारों के टुकड़े, एक बैटरी, एक किसी भी बाइक के इंडिकेटर के साथ बजने वाला बजर, एक स्विच और एक एलईडी लेकर विद्यार्थी चले एक ऐसा नवाचारी विद्युत परिपथ बनाने जिससे इसका पता लगाया जा सके कि किसी भी ठोस व द्रव पदार्थ में विद्युत का चालन हो सकता है या नहीं या वह पदार्थ विद्युत का सुचालक है या कुचालक है।

संलग्न चित्र के अनुसार विद्यार्थियों ने बिना सोल्डरिंग (टांका) के एक परिपथ बनाया। परिपथ के दोनों सिरों (दो मुक्त सिरे) पर किसी भी वस्तु को टच कराने पर व द्रव में डुबोने पर यदि बजर बजता है और एलईडी चमकता है तो उस पदार्थ या द्रव में से विद्युत का चालन हो सकता है। विद्युत का सुचालक पदार्थ परिपथ को पूर्ण करेगा और कुचालक पदार्थ परिपथ को पूर्ण नहीं करेगा। विद्यार्थियों ने बहुत से विलयन और ठोस पदार्थों में उसके विद्युत के सुचालक और कुचालक गुण को जांचा। उन्हें सबसे ज्यादा मजा नमक के पानी में यह प्रयोग करने में आया क्योंकि दोनों तारों को नमक के विलयन में डूबाने पर दोनों सिरों पर कुछ बुलबुले भी उठ रहे थे। तो विद्यार्थी चहक रहे थे कि 'यहाँ देखिये सर, जल का विद्युत अपघटन भी हो रहा है।' इस प्रकार बच्चों ने पूर्व में की गई एक अन्य गतिविधि 'जल का विद्युत अपघटन' को इस गतिविधि के साथ जोड़कर पूर्वानुमान लगाया जो कि सही था।

अच्छा, तो प्यारे अध्यापक साथियों अब विराम देते हैं। आशा करता हूँ कि आप भी इस तरह की ही गतिविधि अपनाते होंगे। अपने विद्यार्थियों के साथ मेरा इस प्रकार विज्ञानमय होकर घुल-मिल जाने से विद्यार्थियों का भरोसा मुझ पर बढ़ता है, ऐसा मैं निरंतर अनुभव करता हूँ।

विज्ञान अध्यापक व विज्ञान संचारक
रावमा विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर, हरियाणा

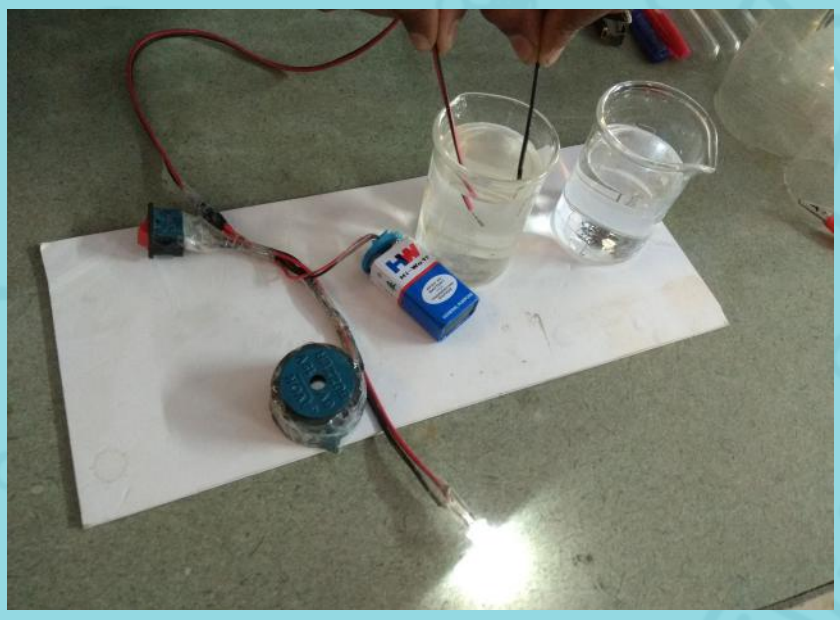

प्यारे बच्चो!

आप कैसे हैं? लॉकडाउन के कारण विद्यालय बंद होने के कारण आप घरों में बंद हैं। जल्दी ही आपके विद्यालय खुलने वाले हैं। तब तक आपके शिक्षण कार्य में व्यवधान न पड़े, इसके लिए विभाग ने काफी प्रयास किए हैं, जिनका लाभ भी आपको मिल रहा होगा। फोन, व्हट्सएप्प समूहों के जरिये आप अपने अध्यापकों के भी निरंतर संपर्क में हैं और हम जानते हैं कि आपका शिक्षण कार्य काफी अच्छे ढंग से चल भी रहा है। कुछ दिक्कतें भी आ रही होंगी, लेकिन इस संकट की घड़ी में हमें उनको भी सहना है। समाचारों के माध्यम से आपको पता लग रहा है कि हमारे अपने देश में कोरोना संक्रमित व्यक्तियों की संख्या में हर रोज़ काफी वृद्धि हो रही है। हम चाहते हैं कि आप अपने आपको इस महामारी से बचाकर रखें। भले ही लॉकडाउन में काफी ढील मिल गई हो, लेकिन बिना वजह घर से न निकलें। कोरोना के लक्षण व इससे बचने के उपायों के बारे में पिछले अंक में मैंने आपको काफी विस्तार से बताया था। आशा करती हूँ कि वह जानकारी आपके लिए उपयोगी रही होगी। हमें आशा है कि संकट के ये बादल जल्दी ही छँट जाएँगे। जल्दी ही जीवन फिर से पहले की तरह हो जाएगा। लेकिन हाँ, इतना मैं आपको जरूर बताना चाहूँगी कि कल जब भी आपके विद्यालय खुलें, तब आपको आपके अध्यापकों द्वारा इस महामारी से बचाव के कुछ अन्य दिशा-निर्देश भी दिये जाएँगे। अपनी सुरक्षा के लिए इनका आप सभी को पालन करना होगा। अच्छा, अभी के लिए केवल इतना ही। घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

1. रेशम के कीड़े का भोज्य पदार्थ क्या है?
उत्तर - शहतूत की पत्ती
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक कौन थे?
उत्तर - एओ ह्यूम
3. भारत का राष्ट्रीय पक्षी कौन सा है?
उत्तर -मोर
4. मणिपुर की राजधानी का नाम क्या है?
उत्तर - इम्फाल
5. भारत का सर्वाधिक शिक्षित राज्य कौन सा है?
उत्तर - केरल
6. 'चाचा जी' के नाम से कौन जाने जाते हैं?
उत्तर - पं.जवाहर लाल नेहरू
7. भारत का कौन-सा शहर 'गुलाबी नगरी' के नाम से जाना जाता है?
उत्तर - जयपुर
8. भारत का सर्वोच्च पुरस्कार कौन सा है?
उत्तर - भारत रत्न
9. भारत के संविधान को बनाने के लिए गठित संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे?
उत्तर - डॉ. राजेंद्र प्रसाद

क्या आप जानते हैं ?

प्यारे बच्चो, वर्षा ऋतु में देखते होंगे कि नमक, पापड़, पुस्तकें, बिस्कुट, नमकीन आदि चीजें नम हो जाती हैं। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है? अगर नहीं तो आइये, मैं आपको बताती हूँ-

वर्षाकाल में वायु में जलवाष्प की मात्रा अधिक होती है। वायु में जलवाष्प की मौजूदगी आर्द्रता कहलाती है। वायु में उपस्थित इसी नमी को सोखकर ये वस्तुएँ नम हो जाती हैं।

पहेलियाँ

1. बेल पड़ी है बीच ताल में, और फूल मुस्काता।
अजब तमाशा हमने देखा, फूल बेल को खाता।।
2. बूँदों वाले बाण चलाए, प्यासी धरती को हरषाए।
फसलों को दे देता जीवन, ऐसा धन है कौन लुटाए।।
3. चार हाथ का छोकरा, सात चक्कर खात।
गरम को शीतल करे, छुअत करत अघात।।
4. तीन अक्षर का मेरा नाम, करो शीघ्र मेरी पहचान।
आदि कटे तो तेज सभी से, मध्य कटे तो ले ले जान।।
5. सिर मोटा, तन दुबरा, खाली वाको पेट।
नर-नारी अति चाव से, हाथ करें धरि भेंट।।
6. एक नार है लोहा खाए, जिस पर थूके वह मर जाए।
बोलो क्या है इसका भेद, प्रकट नहीं करना तुम खेद।।
7. जनाबे आली, सिर पर जाली।
पसलियाँ बहुत हैं, पर पेट खाली।।

उत्तर- 1. लालटेन 2. बादल 3. बिजली का पंखा 4. गमन 5.अँगूठी 6.बंदूक 7.मूढ़ा

- रमेश कुमार सीड़ा, अंग्रेजी प्रवक्ता
विद्यालय शिक्षा विभाग,हरियाणा
संप्रति प्रतिनियुक्ति पर चंडीगढ़ में

कहानी धूप की

बात उन दिनों की है जब धूप को बुलाना पड़ता था। जो बुलाता, धूप वहीं चली आती। इस भाग-दौड़ में वह थक जाती। मौका मिलता तो वह सो जाती। इस बीच कोई पुकारता तो वह हड़बड़ाकर उठती और दौड़कर पहुँच जाती।

एक दिन की बात। बिल्ली ने धूप को पुकारा। बार-बार पुकारा। धूप भागती हुई आ गई। बिल्ली ने डाँटा-''हमें जाड़ा बहुत लगता है। देखो, मेरे बच्चे कैसे काँप रहे हैं!'' कुछ देर बाद फिर धूप को गुबरैले की आवाज सुनाई दी। धूप हाँफते हुए पहुँची। गुबरैले ने आँख दिखाई-''देखो। गोबर कच्चा है। इसे कौन सुखाएगा? खाद में ही मेरा भोजन है।'' धूप गोबर को सुखाने लगी।

'अब जरा सुस्ता लेती हूँ।' धूप ने सोचा। लेकिन यह क्या! तभी मगरमच्छ चिल्लाया। धूप मगरमच्छ के पास जा पहुँची। मगरमच्छ ने अपना जबड़ा खोल लिया। कहा-''इन दिनों पानी बर्फ बन गया है। मेरी पूँछ तक काँप रही है। मेरे पास रहो।'' मगरमच्छ गुनगुनी धूप में आनंद लेने लगा। अब गिलहरी की चीख धूप को सुनाई दी। धूप पहुँची तो वह बोली-''डाल से गिर गई हूँ। सीधे नदी में जा गिरी। देखो, पूरा भीग गई हूँ। ठंड से जान निकली जा रही है।'' धूप पेड़ पर जा बैठी। अभी वह दम ही ले रही थी कि कुत्ता भौंकने लगा। धूप दौड़ी। दौड़ते हुए कुत्ते के पास जा पहुँची। कुत्ता गुस्से में बोला-''मैं रखवाली करता हूँ। अब मुझे भी तो आराम चाहिए। धूप शरीर पर पड़े तो चैन आए।''

बेचारी धूप का धीरज जवाब दे गया। रोज-रोज की भाग-दौड़ से वह परेशान हो गई थी। उसने आँखें बंद कर ली। धूप के आँख बंद करने से चारों ओर अंधेरा छा गया। धूप रोने लगी। जोर-जोर से रोने लगी। इतना रोई कि उसके आँसू झरने लगे। आँसू थे कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। आँसू बारिश में बदल गए। झमाझम बारिश होने लगी। सब भीगने लगे। भीगते-भीगते कुत्ते के पास जा पहुँचे। कुत्ते ने कहा-''धूप अभी तो यहीं थी। मेरे पास ही थी।'' बिल्ली ने लंबी साँस ली। कहा-''मेरे पास से ही तो वह यहाँ आई थी। एक अकेली धूप।'' गुबरैला बोला-''बेचारी धूप।'' मगरमच्छ ने जम्हाई ली-''बेचारी धूप। कहाँ-कहाँ तो जाएगी।'' कुत्ता सोचते हुए बोला-''अब क्या करें? धूप के बिना हमारा काम भी तो नहीं चलता।'' गिलहरी उदास हो गई-''हमें हमेशा अपना ही ध्यान रहा। हमने कभी धूप के बारे में नहीं सोचा।'' आज तक किसी ने अँधेरा न देखा था। सब काँप रहे थे।

इतना अँधेरा! ये अँधेरा धूप के जाने की वजह से हुआ है। अब क्या होगा? सब यही सोच रहे थे। सब एक दूसरे के नजदीक आ गए थे। सब डरे हुए थे। अँधेरा छँटने लगा। सब चौंक पड़े। बिल्ली हैरान थी-''ये क्या हुआ?'' गुबरैला लट्टू की तरह घूमते हुए बोला-''अरे! उजाला हो गया।' मगरमच्छ मिट्टी में लोट गया-''वह भी चारों दिशाओं में!'' कुत्ते ने दुम हिलाई-''अहा! गुनगुनी धूप!''

धूप चहकी। बोली-''मैं सूरज के पास गई थी। सूरज ने मेरा आना और जाना तय कर दिया है। अब मैं धरती के आधे हिस्से पर एक साथ आऊँगी। वह हिस्सा दिन कहलाएगा। धरती के बाकी हिस्से पर अँधेरा रहेगा। वह हिस्सा रात कहलाएगा।'' सब इधर-उधर देखने लगे। धूप हर तरफ फैल चुकी थी। सभी को जल्दी ही दिन और रात का फासला समझ में आ गया। कुछ ही दिनों में सब ने धूप के आने और जाने के हिसाब से खुद को ढाल लिया था।

मनोहर चमोली 'मनु'
भितांई, पोस्ट बॉक्स-23,पौड़ी
पौड़ी गढ़वाल,उत्तराखण्ड

कोरोना से डरो (ना)

ईश्वर ने सृष्टि में मनुष्य को बौद्धिक रूप से सबसे सशक्त प्राणी बनाया है, लेकिन कोरोना काल में वही मनुष्य सर्वाधिक दुर्बल और निरीह नज़र आ रहा है। टीवी-अख़बारों की ख़बरें उसके भय को और बढ़ा रही हैं। वैसे 'भय' किसी समस्या का समाधान नहीं हुआ करता। शतुरमुर्ग की भाँति संकट के समय आँख बंद कर लेने से संकट टल नहीं जाता। वह टलता है उसका मुकाबला करने से। कोरोना से भी हमें मुकाबला करना है। कैसे? आइये जानने की कोशिश करते हैं।

इस संकट कालीन स्थिति का मुकाबला करने के लिए सर्वप्रथम तो हमें अपनी जीवन-शैली में कुछ परिवर्तन लाने होंगे। इस संदर्भ में हमारा खानपान विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति शाकाहारी हो या मांसाहारी, उनकी बीमारियाँ लगभग एक-सी होती हैं। शरीर में तत्व विशेष की कमी किसी न किसी विकार को उत्पन्न कर देती है। अतः हमें संतुलित भोजन लेना चाहिए। वह सुपाच्य होना चाहिए और उसे खाकर हमें फ़ील गुड होना चाहिए और जब भूख लगे तभी खाना खाना चाहिए और जब प्यास लगे तभी पानी पीना चाहिए। खाने में अधिक चीनी, मैदा, रिफ़ाइंड, रेडीमेड फूड, कोका कोला आदि ड्रिंक्स का त्याग करना होगा। ये हमारी इम्युनिटी को कमज़ोर करते हैं। सुबह उठकर दो गिलास गुनगुना पानी अवश्य पीएँ। यह आपके शरीर के टॉक्सिन पदार्थों को बाहर निकालता है, आंतरिक शारीरिक स्वच्छता करता है। साबुत अनाज, दालें, दूध, हरी सब्जियाँ, शुद्ध घी, तिल का तेल, नारियल का तेल, कच्ची घानी का तेल आदि का प्रयोग करें। मौसमी फलों का सेवन करें। सलाद व अंकुरित भोजन को अपने खाने में शामिल करें। बरसात के मौसम में ठंडी चीजों का त्याग करें। वैसे भी अपने शरीर के तापमान से ज्यादा ठंडी चीजें अगर हम खाते हैं व पीते हैं तो वे नुक्सान करती हैं। अतः हमें देर से पचने वाला भोजन कभी नहीं खाना चाहिए। हमें एल्युमीनियम के बर्तन, नॉन स्टिक बर्तनों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। ये जहरीले रसायन पदार्थ पैदा करते हैं। पीतल, मिट्टी व स्टील के बर्तनों को प्रयोग में लाएँ। हर बार ताज़ा बनाएँ, ताज़ा खाएँ। फ्रिज में रखा व बासी भोजन दोबारा गर्म करके कदापि न खाएँ। भोजन बनाने के तीन घंटे के अंदर उसे अवश्य खा लें। सब्जियों को काटकर रख देने से भी उनके विटामिन नष्ट हो जाते हैं। पौष्टिक आहार के साथा-साथ शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए हमें 20 मिनट धूप अवश्य लेनी चाहिए। जैसे मोबाइल से काम लेने के लिए आप उसे चार्ज करते हैं उसी तरह शरीर को स्फूर्ति देने के लिए हमें योग-ध्यान-व्यायाम व खेलकूद को अपनी जिंदगी का जरूरी हिस्सा बनाना चाहिए।

कोरोना का खौफ बहुत से लोगों के मन-मस्तिष्क में इस कदर छा गया है कि वे अवसाद के शिकार हो रहे हैं। हमें इस स्थिति से बचना है। कोई भी संकट-काल स्थायी नहीं होता, इस बात को मन में रखते हुए अपने आपको रचनात्मक कार्यों में लीन रखना है। समय पर सोने और समय पर जागने से भी जीवन अधिक अनुशासित रहता है। इन सब के अलावा हौसला, सकारात्मक भाव और ईश्वर पर आस्था से बड़े से बड़े संकट से बाहर निकलने का रास्ता दिखाई देने लगता है।

मानव सदा से अनेक वायरसों के साथ जीता रहा है। बड़ी-बड़ी महामारियों को भी उसने झेला, मुकाबला किया और विजय प्राप्त की। जीवन फिर से सामान्य होकर आगे बढ़ने लगता है। यकीन मानिए, इस बार भी ऐसा ही होगा। बस, इस संकट-काल में थोड़ा-सा सतर्क रहने की जरूरत है, अपनी जीवन-शैली में कुछ बदलाव लाने की दरकार है। अपने इम्यून-सिस्टम को मज़बूत रखें, इतना मजबूत कि वायरस रूपी हर संकट से यह आपको बचाए रखे। हमारे ही समाज में अनेक ऐसे उदाहरण हैं कि लोग कोरोना से ग्रस्त होकर स्वस्थ भी हो गए हैं, और उन्हें पता भी नहीं चला। उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता ने वायरस का ख़ुद ही मुकाबला करते हुए वायरस के विरूद्ध एंटी बॉडीज़ तैयार कर लिये। हाँ, अगर पहले से ही आप हार्ट, ब्लड-प्रेशर या लीवर आदि की बीमारी से ग्रस्त हैं, नशे की लत का शिकार हैं, बहुत अधिक मोटे या पतले हैं तो जरूर कुछ अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता है।

प्रत्येक नागरिक को आयुष मंत्रालय द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन करना चाहिए। समय-समय पर सरकारें भी निर्देश दे रही है कि हाथों को धोना, मुँह पर मास्क लगाना, दो मीटर की दूरी बनाए रखना व खाने वाली चीज़ों को प्रयोग में लाने से पहले मीठे सोडे या नमक मिश्रित पानी से अच्छी प्रकार से धोना है।

हमें याद रखना है कि लॉकडाउन खुलने से संक्रमण का खतरा काफी बढ़ गया है। वायरस के लिए वेक्सीन, देश की इतनी बड़ी आबादी के लिए उसकी उपलब्धता अभी दूर की कौड़ी प्रतीत हो रही है। इसलिए इस समय हमारी अपनी सुरक्षा हमारे अपने हाथ में ही है। अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें, भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचें। बच्चों-बुज़ुर्गों का विशेष ध्यान रखें। हमारे देश की जनसंख्या 133 करोड़ है और ज्यादातर गाँवों व शहरों में जनसंख्या का घनत्व अधिक है, जिस कारण अभी कोरोना ग्रस्त लोगों की संख्या काफी अधिक बढ़ने की आशंका दिखाई दे रही है। भगवान न करे, अगर कहीं कम्युनिटी स्प्रेड हो जाता है तो यह संख्या बहुत तेजी से बढ़ेगी। अतः विश्व व्यापी इस महामारी को हल्के में लेने की गलती भी न करें। हमारे समाज में अनेक लोग ऐसी भूल करके ही इससे ग्रस्त हो रहे हैं। अतः सचेत रहिए, सावधान रहिए, सुरक्षित रहिए।

इन्द्रा बेनीवाल
उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग
हरियाणा

अंजीर : कीड़ों का दिया नायाब तोहफा

अंजीर एक ऐसा फल है जो स्वादिष्ट तो है पर इसकी अपनी कोई तेज़ सुगंध नहीं है। यह नाशपाती के आकार का तथा रंग में हल्का पीला या गहरा सुनहरी होता है।

अंजीर में 63 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 7.3 प्रतिशत सेलूलोज, 5.5 प्रतिशत प्रोटीन,1 प्रतिशत वसा और 20.8 प्रतिशत जल होता है ।

अंजीर आयरन, विटामिन, सोडियम और पोटैशियम का अच्छा स्रोत है। यदि किसी को दूध से एलर्जी है तो वह उसकी स्थान पर अंजीर ले सकता है। अंजीर दूध का अच्छा ऑप्शन है। अंजीर लोगों को बहुत स्वादिष्ट लगती है, पर बहुत ही कम लोग जानते है कि यह स्वादिष्ट और पौष्टिक अंजीर हमें कीड़ों की देन है। आज मैं आपको इससे जुड़ी एक बहुत ही रोचक जानकारी दूँगा।

बात है सन 1880 की, अमेरिका में अंजीर लोगों का पसंदीदा फल था, परन्तु अमेरिका में अंजीर की खेती नही होती थी। अंजीर तुर्की से इम्पोर्ट की जाती थी। लोगों को अंजीर इतनी पसन्द थी कि अंजीर का नाम सुनते ही उनके मुँह में पानी आ जाता । एक अखबार ने अपनी अखबार की बिक्री बढ़ाने के लिए (कीड़ो के उपहार) अंजीर का इस्तेमाल किया। उन्होंने तुर्की से अंजीर की कई हज़ार कलमें मँगवा लीं और अपने अखबार के पाठकों को दीं। इससे अखबार के पाठकों की संख्या बढ़ गई। अमेरिका के लोगों ने बड़े चाव से कलमें लगाईं, उनकी देखभाल की। समय के साथ पेड़ बने और उन पर कोपलें भी आयीं। अमेरिका के लोगों को बस अब इंतज़ार था कलियों के फल बनने का। पर निराशा हाथ लगी। किसी भी वृक्ष पर कोई फल नही लगा। सभी कलियाँ सूख गई। सभी परिस्थितियाँ अनुकूल थीं, फिर भी फल का न लगना एक रिसर्च का विषय था। विशेषज्ञों की समिति बनाई गई और एक टीम तुर्की भेजी गई। टीम ने देखा कि वहाँ दो प्रकार के अंजीर के पेड़ थे, एक जंगली अंजीर के पेड़ और दूसरे स्मर्ना अंजीर के पेड़। उन्होंने देखा कि छोटे-छोटे कीड़े जंगली अंजीर के पेड़ों से निकलते और उड़ते हुए सीधा स्मर्ना अंजीर की कलियों में घुस जाते। वास्तव में ये कीड़े अंडे देने के लिये स्मर्ना अंजीर के मादा पुष्पों में घुस जाते थे, पर वहाँ की जटिल संरचना के कारण जल्दी ही बाहर आ जाते थे, परंतु यहाँ ये नर पुष्प के पराग मादा पुष्प तक ले जाते थे। तो यही वे कीड़े थे जिनके कारण अंजीर का फल बनता था। वास्तव में ये कीड़े परागण में अहम भूमिका निभा रहे थे। ये कीड़े नर पुष्पों से पराग ले जाकर बीज बैठाने का काम करते थे। तब अमेरिका के वैज्ञानिकों की टीम जंगली अंजीर की कलमें और उन कीड़ों को भी अपने साथ ले गई। इस प्रकार हम यह खोज पाए कि ये अंजीर कीड़ों का दिया हुआ इंसान को नायाब तोहफा है। इस कीड़े का वैज्ञानिक नाम है- ब्लास्टोफेगा। पंचकूला(मोरनी)की तरफ यह फल चिमली के नाम से जाना जाता है।

सुनील अरोड़ा
पीजीटी रसायन विज्ञान
राउ विद्यालय समलेहरी
जिला पंचकूला, हरियाणा

2020

अगस्त माह के त्यौहार व विशेष दिवस

1 अगस्त- बकरीद
2 अगस्त- मैत्री दिवस
3 अगस्त- रक्षाबंधन
6 अगस्त- हिरोशिमा दिवस
9 अगस्त- क्रांति दिवस
(भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस)
12 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
13 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय वाम हाथ दिवस
12 अगस्त- जन्माष्टमी
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
19 अगस्त- विश्व फोटोग्राफी दिवस
20 अगस्त- सद्भावना दिवस
30 अगस्त- मुहर्रम

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Disparity in access to quality education and the digital divide

Sabir Ahamed

Md. Zakaria Siddiqui

On account of the Covid-19 pandemic, most educational institutions in India have adopted online teaching as a solution to offset huge deficits in instruction hours. However, citizens who do not have digital capabilities or ownership of computing devices, are suffering the most in these challenging times. Siddiqui and Ahamed analyse National Sample Survey data, argue that the disparity in access to education is at the root of the digital divide across socioeconomic groups.

Covid-19 pandemic has caused an unprecedented and sustained disruption in every sphere of life, including education and pedagogy. Skilled and educated workers in the economy immediately transitioned into working digitally, with some level of efficacy. The poor and unskilled, however, simply lost their jobs. Educational institutions around the world, backed by their governments, have adopted online teaching as a solution to compensate for huge deficits in instruction hours. In India, most public and private educational institutions, including the University Grants Commission (UGC), have followed the same path. However, they seem to be imitating the developed countries without a nuanced understanding of their own ground reality. Without tackling educational disparity, the digital divide cannot be addressed. Educated India is a prereq-

uisite for 'Digital India'. Unfortunately, several studies and a national-level survey show that the quality of learning at primary and secondary level has been declining (ASER (Annual Status of Education Report) Centre, 2015; Das and Biswas 2019).

The country's leadership – despite setbacks and contrary evidences – believes that information technology (IT) will provide solutions for most of India's development problems. This approach of a 'technological fix' to an extraordinary humanitarian crisis, including provision of education and health services through digital platforms, is likely to widen the inequality in accessing them. The citizens in the 'offline' category will suffer the most in the changing and challenging times. Successive governments in India, particularly the present one, have pushed for IT-enabled platforms to provide public services without equipping the population with digital capabilities in a commensurate manner. Instead of ensuring accountability in providing access to education and health, institutions of governance continue to spend resources on implementing IT-based tools originally intended to prevent wrongful inclusion or leakage in publicly funded programmes, such as the PDS (public distribution system) and MNREGA (Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act), but in the process, inadvertently delaying or preventing the programmes' benefits from reaching those who are genuinely eligible, as they lack 'computing ability'. Studies also illustrate that there is no improvement in transparency or accountability in these services' delivery after the introduction of IT-based tools (Khera and Patibandla 2020, Vivek et al. 2018, Masiero 2015).

The moot question is what comes first: digital advancement, or the advancement of human capability? As political commentator Nissim Mannathukkaren (2015) aptly highlighted, "What should worry us is not the digital divide, but the fundamental divide between a rapidly growing technological capability and a snail-like growth in eliminating human deprivation." A person can develop technological capability with a good quality of education. A person with higher education is more likely than a person with a few years of schooling to utilise the benefits of digital technology.

What do the data show about Indian households' digital capabilities?

We need a reality check to understand Indians' ability to use online platforms to access government-funded social protection programmes, and educational instruction during the Covid-19 pandemic. Latest available data from the National Sample Survey (NSS) conducted in 2017-18, on 'Household Social Consumption on Education in India' reveal the hollowness of such a policy approach.

The Survey collected information regarding the availability of computing devices and the internet in households. It also tried to find out how many individuals could use computers (smartphones included) and the internet. A person is considered as having computing ability if he is capable of using both of these computing devices as well as the internet.

The Survey finds that the ownership of computing devices is abysmally low in India. Only one out of over 10 (10.7) households possess a computing device, which includes devices such as desktop, laptop, notebook, palmtop, and tablet. The rural-urban disparity in computing-device ownership is quite stark. In rural areas, Schedule Tribes (STs) are at the bottom of 2.47% of households who owned any computing device, followed by Scheduled Castes (SCs) (3.27%), and Muslims (3.58%). In urban areas, Muslims and SCs are the worst-off groups when it comes to computing-device ownership (12.7%) while STs and Other Backward Classes (OBCs) are slightly better (over 19%).

Over the last decade, with the entry of multiple internet-service providers, internet subscribers have increased dramatically – from 267.4 million in December 2014 to 687.2 million

Figure 1. Share (%) of above-14 population equipped with computing ability, across social groups

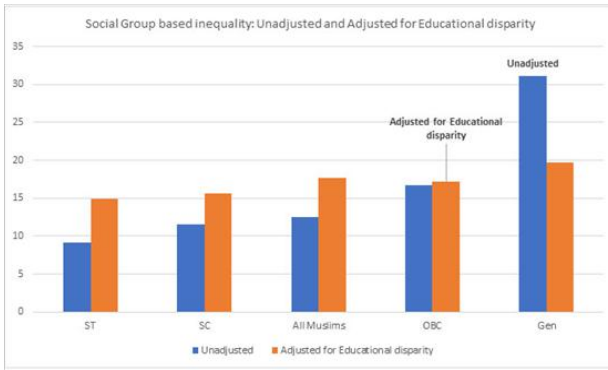

Note : Unadjusted bars (blue) reflect the actual fraction of population with computing ability, while adjusted bars (orange) reflect a hypothetical scenario if there were no educational disparity across social groups.

Figure 2. Share (%) of above-14 population equipped with computing ability, across economic groups

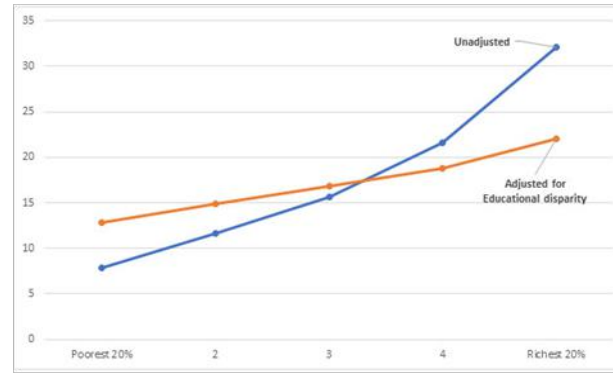

Note: Blue line represents the actual share of population with computing ability across respective economic groups, while the orange line represents a hypothetical scenario if there were no educational disparity by economic status.

in September 2019. As a result of increased competition among internet service providers, the internet is more affordable than ever before. In rural India, less than 15% of the households have internet facility; however, for ST households, the number is as low as 9%. Notwithstanding the disparity across social groups, urban households are well-placed with 42% having access to the internet in 2018-19.

Disparity in access to education and the digital divide

Our analysis of the Survey data indicates that only about 11% of rural and 40% of the urban population above 14 years of age can operate a computer as well as use the internet. It is difficult to imagine the use of digital platforms by such poorly equipped communities to access public services. Further, the existing stock of digital capabilities remains limited even among upper socioeconomic strata.

According to the analysis, the disparity in access to education is at the root of the digital divide. 'Computing ability' is inextricably linked to the educational attainment of individuals. The social group or economic status-based gap that we see are mainly because educational attainment itself is graded on the basis of socioeconomic status. Once we look at a scenario that is adjusted for the disparity in educational attainment, social group based disparity in computing ability nearly disappears, and economic status-based disparity gets moderated significantly (Figures 1 and 2).

Even the gender-based digital divide can largely be explained by the corresponding gender-based disparity in educational achievements. Thus, social and economic hierarchies in digital abilities are a mirror image of the educational inequality across different economic and social groups. Figure 3 corroborates this in an alternative manner, by displaying disparity in computing ability by the level of educational attainment – actual, as well as after

Figure 3. Share (%) of above-14 population equipped with computing ability, by maximum level of education attained

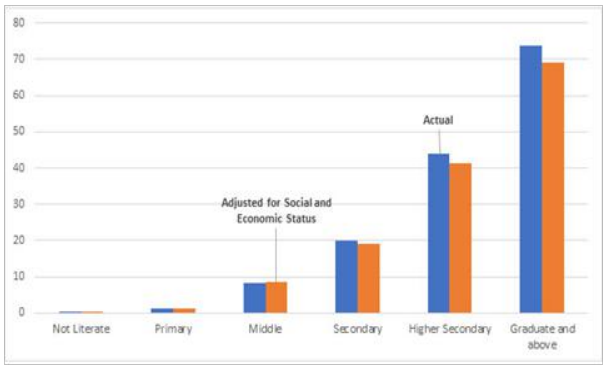

Note: Blue bars represent the actual share of population with computing ability for the respective education level, while orange bars represent a hypothetical scenario if there were no educational disparity by social and economic status.

Figure 4. Share (%) of above-14 year population with higher secondary and above education equipped with computing ability, across Indian states

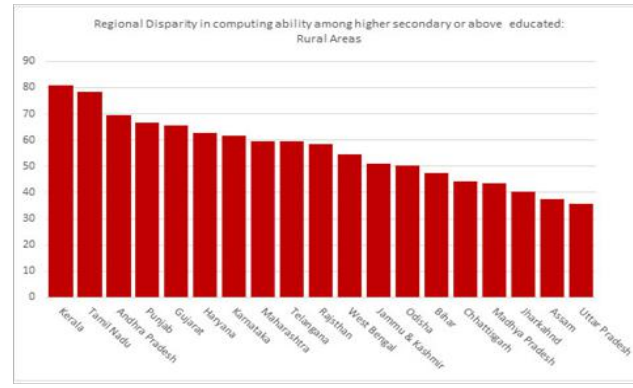

adjusting for social and economic status-based inequality that may exist in educational attainment. The fact that education-based disparity in computing ability remains at a similar level even after adjusting for socioeconomic disparity reinforces the importance of education as a prerequisite for broad-based development of digital capability in the population.

The digital divide is bound to intensify the pre-existing learning divide between rich and poor households due to closure of classroom teaching for this extended period. Children belonging to affluent and educated households have all the necessary support for learning, as parents themselves are capable of imparting education, and they can also access online teaching. However, children of poor and uneducated parents who mostly go to government schools and have no digital capabilities are left in limbo. Television-based virtual classes are welcome, but the fact that kids are delinked from their own teachers reduces their motivation and sense of responsibility in completing the tasks.

This is particularly the case for government schools and budget private schools. Addressing the need for quality education for the bottom-half of the population should be the primary strategy for achievement of Digital India. Access to quality education has become an increasingly important issue as language and arithmetic ability of students have been experiencing a secular decline in for many years now (Agarwal and Bandyopadhyay 2018).

Data on computing ability show a disturbing regional disparity even among educated individuals. Educated individuals in South India are more likely to be equipped with computing ability. Figure 4 shows that less than 36% of individuals who have completed higher secondary or above education in Uttar Pradesh were equipped in computing ability. In comparison, in Kerala, close to 81% of individuals with the same level of education could use computing devices and the internet. This regional disparity in computing facility once again hints towards concomitant regional disparity in the provision of quality education in India and the lack of adaptation to English in the Hindi heartland, that is, the Indo-Gangetic belt and Central India. Since accessing a digital device such as a computer requires a minimum level of English language skill, e-governance or ICT-enabled platforms, usually available in regional language alternatives, may be of little help to those who do not have a minimum working knowledge of English.

Concluding remarks

Without doubt, there has been a massive proliferation of computing devices and internet connections in India since low-cost digital devices and cheap internet flooded the Indian market. Yet, it significantly differs from what we need for digital India, that is, computing ability. We need to understand the subtle difference between the ability to forward messages on WhatsApp and to fill out an online application form, with documents attached, through a digital device. The latter entails a set of technical skills, such as installing apps, browsing websites, scanning documents, and successfully attaching documents of required size and resolution.

The goal of Digital India will remain elusive unless the constitutional commitments of ensuring quality education for all, are fulfilled. The government must shun the deeply flawed 'technological approach' to eliminate human suffering, and instead, adopt a humanist approach to tackle deprivation, including the provision of quality education through public deliberation, systematic investment, and enhanced accountability.

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/disparity-in-access-to-quality-education-and-the-digital-divide.html
"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

Pratichi Insitute
sabirahamed@gmail.com

BITS Pilani Hyderabad
mzsiddiqui@hyderabad.bits-pilani.ac.in

This is how your mind can control your pain and not medication

The manner in which agony is experienced is now and again considered as a fundamental element of being a human. The very reality that we can react to unfavorable outside jolts is something which advocates our awareness. Torment fills in as an organic cautioning. Normally extraordinary people encounter torment in an unexpected way. For some, the neural receptors don't enlist any difficult sensations whatsoever, and for some who experience the ill effects of interminable agony, there are many cases which exhibit that the conduct in which the brain and torment communicate extensively.

Science is beginning to investigate and bolster treatments for pain, such as, for example, biofeedback and reflection in dying down agony. The mindfulness that the brain has control over the body might be especially significant to waiting for agony patients who frequently end up without reasonable medications. Torment moves along two trails- from a premise, for example, harm, back to the cerebrum. One is the tangible way, which passes on the physical sensation. The other is the enthusiastic way, which goes from

the damage to the amygdale and the foremost cingulated cortex which are the zones of the mind that procedure feeling.

Some of the therapies are:

Acupuncture function

Meditation can help to release pain and provide relieve

Ways how biofeedback helps to relieve pain

Cognitive-behavioural therapy helps in stopping pain obsession

Unwinding, positive considering, reflection, and other personality body methodology can help reduce the necessity for medicine to relive agony. Medications are to a great degree compelling at lessening torment, yet they every now and again have obnoxious and even grave reactions when utilized for a long time. In the event that you experience the ill effects of spinal pain, fibromyalgia, joint inflammation, or

another waiting agonizing pain that disturbs your regular daily existence, you might consider an approach to assuage distress that doesn't include drugs.

Some old systems including reflection and yoga and in addition inventive varieties may help decrease the necessity for pain reliving pharmaceuticals. Mind-body treatments may be able to diminish pain by changing the way you recognize it. Your mind may have rewired itself to perceive torment flags even after the signs are not being sent any longer.

The following are some methods that can help you take your mind off the pain and may assist you to supersede recognized pain signals.

Deep breathing: It is a standout amongst the most important techniques. Breathe in profoundly, hold for a few moments and breathe out. That quietens your nerves.

Promoting the unwinding reaction: A cure to the tension reaction, which builds the heart rate and puts the body's frameworks on high ready, the unwinding method turns down your body's responses.

Meditation with coordinated symbolism: Initiate profound breathing and focusing on every breath. At that point, tune in to relieving music or picture being in an unwinding domain.

Mindfulness: Select any movement you appreciate like perusing verse, strolling in nature, cultivating, or cooking and attempt to end up plainly completely retained in it.

Yoga and Tai Chi: These mind-body developments coordinate breath control, contemplation, and developments to give and bolster muscles.

Positive considering: Retraining the attention on what you can do rather than what you can't give you an extra exact perspective of yourself and the world.

What Stops our Success ?

None can stop our success,
If we have courage and no setbacks.
It is our fears that come ahead,
So endeavour to acquire the golden thread.

None can stop our success,
Until we lose confidence and firmness.
It is our weaknesses that obstruct,
So rise high facing the threat.

None can stop our success,
Unless we check prejudice and pretence.
It is our nepotism that creates casteism,
So believe in humanism that spreads secularism.

None can stop our success,
If we work without selfishness.
It is our idleness that demands rest,
So try your best to achieve the greatest.

Finally know the formula of success,
Go on, go on, is the secret of success.

Rajender Prasad
Lecturer in English
Govt High School Nidana, Jind

A Viewpoint on the New Education policy

Dr. Satywan Saurabh

Will the new education policy bring positive changes in the education sector? (Chart of our ancient academic history, achievements, misunderstandings, and chart of future education plan for 21st century India has come at the right time. Lack of professionally qualified teachers and increased deployment of teachers for non-academic purposes has upset the education system.)

India has a very rich tradition of imparting knowledge. 'Gurukul' was a type of education system in ancient India in which there were disciples (students) living in the same house with the Guru. Nalanda was the oldest university system of education in this world. Students from all over the world were fascinated and taken aback by Indian knowledge systems. Many branches of the modern knowledge system originated in India. In ancient India, our ancient knowledge has been paramount behind the idea of education as high quality. However, the Indian education system has failed to capitalize on its early edge due to years of financial constraints, and erroneous policies of modern India colonial rule, the brunt of which India has suffered for generations.

The government has brought the new education policies for restructuring the education system in India with innovations that will use the Indian demographic dividend to meet Indian needs in the future Fourth Industrial Revolution. The draft of the new education policy was finalized by presenting its report on May 31, 2019, under the chairmanship of the National Education Policy Committee, Dr. K Kasturirangan and it was proposed to implement this policy soon in the budget 2019-20. This education policy has been implemented across the country.

Due to flaws in the current education policy, a need was felt to introduce this new form. As such the current curriculum does not meet the developmental needs of children. The current education sector is struggling with a shortage of qualified and trained teachers. Currently, most of the early childhood education is imparted through Anganwadis and private-play schools. However, the educational aspects of early childhood have received less attention in this new education policy. The policy recommends developing a two-part curriculum for early childhood care and education. Guidelines for children up to three years old and educational framework for children between three and eight years old. This will be implemented by reform and expansion of the Anganwadi system and co-implementation of Anganwadis with primary schools.

The new policy talks of expanding the scope of the Right to Education Act, 2009 for all children between the ages of three to 18 years, which includes early childhood education and

secondary school education. The review of recent amendments to the RTE Act on continuous and comprehensive evaluation and no-detention policy has been emphasized. For children up to class eight, schools have been given guidelines to ensure that children are attaining age-appropriate learning levels. Now based on the new policy, board examinations will be restructured to test only the original concept and not to find the topper. These board exams will be on many subjects. Students can choose their subjects and semesters according to their interests, in which they will get the opportunity to study science as well as art subjects.

The present structure of schooling has been restructured based on the development needs of the students. In which the 10 + 2 + 3 structure is to be replaced by a 5-3-3-4 design consisting of (i) a five-year foundational stage (three years of pre-primary school and classes one and two), (ii) The three-year stage of preparation (classes three to five), (iii) the middle stage of three years (classes six to eight), and (iv) the four-year secondary stage (classes nine to 12). The current education system focuses only on rote learning. Now, efforts have been made to reduce the course load to its required basic material. New ways have been found to improve school exams, current board exams force students to focus on only a few subjects, which hinders their all-round development, Indian students do not know how to study happily. In today's method, the test of learning in a formulaic way has caused stress in students.

Although the establishment of primary schools in every colony has increased the reach of education, it has driven the development of very small schools but they complicate it. Therefore, in the new policy, many public schools should be brought together to

form a school campus. A complex for this would include a secondary school (class nine to twelve) and all the public schools in its neighborhood that provide education from pre-primary to class eight. These will also include anganwadis, vocational education facilities, and an adult education center. Each school campus will be a semi-autonomous unit that will provide integrated education at all stages from the early stage to secondary education. Every effort will be made to efficiently share resources such as infrastructure and trained teachers on a school campus.

The shortage of professionally qualified teachers and the increase in the deployment of teachers for non-academic purposes have plagued our education system. For this, according to the new policy, the emphasis has been laid on new recruitment of teachers and they should be posted in special school premises for at least five to seven years. They will not be allowed to participate in any non-teaching activities during school hours.

Existing B.Ed. The program will be replaced by a four-year integrated B.Ed. High-quality content, pedagogy, and practical training and an integrated continuous professional development for all disciplines will also be done. Regulation of schools will be conducted separately from aspects like policymaking, school operation, and educational development. Independent state school regulatory authorities will be established for each state that will set basic common standards for public and private schools. To strengthen the policy, the education department of the state will formulate and monitor and supervise the policy.

In the new education policy, the emphasis is on research and the use of technology, cooperation between different disciplines, cohesion and dialogue and training of teachers All these will bring positive changes in the education sector of the country. The latest Kasturirangan report or draft new education policy in the education sector shows the need of the hour for improvement in education. The modern Indian education system is crying out for reform. The draft New Education Policy (NEP) is the right time to take stock of its history, achievements, misunderstandings, and chart future education plans for 21st century India.

Research Scholar in Political Science, Delhi University

Comendable performance of Students of Government Schools

Priyanka Saurabh,

It is no small matter to top the state by studying in government schools.

The daughters of Haryana who studied in a government school and stood first in the state in various faculties deserve a special mention. It is no small matter to top the state by studying in government schools in rural areas of Haryana. Salutations to these daughters under the venerated Guru Charan who showed their path to real knowledge by providing true education to these children in government and underprivileged schools in this phase of privatization.

Today it has been proved that by paying a fee of only a hundred rupees, the students studying in the convent schools cannot be beaten by filling the fees of lakhs, they can also be defeated at the state level and country level. Behind this success is not only the hard work of the children but also the dedication of those teachers. Eventually, their hard work paid off. As far as I think, the picture of Haryana government schools has changed in the last ten years. Especially after the eligibility of teacher recruitment, the same people came into this profession who were qualified and you are seeing results.

Discussions of this success are not in the country but on the world stage. The Chairman of the Haryana Education Board said that in this examination, the Faculty of Arts has been selected by the NCERT. Mahendragarh student Manisha, daughter of Manoj Kumar scored 499 out of 500 and secured first place. The second place is Monica, daughter of Ajay Kumar of R & D (Chamarkheda, Hisar), third is RVMV. (Azad Singh, the daughter of (Jabra, Rewari), scored 495 out of 500.

First place in the Faculty of Science (Bodia Kamalpur, Rewari) student Manisha Yadav daughter of Bijendra Kumar. N.c.m. Shrutika daughter Jagmendra of (Bahauli, Kurukshetra) secured 495 out of 500 marks. Daughter Manisha considers her parents, friends, and teachers as special contributors to this success. All these daughters say that they had to travel a distance to go to school every day. Manisha says that she had planned to top school, but she did not know that she would top in the state. Manisha says that people should change their mindset, today girls are ahead of boys. This achievement can be found by studying in a government school.

What tremendous results have come, the rest of the government teachers should also take inspiration from them; the children of your schools can also write history. All government teachers should not consider themselves employees. Pay your duty so that everyone, especially children from poor sections, can get an education. With this, the lost land of these government schools will be returned and the trend of people will increase. One day everyone will send their children to government schools. You keep trying for such results.

Apart from teachers and parents, governments too now need to pay special attention to the condition of these schools. About half of the government schools in the country do not have electricity or playgrounds. The budgetary allocation due to privatization saw a 27% reduction in proposals made by the Department of School Education. Despite proposals of □ 82,570 crores, only 59,845 crores were allocated. There is slow progress in building classrooms, laboratories, and libraries

to strengthen government higher secondary schools. Government schools in India are facing teacher vacancies, which in some states are about 60-70 percent.

Government schools should get additional funds at the revised estimate level of the main schemes. The Ministry of Human Resource Development should build schools and boundary walls in collaboration with Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme. It should also work with the Ministry of New and Renewable Energy to provide solar and other energy sources so that electricity can reach schools. For a very long time, there have been two types of education models in the country. One for a particular class and another for the public. In Delhi it has been sought to bridge this gap.

Its approach stems from the belief that quality education is a necessity, not a luxury. Therefore, it created a model, which essentially consists of five major components and is supported by about 25% of the state budget. Today we need to make special improvements on topics such as change of school infrastructure, training of teachers and principals, restructuring school management committees (SMC), engagement with the community, curriculum improvement in teaching-learning.

The government preschool system is managed through the child development scheme of the center, under the

Ministry of Women and Child Development, while the schools are under the center and ministries of education in the states. There has been a huge investment in the Childhood Program in India, which is administered through 1.2 million Anganwadis under Ends. The findings of ASER 2019 make it clear that there is a need to strengthen these early childhood education centers so that they implement appropriate "school-readiness" activities.

Coordination between central ministries is necessary to improve policy setting for early childhood education, but it is better to encourage the state and district administrations to do more to make elementary education effective. According to a news report, in recent days, new admissions in a government school in Haryana during the Corona period have crossed the 43,000 mark! At the same time, 82,000 candidates have applied for the school leaving certificate!

Now how will schools work without teachers is worrying. There is a need for reforms so that a uniform education environment will be created all over the country, all the states should implement their words strictly. Dualism in education should end now, everyone should get the same government education. Only then will there be a sense of equality in India in the future.

Research Scholar in Political Science, University of Delhi,
Poetess, independent journalist and columnist,
All India Radio and TV panelist

Compendium of Academic Courses After +2

CERAMICS ENGINEERING

Introduction

Ceramic engineering is the science and technology of creating objects from inorganic, non-metallic materials. As ceramics are heat resistant, they are used in a wide range of industries, including mining, aerospace, medicine, refinery, food and chemical industries, packaging science, electronics, industrial and transmission electricity, and guided light wave transmission.

Courses

1. B. Tech
2. M. Tech

Eligibility

(10+2) examination with biology, maths and chemistry. For IITs, It is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E). The duration for the course is 4 years.

Institutes/Universities

1. IITs
2. Andhra University College of Engineering, Visakhapatnam - Andhra Pradesh
3. Government College of Engineering and Ceramic Technology – Kolkata
4. Rajasthan Technical University, Kota, Rajasthan

CHEMICAL ENGINEERING

Introduction

Chemical Engineering is the design and maintenance of chemical plants and the development of chemical processes for converting raw materials or chemicals into valuable forms including those used to remove chemicals from waste materials, to enable large scale manufacture. It combines knowledge of Chemistry and Engineering for the production of chemicals and related by-products. This branch of engineering is a varied field, covering areas from biotechnology and nanotechnology to mineral processing. It covers various fields of chemical technology in mineral based industries, petrochemical plants, pharmaceuticals, synthetic fibres, petroleum refining plants etc. Chemical engineers design and operate chemical plants and improve methods of production.

Courses

1. B. Tech
2. M. Tech

Eligibility

10+2 pass with physics, chemistry and mathematics from recognized Board of examination. Most of the colleges offer admission on the basis of score obtained in national/state level entrance test.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology (IIT) Kharagpur
2. Indian Institute of Technology (IIT) Kanpur
3. Indian institute of Technology (Madras)
4. Andhra University, Visakhapatnam
5. Rajasthan Technical University, Kota, Rajasthan
6. Guru Gobind Singh Indraprastha University, Delhi

CIVIL ENGINEERING

Introduction

Civil Engineering involves planning, designing and executing structural works. The course deals with a wide variety of engineering tasks including designing, supervision and construction activities of public works like roads, bridges, tunnels,

buildings, airports, dams, water works, sewage systems, ports etc. and offers a multitude of challenging career opportunities. A civil engineer is responsible for planning and designing a

project, constructing the project to the required scale, and maintenance of the product. The major specialisations within civil engineering are structural, water resources, environmental, construction, transportation, geo-technical engineering etc.

Courses

1. B. Tech
2. M. Tech (Dual Degree)
3. Ph. D

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry, and Mathematics as core subjects.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology (IIT) Kharagpur
2. Indian Institute of Technology (IIT) Kanpur
3. Andhra University, Visakhapatnam
4. Calicut University, Malappuram, Kerala.
5. Aliah University, Kolkata

6. Rajasthan Technical University, Kota, Rajasthan
7. Guru Gobind Singh Indraprastha University, Delhi
8. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

COMPUTER SCIENCE ENGINEERING

Introduction

Computer Science Engineering involves both computer science and electronics engineering. It includes testing and designing of computer components. There are two types of computer engineers. Computer software engineers and computer hardware engineers.

Courses

1. B. Tech Computer Science and Engineering
2. B. Tech Computer Science and Information Technology
3. B. Tech Computer Software Engineering
4. Computer Science and Engineering

Eligibility

(10+2) with biology, maths and chemistry. For IITs, It is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E). The duration for this course is 4 years.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology (IIT) Kharagpur
2. Indian Institute of Technology (IIT) Kanpur
3. Indian institute of Technology (Madras)
4. Rajasthan Technical University, Kota, Rajasthan

ELECTRICAL AND ELECTRONICS ENGINEERING

Introduction

Electrical and electronics engineering is about use of technology ranging from global positioning systems to electrical power generators. These engineers are responsible for designing, developing, testing as well supervising the production of electrical and electronic equipment and machinery. Specialization in Electrical and electronics engineering include areas like power generation, transmission and distribution; communications; manufacture of electrical equipment etc. or one particular specialty within these area; e.g. industrial robot control systems or aviation electronics.

There are Microwave engineers who produce radar, communications, and fibres optics systems. Communications and signal processing as in CD players and high definition TV. Electrical engineers also design and implement automatic control systems such as airplane guidance and autopilot systems.

Courses

1. B. Tech
2. M. Tech

Eligibility

Pass in Higher Secondary (10+2) or its equivalent (Physics, Chemistry and Mathematics),

Institutes/Universities

IITs including

1. Indian Institute of Technology (IIT) Kharagpur
2. Indian Institute of Technology (IIT) Kanpur
3. Andhra University, Visakhapatnam

ELECTRONICS AND COMMUNICATION ENGINEERING

Introduction

Electronics and Communication Engineering deal with electronic devices and software interfaces. It helps to increase productivity in various industries such as oil, energy, agriculture, and telecommunication media including television, radio and computers. The course is also applied to many other important sectors such as steel, petroleum and chemical industries; healthcare industry; and transportation industry.

Courses

1. Diploma in Electronics and Communication Engineering
2. Bachelor of Engineering in Electronics & Communication Engineering
3. Master of Engineering in Electronics & Communication Engineering

Eligibility

(10+2) examination with biology, maths and chemistry. For IITs, It is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E). The duration for the course is 4 years.

Institutes/Universities

1. IITs
2. Indian Institute of Technology (IIT) Kharagpur
3. Guru Gobind Singh Indraprastha University,Delhi

QUARANTINE GAMES

Games to be played indoors with the Family!

FOREWORD

The recent COVID-19 pandemic has put over a third of the global population in lockdown. With all of us stuck at home, sedentary behavior is on the rise which can adversely affect your physical and mental health.

Gyms, parks, playgrounds are all are shut for the foreseeable future, making physical activity in open spaces a challenge. Space and Equipment are two main challenges that we will face in our endeavor to keep up physical activity and being physically fit.

To help boost the motivation to do any form of physical activity the only way to get around this is to replace the aforementioned challenges it with two other words – improvisation and imagination!

In the coming pages, there is a list of games that can be played using equipment made from things that are easily available at home as well as online apps & websites that can help you in this endeavour.

Remember, your fitness is only limited by your imagination!

MAKING EQUIPMENT AT HOME

BALL:

To make balls from paper or plastic paper

- crush or roll up the paper or plastic into a basic ball shape
- use enough paper to form the required size
- use adhesive tape or rubber bands to hold the paper in place.
- Makes balls of all sized.

To make balls from socks or stockings

- fill a plastic bag with rice or sand until it is the required size of the ball
- fasten the bag with tape or a rubber band
- place the bag inside a sock or stocking
- twist the sock or stocking so it is tight and draw the top of the sock over
- the ball until there is no length of sock left.
- Makes balls of the size of a cricket ball or baseball.

To make balls from Towels:

• This is a little more complicated to detail in words so would recommend viewing the YouTube tutorial on this. Click on this link for the same: Making a Towel/Cloth Ball of Fun in One Minute!

BAT

- To make a bat at home, all you will need is an old used broom or a spare one.
- Hold the fibrous parts together and use cello tape or a rubber band to hold it together.
- Use the hard end – usually the handle side as the bat and the fibrous end as the handle.
- Any of the brooms alongside can be used as a bat!

CONES & MARKERS

- Cones can be made to use as posts for rounders, stumps for cricket, goalposts etc. The best and easiest way to create filling an empty plastic bottle with water or sand.
- Markers can be made by sticking a few sheets of paper together and

cutting them in circles to make them as round markers for your activities

POSTS & NETS

To create posts or nets in the house for some of the games you can try the following methods:

- Use the chairs in the house to divide the house with a net in between.
- Use either a long towel, bedsheet or a dupatta tied to two chairs – this could be done using clothes clips - to divide the room into two halves and use it as a net.

WEBSITES

Click here to generate random playing cards, coin flip, dice or any other options.

LET THE GAMES BEGIN!

BASKETBALL SHOOT OUT

Equipment:

- Basket - Clothes Basket / Bucket
- Ball

Setup:

- Set up the basket on a chair or a high stool / table
- Mark a line on the floor or a point from where you can shoot.

Playing the Game: This game can be played in a variety of ways:

- Shoot as many times as possible from a stationary point in a minute.
- Shoot from a variety of positions in a minute.
- Try trick shots by trying to bounce

the ball off the wall or the chair into the basket.

- Try to shoot from your weaker hand to get the ball into the basket.

DICE WORKOUT

Equipment:

- A pair of dice.
- Alternatively, you can use this random dice generator that can be used to generate random dice rolls incase you do not have a pair of dice.
- Pen and Paper

Playing the Game:

- On a sheet of paper, write down numbers from 1-12 vertically
- Assign a workout to each of the numbers. For Example: o 1 – 5 crunches
  - o 2 – 5 sit-ups
  - o 3 – 30 second plank
  - o 4 – 10 squats
  - o 5 – 60 second spot jog
  - o 6 – 5 knees to chest jumps

So on and so forth

- These can be changed as per your liking to create your workout.

PLAYING CARD WORKOUT

Equipment:

- A pack of cards.
- Alternatively, you can use this random card generator that can be used to generate random cards in case you do not have a pack of cards.

Playing the Game:

- Before the game starts, define the

task each suit will have. For Example: o Clubs (□) = Sit-ups
o Diamonds (□) = Plank Pose
o Hearts (□) = Crunches
o Spades (□) = Burpees

- Set a time limit for the game.
- For the sake of this game J = 11, Q = 12 & K =13.
- Each player will draw a card from the deck.
- The player has to do the exercise as the suit as many times as the number of the card. For Example: incase I draw K□ I will do 13 sit-ups. To get all the 13 points, the player needs to do 13 sit-ups, if the player fails to do so, they will get zero points.
- At the end of the time limit, the player who has the highest total of cards that the player has complete the exercise, wins.

Aniketh Mendonca

Amazing Facts

1. **The name Wendy was made up for the book "Peter Pan."**
2. The word Cotton originates from the Arabic word "Qutun."
3. By recycling just one glass bottle, the amount of energy that is being saved is enough to light a 100 watt bulb for four hours.
4. Slinkys were invented by an airplane mechanic; he was playing with engine parts and realized the possible secondary use of one of the springs.
5. Estuarine crocodiles are the biggest of all 26 species of the crocodilian family.
6. Alaska got its name from the Aluet word "Alyeska" which means "The Great Land."
7. Every second, 630 steel cans are recycled.
8. The word witch comes from the word "wicca" which translates to the "wise one."
9. Surveys indicate that the number one reason people play BINGO is for leisure.
10. In 1916, Charlie Chaplin was making $10,000 a week, making him the highest paid actor of his time.
11. The reason firehouses have circular stairways is from the days when the engines were pulled by horses. The horses were stabled on the ground floor and figured out how to walk up straight staircases.
12. The best selling Crayola crayon box is the set of 24 crayons.
13. Thomas Edison was afraid of the dark. (Hence, the light bulb?)
14. The name of the character that is behind bars in the Monopoly board game is Jake the Jailbird.
15. Just by recycling one aluminum can, enough energy would be saved to have a TV run for three hours.
16. The first telephone call from the White House was from Rutherford Hayes to Alexander Graham Bell.
17. A pregnant goldfish is called a twit.
18. A glockenspiel is a musical instrument that is like a xylophone. It has a series of metal bars and is played with two hammers.
19. Diamonds were first discovered in the riverbeds of the Golconda region of India over 4,000 years ago.
20. Canada is an Indian word meaning "village" or "settlement."
21. There are 122 pebbles per square inch on a Spalding basketball.
22. The seventeenth president of the United States, Andrew Johnson did not know how to read until he was 17 years old.
23. The fastest growing tissue in the human body is hair.
24. Bhutan issued a stamp in 1973 that looked like a record and actually would play the Bhutanese national anthem if placed on a record player.
25. Asparagus comes in three colors: green, white and purple.
26. A cubic yard of air weighs about 2 pounds at sea level.
27. Pancakes are served for breakfast, lunch and dinner in Australia.
28. A lion feeds once every three to four days.
29. A honey bee has four wings.
30. First novel ever written on a typewriter: Tom Sawyer.

http://greatfacts.com/

General Quiz

1. What character was named by George Lucas after his 'Radio' and 'Dialogue' film rolls used in making American Graffiti? **R2D2**
2. Macular refers to which sensory organ? **Eye**
3. The medieval occupation and derived surname Scullion referred to a basic worker in a: Dockyard; Kitchen; Courthouse; or Hospital?

Kitchen

4. The prefix 'meso' usually means: Middle; Outer; Greater; or False? **Middle**
5. Erasmus of Rotterdam (1466-1536) is a revered: Atheist statesman; Christian humanist; Mathematician; or Vegetarian chef? **Christian humanist**
6. 'Forage' refers to crops that are: Organic; Wild; Animal feed; or Pick-your-own? **Animal feed**

7. What term refers to a style of fatalistic or menacing cinema, coined first by French critics in describing US thrillers of the 1940s? **Film Noir**
8. The 1997 BS and 2005 EN No1836 safety standard applies to: Water pistols; Potatoes; Sunglasses; or Garden gnomes? **Sunglasses**
9. Theology is the study of what? **Religion**

10. Gurning is a (sometimes competitive) activity involving distortion of: Facts; Balloons; Spoons; or One's face? **One's face**
11. The traditional Queen of Puddings dessert typically comprises a bread/egg/jam base topped with what? **Meringue**
12. A sepulchre is a (what?), usually made/carved from stone: Cross; Church; Tomb; or Dragon? **Tomb**

13. Hilary Mantel's controversial 2014 fictional story is "The Assassination of (Which controversial leader?)" ? **Margaret Thatcher**
14. What was the tallest type of construction in the world for over 3,800 years before Lincoln Cathedral's completion in 1311? **Pyramid**
15. Filibeg is a traditional Scottish word for: Kilt; Porridge; Haggis; or England?**Kilt**
16. In the binary system of numbers the binary number 10 equates to which conventional number? **2**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-325-general-knowledge/

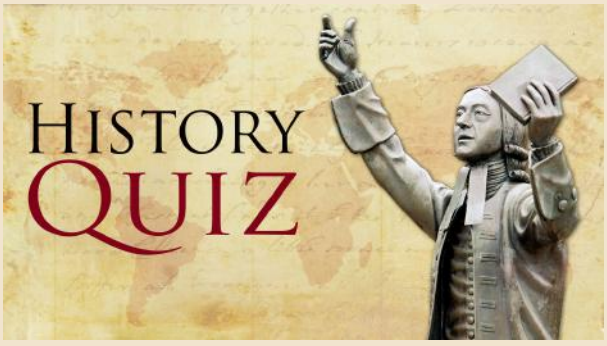

1. What took place on Griffin's Wharf in America in 1773? The Boston Tea Party (on 16 December - American colonists, protesting against British taxes and lack of self-governance, dumped more than 300 crates of British-owned tea in Boston harbour, after boarding three ships disguised as Mohawk natives - the event is regarded as a precursor to the American revolutionary war of independence)
2. What was the name of the ship on which the Pilgrims travelled to North America in 1620? The Mayflower
3. What was the name of the English farmer who invented the seed-planting drill in 1701? Jethro Tull
4. In which year was Nelson Mandela released from prison? 1990
5. What was the nationality of the first non-Italian Pope since 1523? Polish (Karol Wojtyla, Pope John Paul II, Pope from 1978-2005)
6. What was the name of the world's first man-made satellite launched by the USSR in 1957? Sputnik I
7. Which country gained its independence from Denmark in 1944? Iceland
8. In 1803 who started shipping portions of the sculpted frieze from the Parthenon in Greece to England? Lord Elgin (Thomas Bruce, 7th Earl of Elgin - the sculpted frieze is more commonly known as the Elgin Marbles.)
9. In which year did French Queen Marie Antoinette go the guillotine? 1793
10. Who became US president after Herbert Hoover? Franklin D Roosevelt (1933)
11. French King Louis XIV (1638-1715) was the longest reigning European monarch - how long did he reign? 72 years (from 1643-1715)

12. Marjorie Robb, who died in Boston USA in 1992 aged 103, Barbara Dainton, Millvina Dean and Lillian Asplund, achieved notoriety for being among the last living survivors of what? The sinking of the Titanic (1912)
13. Who in 1963 murdered Lee Harvey Oswald, the assassin (according to official accounts) of US President John F Kennedy? Jack Ruby
14. The Kiel Canal in Germany, officially opened in 1895, connects which two seas? North Sea and Baltic Sea (it is apparently the world's busiest artificial waterway)
15. Fletcher Christian, who led the mutiny on the Bounty in 1789, subsequently rediscovered and settled on which remote Pacific Island, which had been 'lost' from British maritime records? Pitcairn Island (in the Pacific Ocean, North-East of New Zealand)
16. What were the waitresses called who worked in the English Lyons Cornerhouse tea rooms, popular in first half of the 1900's? Nippies
17. In 1624 what was purchased from the local inhabitant Native Americans by the Dutch for a reported sum of $24? Manhattan Island
18. Which New York hotel was designed by Henry Hardenbergh in 1897? Waldorf-Astoria

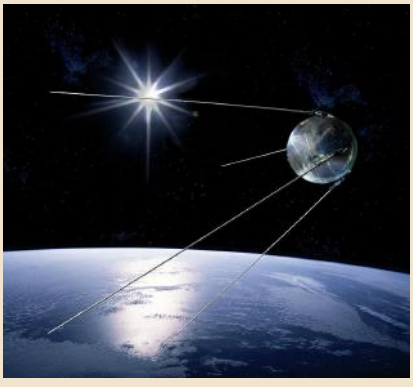

19. What date is France's Bastille Day? 14th July
20. Which mountain was climbed for the first time in 1786? Mont

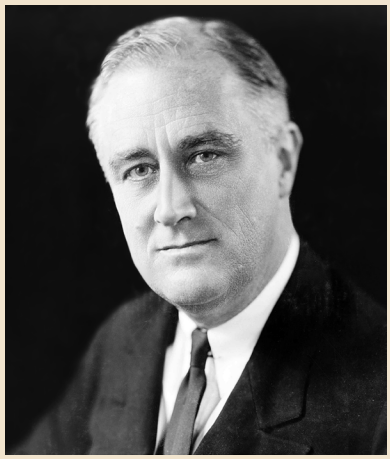

Blanc (by Jacques Balmant and Michel-Gabriel Paccard - the mountain is on the border of France and Italy, who each claim the summit is in their country)

21. In what year did India and Pakistan become independent nations and free from British rule? 1947 (15 August India, and 14 August Pakistan)
22. Which planet was discovered by William Herschel 1781? Uranus
23. In 1926, 19 year-old Gertrude Ederle became the first woman to do what? Swim the English Channel
24. In what year, generally regarded as marking the end of the Cold War, did the Berlin Wall come down? 1989 (9 November)
25. Which calendar was devised in 1582? Gregorian Calendar (by Aloysius Lilius - it is the calendar that most of the world uses today)
26. Which London Emporium opened in Picadilly 1707? Fortnum and Mason's
27. British publisher Ludvik Hoch was better known by which name? Robert Maxwell
28. Which English King abdicated in 1936? Edward VIII.

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-1-history/

She Wonders

She wonders what it would be like?
To soar on the highest clouds,
Or swim in the deepest oceans,
Away from the noisy crowd.

She wonders what it would be like?
To have a friend not dead,
To play with girls in the park,
To sleep on a comfy bed.

She wonders what it would be like?
To have some personal riches,
To have a life lived in peace
Without those everyday glitches.

She wonders what it would be like?
To wear what is in trend,
To have someone whom she can call,
A loyal loving friend.

She wonders what it would be like?
To go to a lovely school,
To wear her education as a jewel,
And not always treated as a fool.

She wonders what it would be like?
To not being beaten so often,
To have parents who cared for her,
And not being called an orphan.

Yes, I am talking about that girl,
Who lives her life on the road.
She begs for food, sleeps on a bench,
To her I dedicate this ode!

- By Shabih Fatima

आदरणीय संपादक जी,
सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का पिछला अंक कोरोना आपदा के समय प्रदेश में चलाई जा रही दूरवर्ती शिक्षा पर केंद्रित था। डॉ.प्रदीप राठौर का लेख व डॉ सुमन कादयान का इस आपदा के दौरान 'ऑनलाइन शिक्षण को पंख लगाते राजकीय विद्यालयों के शिक्षकगण' नामक लेख इसी विषय पर केंद्रित था। प्रमोद कुमार का लेख हर अध्यापक को ही नहीं, हर अभिभावक को भी पढ़ना चाहिए। कोरोना जन्य आपदा के दौरान घरों को किस प्रकार सीखने-सिखाने की प्रयोगशाला बनाया जा सकता है, इस पर उन्होंने बखूबी प्रकाश डाला। सुरेश राणा का लेख 'जन-सहयोग से बदली सरकारी स्कूल की तस्वीर' भी बेहद पसंद आया। एक सारगर्भित अंक के लिए 'शिक्षा सारथी' की पूरी टीम को बधाई।

नरेश शर्मा, प्रधानाचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुंगा
जिला-पंचकूला, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,
सप्रेम नमस्कार।

विद्यालय शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका 'शिक्षा सारथी' के नये अंक की सदा प्रतीक्षा रहती है। गतांक में तो मेरे लेख को भी स्थान मिला, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। जुलाई-अंक वास्तव में सूचनाओं व ज्ञान-विज्ञान की सामग्री का खजाना था। श्रेष्ठ कार्य करने वाले विद्यार्थियों, अध्यापकों व विद्यालयों के बारे में लिखे गए लेख सचमुच इन सबका हौसला कई गुणा बढ़ा देते हैं और भविष्य में इन्हें और अधिक कर्मठता से अपने कर्तव्य में लीन रहने की प्रेरणा देते हैं। बच्चों का कोना 'बाल सारथी' हर बच्चा बड़े चाव से पढ़ता है। मैडम धीरा खंडेलवाल की कविता 'तितली' व विभाग की उपनिदेशक इंद्रा बेनीवाल का लेख 'अपनी साँस का रखें ख्याल' बेहद पसंद आए।

सुरेश राणा, हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कमालपुर
जिला कैथल, हरियाणा

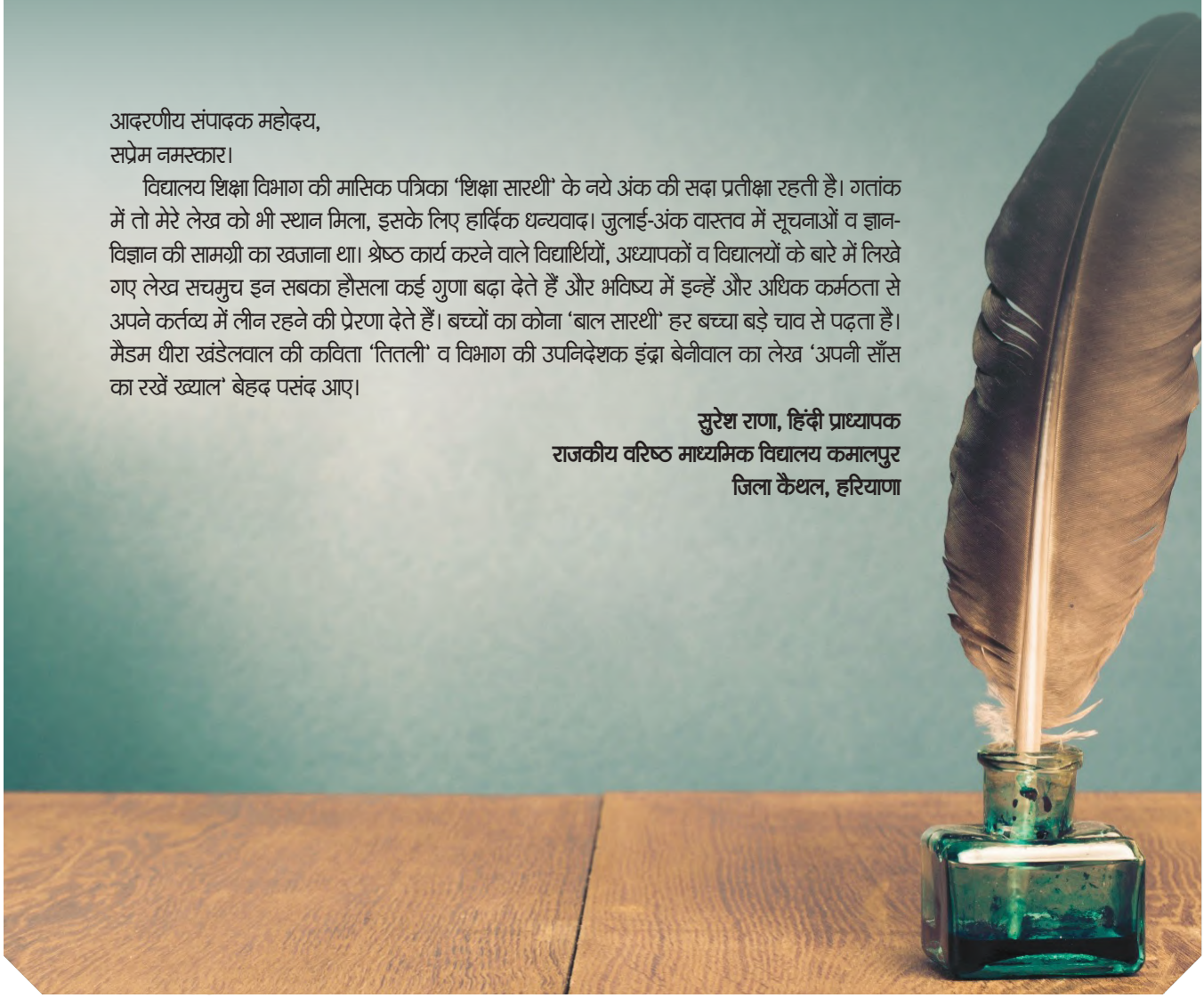

शिक्षक-धर्म निभाएँ

कर्म चुना जब इतना पावन, चलो हम भी कुछ कर दिखलाएँ।
शिक्षक हैं तो शिक्षक बनकर, आओ अपने फर्ज निभाएँ।।
कोरा कागज बालक मन है, जो हम उस पर लिखतें हैं,
सलीके और संस्कार वही, उनके जीवन भर दिखते हैं।
समदृष्टि समभावी बनकर, हर बालक पर स्नेह लुटाएँ।
शिक्षक हैं तो शिक्षक बनकर, आओ अपने फर्ज निभाएँ।।
हर बालक को अपना समझें, हर बालक को अपना मानें,
कर्णधार है हर इक बालक, इसी बात को मन में ठानें।
नील गगन में पंख फैलाकर, आओ इन्हें उड़ना सिखाएँ,
शिक्षक हैं तो शिक्षक बनकर, आओ अपने फर्ज निभाएँ।।
अशिक्षा के अंधकार में, ज्ञान उजाला भर दें हम,
पथ रोशन हो हर बालक का, ऐसा प्रकाश कर दें हम।
शिक्षा के वरदान से हम, अनपढ़ता का अभिशाप मिटाएँ,
शिक्षक हैं तो शिक्षक बनकर, आओ अपने फर्ज निभाएँ।।
अंधविश्वासों को मिटाकर, रूढ़िवादिता दूर भगाकर,
कथनी को करनी में बदलें, आदर्श बने कर्तव्य निभाकर।
अभावों का हवाला देकर, कर्तव्य मार्ग से न घबराएँ,
शिक्षक हैं तो शिक्षक बनकर, आओ अपने फर्ज निभाएँ।।
राष्ट्र-उत्थान का सारा जिम्मा, अपने कंधों पर होता है,
राष्ट्र-पतन भी शिक्षक की, अकर्मण्यता से होता है।
गौरवान्वित करें देश को इतना, फिर से विश्वगुरु कहलाएँ,
शिक्षक हैं तो शिक्षक बनकर, आओ अपने फर्ज निभाएँ।।

बिन्दु बाला
प्रवक्ता हिन्दी
रावमावि चौटाला जिला-सिरसा, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

Government of Haryana

ADOPT AYURVEDA TO BOOST IMMUNITY

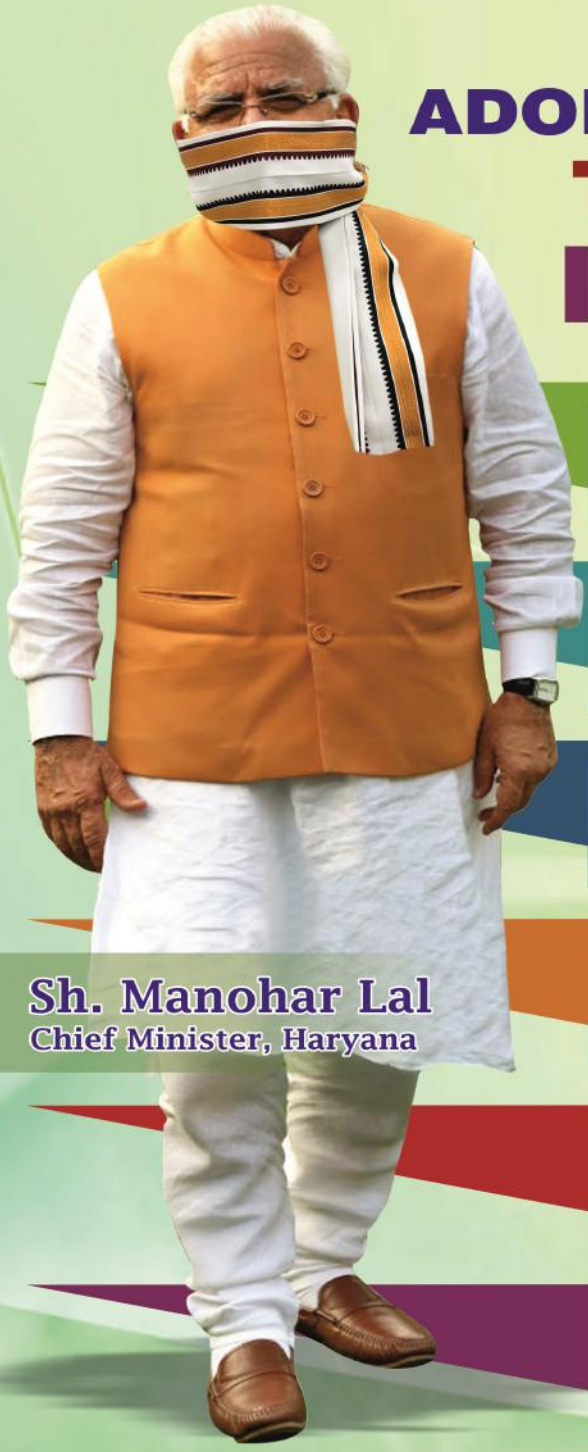

Sh. Manohar Lal
Chief Minister, Haryana

- Drink Herbal Decoction Made from Basil, Cinnamon, Black Pepper, Dry Ginger and Raisin

- Use Turmeric, Cumin, Coriander and Garlic in Cooking

- Drink Hot Golden (Turmeric) Milk

- Consume Giloy Everyday

- Use Sesame/Coconut Oil or Ghee Drops in Both the Nostrils

- Use AYUSH Kwath, Guduchi Ghan Vati/Samshmani Vati and Anu Tail with Doctor's Advice

Information, Public Relations & Languages Department, Haryana
www.prharyana.gov.in | @cmohry @DiprHaryana

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114